37 वाँ 37th
राष्ट्रीय National
फ़िल्म समारोह Film Festival
1990

विषय सूची

पृष्ठ संख्या
Page No

CONTENTS

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	5	Dada Saheb Phalke Award for 1989
निर्णायक मण्डल	8	The Juries
कथाचित्र पुरस्कार	11	**AWARDS FOR FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम कथाचित्र	12	Best Feature Film
द्वितीय सर्वोत्तम कथाचित्र	14	Second Best Feature Film
निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इन्दिरा गांधी पुरस्कार	16	Indira Gandhi Award for Best First Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार	18	Best Film Providing Popular and Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार	20	Nargis Dutt Award for the Best Feature Film on National Integration
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथाचित्र	22	Best Film on Family Welfare
अन्य सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र	24	Best Film on Other Social Issues
पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण/पर सर्वोत्तम कथाचित्र	26	Best Film on Environment/Conservation/Preservation
सर्वोत्तम बाल कथाचित्र	28	Best Children's Film
सर्वोत्तम निर्देशन	30	Best Direction
सर्वोत्तम अभिनेता	32	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	34	Best Actress
सर्वोत्तम सह-अभिनेता	36	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री	38	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल कलाकार	40	Best Child Artiste
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	42	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	44	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	46	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	48	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	50	Best Audiography
सर्वोत्तम सम्पादन	52	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	54	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेशभूषा	56	Best Costume Designing
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	58	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	60	Best Lyrics
निर्णायक मण्डल विशेष पुरस्कार	62	Special Jury Award
सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र	64	Best Feature Film in Bengali
सर्वोत्तम गुजराती कथाचित्र	66	Best Feature Film in Gujarati
सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र	68	Best Feature Film in Hindi
सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र	70	Best Feature Film in Kannada
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र	72	Best Feature Film in Malayalam

सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र	74	Best Feature Film in Marathi
सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र	76	Best Feature Film in Oriya
सर्वोत्तम पंजाबी कथाचित्र	78	Best Feature Film in Punjabi
सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र	80	Best Feature Film in Tamil
सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र	82	Best Feature Film in Telugu
विशेष उल्लेख	84	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	86	Awards Not Given
ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार	87	**AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र	88	Best Non-Feature Film
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानव जातीय फिल्म	90	Best Anthropological/Ethnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी फिल्म	92	Best Biographical Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म	94	Best Arts/Cultural Film
सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित)	96	Best Scientific Film (including Environment and Ecology)
सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फिल्म	98	Best Environment/Conservation/Preservation Film
सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फिल्म	100	Best Promotional Film
सर्वोत्तम कृषि विभाग	102	Best Agricultural Film
सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निमाण/संकलन फिल्म	104	Best Historical Reconstruction/Compilation Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म	106	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फिल्म	108	Best Educational/Motivational/Instructional Film
सर्वोत्तम कार्टून फिल्म	110	Best Animation Film
निर्णायक मण्डल विशेष पुरस्कार	112	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म	114	Best Short Fiction Film
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म	116	Best Film on Family Welfare
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	118	Awards Not Given
सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार	119	**AWARDS FOR THE BEST WRITING ON CINEMA**
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक 1989	120	Best Book on Cinema 1989
सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक	122	Best Film Critic
कथासार: कथाचित्र	125	**SYNOPSES: FEATURE FILMS**
अन्ध दिगंत (उड़िया)	127	Andha Diganta (Oriya)
अंकुर मैना और कबूतर (हिन्दी)	128	Ankur Maina Aur Kabootar (Hindi)
बाघ बहादुर (हिन्दी)	129	Bagh Bahadur (Hindi)
बनानी (असमिया)	130	Banani (Assamese)
चांदनी (हिन्दी)	131	Chandni (Hindi)
छन्दनीड़ (बंगला)	132	Chhandaneer (Bengali)
डैडी (हिन्दी)	133	Daddy (Hindi)

गणशत्रु (बंगला)	134	Ganashatru (Bengali)
गीतांजलि (तेलुगु)	135	Geethanjali (Telugu)
जम्बू सवारी (कन्नड़)	136	Jamboo Savaari (Kannada)
काल अभिरती (बंगला)	137	Kaal Abhirati (Bengali)
कलत नाकलत (मराठी)	138	Kalat Nakalat (Marathi)
किरीड़म (मलयालम)	139	Kireedom (Malayalam)
माने (कन्नड़)	140	Mane (Kannada)
मढ़ी दा दीवा (पंजाबी)	141	Marhi da Deeva (Punjabi)
मथिलुकल (मलयालम)	142	Mathilukal (Malayalam)
ओरू वड़क्कन वीरगाथा (मलयालम)	143	Oru Vadakkan Veeragadha (Malayalam)
परशुरामेर कुठार (बंगला)	144	Parashuramer Kuthar (Bengali)
परिंदा (हिन्दी)	145	Parinda (Hindi)
परसी (गुजराती)	146	Percy (Gujarati)
पुदिया पादई (तमिल)	147	Pudhea Padhai (Tamil)
सलीम लंगड़े पे मत रो (हिन्दी)	148	Salim Langde Pe Mat Ro (Hindi)
संध्या रागम (तमिल)	149	Sandhiya Raagam (Tamil)
सन्त शिशुनाला शरीफ (कन्नड़)	150	Santha Shishunala Sharif (Kannada)
सूत्र धारुलू (तेलुगु)	151	Suthra Dhaarulu (Telugu)
उन्नीकुट्टनु जोली किट्टी? (मलयालम)	152	Unnikkuttanu Joli Kitty? (Malayalam)
वोसोबिपो (करबी)	153	Wosobipo (Karbi)

कथासार: ग़ैर-कथाचित्र 155 SYNOPSES: NON-FEATURE FILMS

आर कोतो दिन	157	Aar Koto Din
बैगा	157	Baiga
बेहुला	158	Behula
ब्वॉय और गर्ल-हाऊ?	158	Boy or Girl—How?
सी.वी. रमण-द साइंटिस्ट एन्ड हिज लैगसी	159	C.V. Raman: The Scientist and his Legacy
छापाखानार बांगला हरफ	160	Chhapakhanar Bangla Haraf
इन्टीग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेंट इन कॉटन	160	Integrated Pest Management in Cotton
कलामण्डलम कृष्णनकुट्टी पोडुवल	161	Kalamandalam Krishnankutty Poduval
कथनी करनी एकसी (जमनालाल बजाज)	162	Kathni Karni Eksi (Jamanalal Bajaj)
माई ट्री	163	My Tree
न्यूरोपैथिक फुट इन लैप्रोसी	164	Neuropathic Foot in Leprosy
सेर अलंग	165	Ser Alang
सिद्धेश्वरी	166	Siddheshwari
दि डिअर ऑन द लेक	166	The Deer on the Lake
द लैम्प इन द नीश	167	The Lamp in the Niche
ट्यूना द चिकन ऑफ द सी	167	Tuna: The Chicken of the Sea
यूँ सिखलाएं आखर	168	Yun Sikhlayen Akhar

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

Dada Saheb Phalke Award

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार 1989:

लता मंगेशकर

स्वर्ण कमल, 1,00,000 रुपये का नकद पुरस्कार और एक शॉल

लता मंगेशकर के पहले गुरु उनके पिता दीनानाथ मंगेशकर थे, जो महाराष्ट्र के जाने माने कलाकार थे। मास्टर दीनानाथ मंगेशकर ने अपनी योग्य पुत्री को संगीत के बारे में वो सब कुछ सिखा दिया जो वह स्वयं जानते थे। लता ने 4 वर्ष की आयु में शास्त्रीय संगीत सीखना शुरू कर दिया और 7 वर्ष की उम्र में उन्होंने पहला संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया। 1942 में पिता की मृत्यु के बाद लता को ही परिवार का दायित्व उठाना पड़ा। उस समय वे केवल तेरह वर्ष की थीं। अपने पिता की मृत्यु के केवल आठ दिन बाद ही लता को मास्टर विनायक की मराठी फ़िल्म **पाहिली मंगलागोर** में अपनी भूमिका करनी पड़ी। इस फ़िल्म के संगीत निर्देशक दत्ता दावजेकर थे, जिनके निर्देशन में बाद में 1947 में लता ने पार्श्व गायिका के रूप में **आपकी सेवा में** फ़िल्म के लिए अपना पहला गीत गाया। लता की गायन क्षमता को पहचान कर संगीत निर्देशक गुलाम हैदर ने उनसे बम्बई टाकीज़ की फ़िल्मों में गीत गवाये। तब से लता मंगेशकर निरन्तर महानता की सीढ़ियां चढ़ती गई। **मजबूर, पद्मिनी, अन्दाज, लहर, बाज़ार** और **बरसात** फ़िल्मों ने फ़िल्मी संगीत में लता के पांव हमेशा के लिए जमा दिए और वे लाखों संगीत प्रेमियों के दिलों पर राज करने लगीं।

गीत गाने के साथ-साथ लता ने अभिनेत्री, निर्माता और संगीत निर्देशक के रूप में भी काम किया। किन्तु उनका वास्तविक कर्म क्षेत्र संगीत ही रहा। 1950 और 1960 के दशकों में उन्होंने प्रमुख मराठी कवियों की रचनाओं को प्रस्तुत किया। 1970 के दशक के प्रारम्भिक वर्षों में लता ने महाराष्ट्र के सबसे लोकप्रिय मध्य कालीन संत-गायक संत तुका राम के भक्ति गीत रिकार्ड कराये। संस्कृत में भगवत गीता की रिकार्डिंग उनकी महानतम उपलब्धि मानी जाती है। उन्होंने मीराबाई के भजन और ग़ालिब की गजलें भी गाई हैं। लता मंगेशकर को दुनिया में सबसे अधिक संख्या में गीत गाने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने लगभग 15 भाषाओं में 30,000 से अधिक गीत गाये हैं।

भारतीय फिल्म उद्योग में आज भी लता मंगेशकर को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। सिनेमा के बदलते हुए स्वरूप और मूल्यों में भी वर्षों तक लता ने अपनी लोकप्रियता कायम रखी है और फिल्म दर्शकों की तीन पीढ़ियों के बीच बराबर लोकप्रिय बने रह कर अपनी अद्भुत क्षमता का परिचय दिया है। अधिक प्रशंसनीय बात ये है कि उन्होंने संगीत के स्तर से किसी भी तरह का समझौता किये बिना ये उपलब्धि हासिल की है। 1969 में उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। फिल्मी दुनिया की चमक-धमक उनके जीवन का अभिन्न अंग है और उनकी आवाज को समूचा भारत अपना मानता है, किन्तु आज भी सादगी, विनम्रता और सौम्यता उनके चरित्र की मुख्य विशेषतायें हैं।

DADA SAHEB PHALKE AWARD 1989:

LATA MANGESHKAR

Swarna Kamal, a cash prize of Rs. 1,00,000 and a shawl.

Lata Mangeshkar's first guru was her father, the well-known stage personality from Maharashtra, Master Dinanath Mangeshkar, who gave everything he knew of music to his gifted daughter. Lata began learning classical music at the age of four and gave her first concert at the age of seven. When her father died in 1942, thirteen-year-old Lata took over the responsibility of supporting the family. Just eight days after her father's death, Lata was to prepare for a role in Master Vinayak's Marathi film PAHILI MANGLAGAUR. The Music Director of the film was Datta Dawjekar, under whom Lata was to sing her first song as a playback singer in 1947, in the film AAP KI SEVA ME. Realizing her potential, Music Director Ghulam Haider introduced her to Bombay Talkies and she has not looked back since. MAJBOOR, PADMINI, ANDAZ, LAHAR, BAZAAR and BARSAAT ensured a future where she would reign supreme over the hearts of millions of music lovers.

Besides singing, Lata has worked as an actress, producer and composer. However, it is in the field of music, both in and out of the cinema, that she has excelled. In the 50s and 60s, she adapted the works of leading Marathi poets and set them to music. In the early 70s, she recorded devotional songs by Sant Tukaram, the most popular medieval saint-singer of Maharashtra. Many consider her recording of the Bhagwad Gita in Sanskrit as her crowning achievement. She has also sung bhajans by Meerabai and Ghalib's ghazals. With her repertoire of more than 30,000 songs in about 15 languages, Lata holds the record for singing the largest number of songs in the world.

Today, many films later, Lata enjoys an important position in Indian film history. She has displayed an inimitable capacity to stay in demand across three generations of film viewers, and retained her popularity through years of changing values, fashions and attitudes in the cinema. What is even more admirable is that she has done so without compromising her uniqueness. She was awarded the Padma Bhushan in 1969. The glamour of show business has been an integral part of her life and her voice belongs to all of India, but she remains a private person, characterized by simplicity, humility and charm.

कथाचित्र निर्णायक मण्डल

JURY FOR FEATURE FILMS

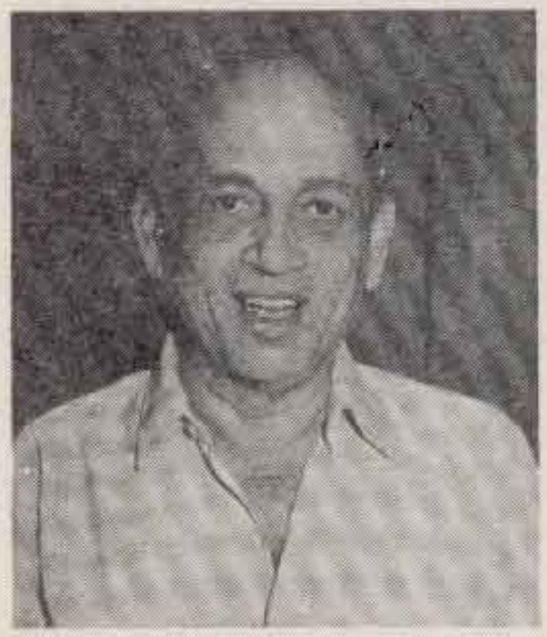

आत्मा राम अध्यक्ष
Atma Ram Chairperson

बासु भट्टाचार्य
Basu Bhattacharya

इकबाल मसूद
Iqbal Masud

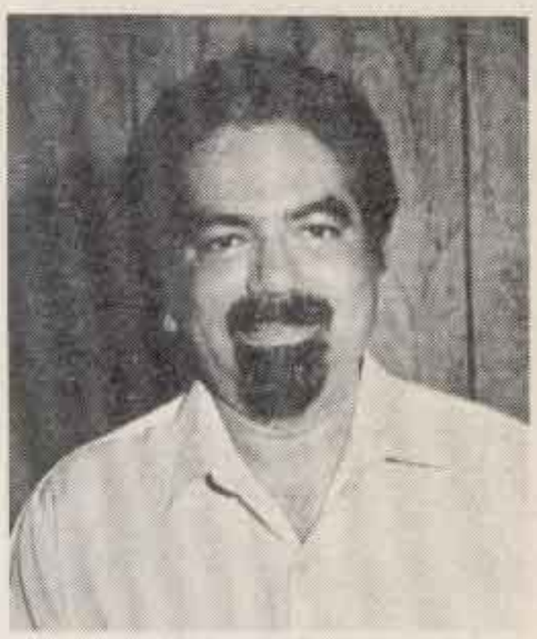

के.जी. जॉर्ज
K.G. George

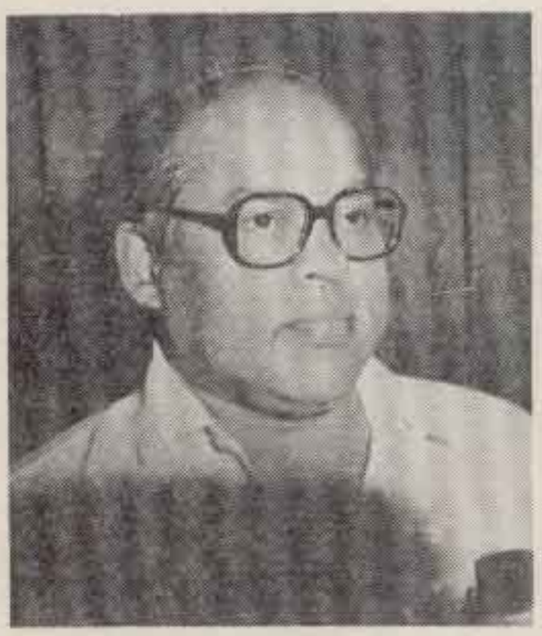

सीताकांत मिश्र
Sitakant Misra

जे. महेन्द्रन
J. Mahendran

ए. पुंडरीकक्षय्या
A. Pundarikakshayya

कुन्दन शाह
Kundan Shah

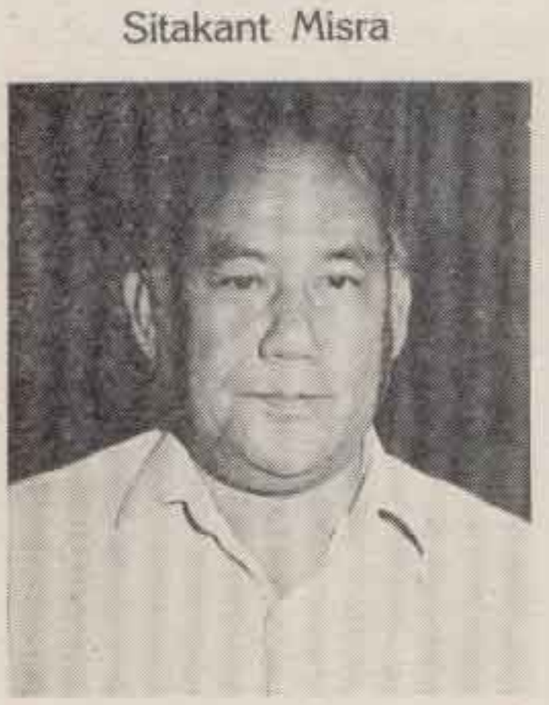

अरिबम श्याम शर्मा
Aribam Syam Sharma

दिलीप कुमार हज़ारिका
Dilip Kumar Hazarika

भीम सेन
Bhim Sain

आर. लक्ष्मन
R. Lakshman

वालमपुरी सोमनाथन
Valampuri Somanathan

सैकत भट्टाचार्य
Saikat Bhattacharya

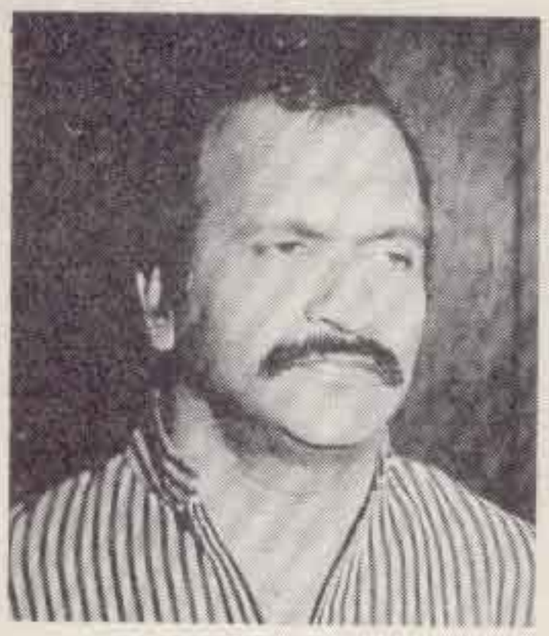

श्रीकुमारन थम्पी
Sreekumaran Thampi

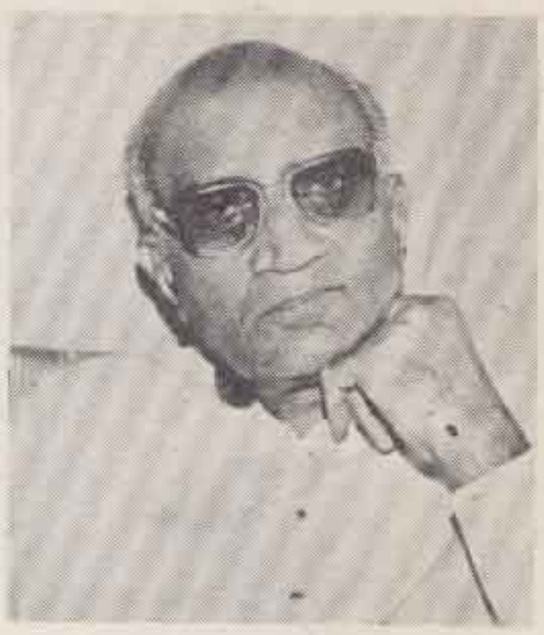

डी.वी. नरसाराजू
D.V. Narasaraju

ग़ैर-कथाचित्र निर्णायक मण्डल

JURY FOR NON-FEATURE FILMS

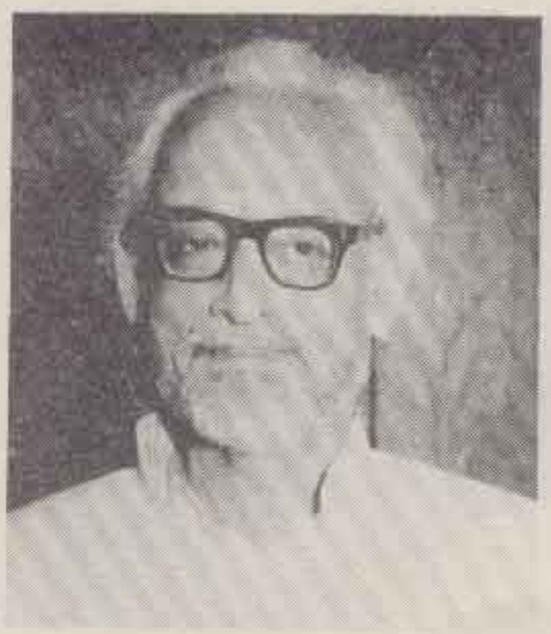

जगत मुरारी अध्यक्ष
Jagat Murari Chairperson

तपन के. बोस
Tapan K. Bose

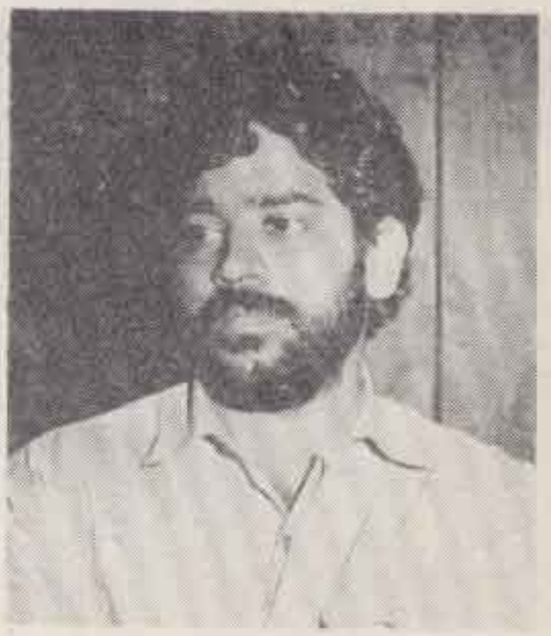

संतोष सिवन
Santosh Sivan

घनश्याम महापात्रा
Ghanshyam Mohapatra

परेश मेहता
Paresh Mehta

सर्वोत्तम सिनेमा लेखन निर्णायक मण्डल

JURY FOR THE BEST WRITING ON CINEMA

मृणाल पांडे अध्यक्ष
Mrinal Pande Chairperson

फ़िरोज़ रगूनवाला
Firoze Rangoonwalla

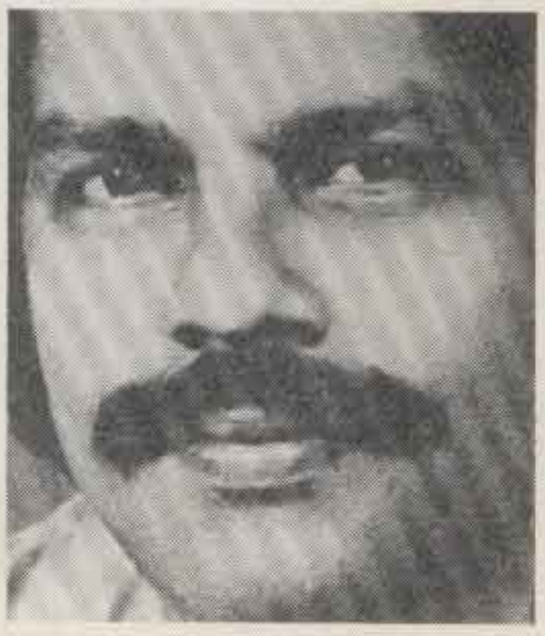

सी. राधाकृष्णन्
C. Radhakrishnan

कथाचित्र पुरस्कार Awards for Feature Films

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

बाघ बहादुर (हिन्दी)

निर्माता **बुद्धदेब दासगुप्ता** को स्वर्ण कमल और 50,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **बुद्धदेब दासगुप्ता** को स्वर्ण कमल और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म **बाघ बहादुर** को सस्ती और आडम्बरपूर्ण शहरी संस्कृति के कारण ग्रामीण लोक परम्पराओं के निरंतर बिखराव को एक जीवन्त और शौर्यपूर्ण दुखांत कथा के रूप में चित्रित करने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Feature Film

BAGH BAHADUR (Hindi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000 to the Producer, Buddhadeb Dasgupta.

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the Director, Buddhadeb Dasgupta.

Citation

The Award for the Best Feature Film of 1989 is given to the Hindi film BAGH BAHADUR for its portrayal of the steady destruction of rural folk traditions at the hands of a cheap and showy urban culture in the form of a cinematically vibrant and heroic classical tragedy.

बुद्धदेब दासगुप्ता फिल्म जगत में प्रवेश करने से पहले 8 वर्ष तक कलकत्ता के एक कालेज में प्राध्यापक रहे। उन्होंने पहली फिल्म **दूरत्व** 1978 में बनाई, जिसे बहुत ख्याति मिली। इस फिल्म के लिए उन्हें उस वर्ष का सर्वोत्तम बंगला फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार और लोकार्नो फिल्म समारोह में स्पेशल क्रिटिक्स अवार्ड मिला। तबसे उनकी फिल्में भारत और विदेशों में सराही गई हैं और उन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। दासगुप्ता ने अपनी पहली हिन्दी फिल्म **अन्धी गली** 1984 में बनाई। वे लेखक और कवि के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। उनके कई काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

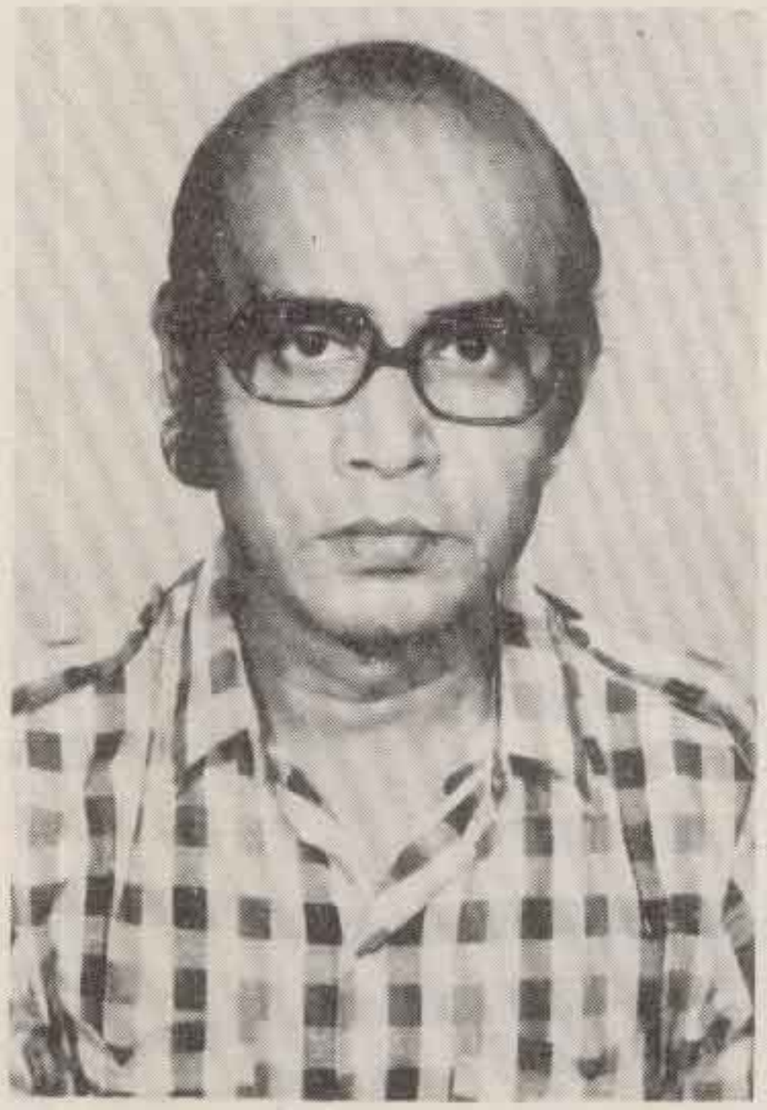

BUDDHADEB DASGUPTA spent eight years as a lecturer in a college in Calcutta before starting on his career in the cinema: His first feature film DOORATWA (1978) won immediate recognition and received the National Award for the best Bengali film of the year as well as the Special Critics Award at the Locarno Film Festival. Since then his films have received much critical acclaim in India and abroad, and won many awards. Although most of his work is in the Bengali language, Dasgupta made his first film in Hindi, ANDHI GALI, in 1984. Dasgupta is also known as a writer and poet. Among the collections of his poems published so far are "Coffin kimba Suitcase", "Heemjoog" and "Chhata Kahini".

द्वितीय सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

परशुरामेर कुठार (बंगला)

निर्माता **धूरजटि प्रसाद मुखर्जी** को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **नब्येन्दु चट्टोपाध्याय** को रजत कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

द्वितीय सर्वोत्तम कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार बंगला फ़िल्म **परशुरामेर कुठार** को एक शहर के मध्यम वर्ग के राजनीतिक और सामाजिक पाखंड तथा एक महिला के शोषण को अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित करने के लिए दिया गया है।

Award for the Second Best Feature Film

PARASHURAMER KUTHAR (Bengali)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer, Dhurjati Prasad Mukherji.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director, Nabyendu Chattopadhyay.

Citation

The Award for the Second Best Feature Film of 1989 is given to the Bengali film PARASHURAMER KUTHAR for the moving fashion in which it elaborates the political and social hypocrisy of a town's middle class and its exploitation of a woman who is both the object of desire and the prey.

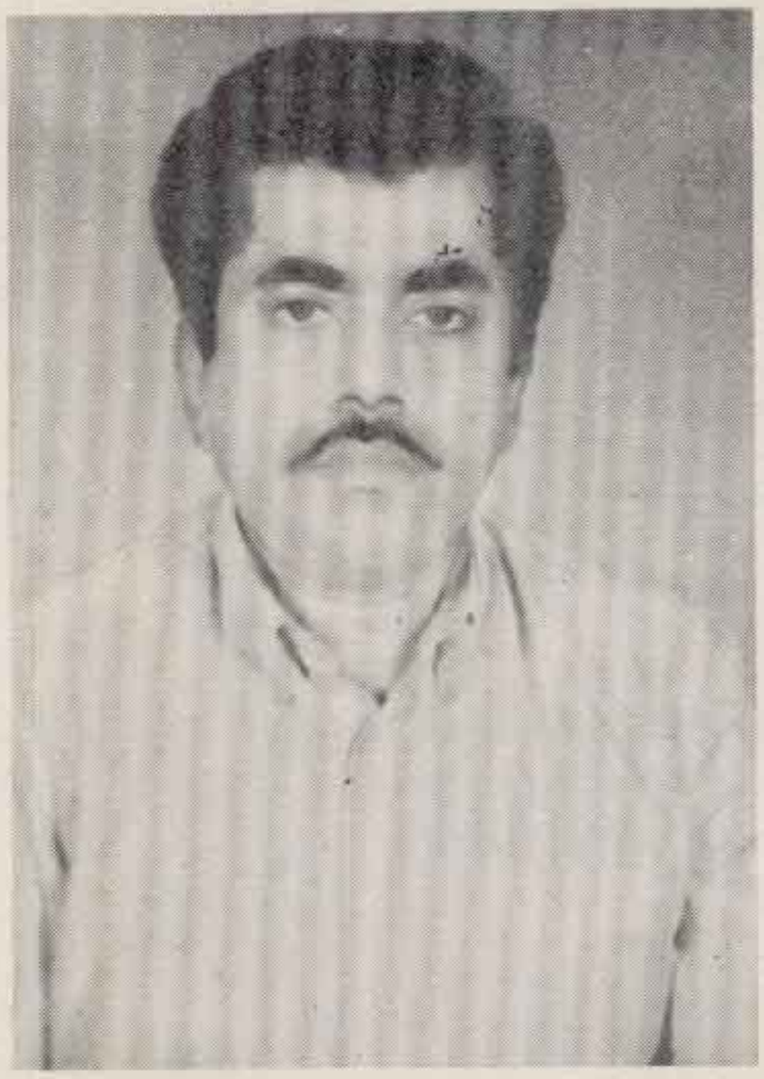

धूरजटि प्रसाद मुखर्जी कलकत्ता के चितरंजन राष्ट्रीय कैंसर संस्थान में स्त्री रोग विभाग के अध्यक्ष और चिकित्सा अधीक्षक हैं। वे भारतीय कैंसर विशेषज्ञों के संघ के महा-सचिव हैं तथा इस संस्था की पत्रिका के संपादन में सहयोग देते हैं। वे कलकत्ता के एक नाट्य समूह के भी सक्रिय सदस्य हैं।

नब्येन्दु चट्टोपाध्याय ने अपना फिल्मी जीवन अभिनेता के रूप में आरंभ किया, लेकिन जल्दी ही उन्होंने फिल्म निर्माण को अपना व्यवसाय बना लिया। उनकी पहली फिल्म हिन्दी में **नया रास्ता** 1967 में बनी। इसके बाद 1968 में उन्होंने बंगला फिल्म **अद्वितीय** का निर्माण किया। वे फिल्मों में तरह-तरह के प्रयोग करते रहे हैं और सामाजिक विषयों के प्रति निष्ठा के कारण चर्चित रहे हैं। उनकी फिल्में **चोपर** (1986) और **सरीसृप** (1988) भारत तथा विदेशों में अनेक फिल्म समारोहों में दिखाई गई। चट्टोपाध्याय कवितायें, कहानियाँ और नाटक भी लिखते हैं और अपनी फिल्मों की पटकथा और गीत स्वयं लिखते हैं।

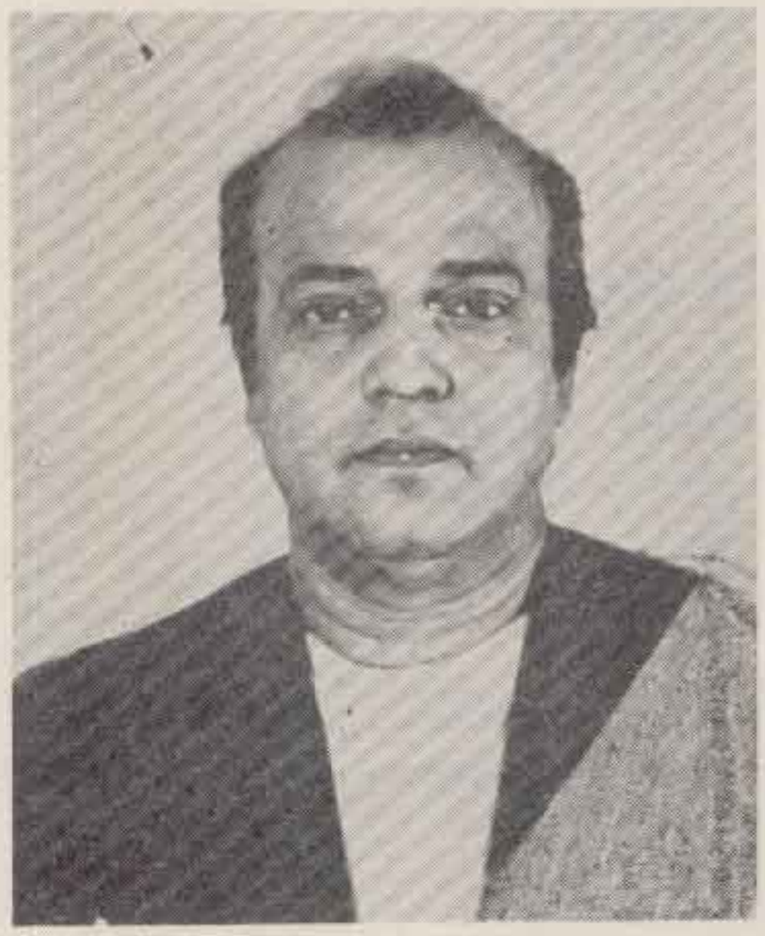

DHURJATI PRASAD MUKHERJI is the Medical Superintendent and Head of the Department of Gynaecology, Chittaranjan National Cancer Institute, Calcutta. He is the joint secretary of the Indian Association of Cancer Chemotherapists and helps to edit its official journal. Outside his profession, he is also an active member of a theatre group in Calcutta.

NABYENDU CHATTOPADHYAY began his professional life as a screen actor, but soon switched to film making. His first film NAYA RASTA was made in Hindi in 1967, followed by ADWITIYA in Bengali in 1968. He has experimented with both form and content in his films and has received critical acclaim for his commitment to socially relevant themes. Of his later films, CHOPPER (1986) and SARISREEP (1988) were shown in various film festivals in India and abroad. Chattopadhyay writes his own scenario and lyrics for his films and is an equally prolific writer of poems, short stories and plays when not involved in making a film.

निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

वोसोबिपो (करबी)

निर्माता **करबी आंगलौंग ज़िला परिषद्** को स्वर्ण कमल और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **गौतम बोरा** को स्वर्ण कमल और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र का 1989 का इंदिरा गांधी पुरस्कार करबी फ़िल्म **वोसोबिपो** को एक पहाड़ी जनजाति की सामूहिक चेतना को नये और मौलिक ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए दिया गया है जो पिछले चार दशकों से बिखराव का शिकार हो रही है। यह अनुभूति एक लड़के के माध्यम से व्यक्त हुई है जो अब पुरुष के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को समझने लगा है।

Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director

WOSOBIPO (Karbi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the Producer, Karbi Anglong District Council.

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the Director, Gautam Bora.

Citation

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director for the year 1989 is given to the Karbi film WOSOBIPO for its fresh and original evocation of the collective unconscious of a hill tribe whose way of life has been disintegrating over the last four decades, as seen through the eyes of a boy growing up into the responsibilities of manhood.

गौतम बोरा ने 1974 में गोहाटी विश्व-विद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। 1983 में उन्होंने पूर्व जर्मनी के एक फिल्म संस्थान से फिल्म और टेलीविजन निर्देशन की डिग्री हासिल की। 1986 में उनका वृतचित्र **वीवर्स आफ द गोल्डन थ्रेड** 29वें लीपज़िग अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भेजा गया और 1987 में इस फिल्म को दूरदर्शन के राष्ट्रीय नेटवर्क पर दिखाया गया। बोरा ने असमिया फिल्म **प्रथम रागिनी** में पटकथा लेखक और सहायक निर्देशक के रूप में काम किया। उन्होंने भबेन्द्रनाथ सैकिया की पुरस्कृत फिल्म **अग्नि स्नान** में सहायक निर्देशक के रूप में काम किया। निर्देशक के रूप में **वोसोबिपो** उनकी पहली फिल्म है।

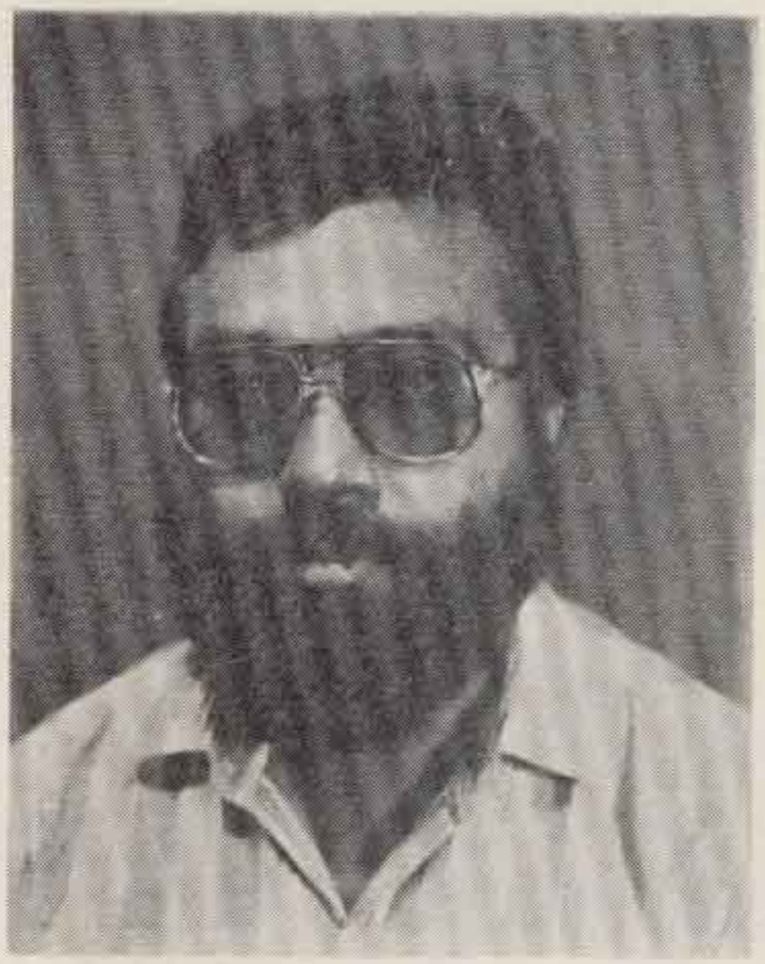

GAUTAM BORA graduated from Guwahati University in 1973 and received a degree in film and television direction from the Konrad Wolf Institute, Potsdam-Babelsberg, East Germany, in 1983. His documentary film WEAVERS OF THE GOLDEN THREAD (1986) was entered in the 29th Leipzig International Film Festival and was telecast on the national network of Doordarshan in March 1987. Bora has worked as a scriptwriter and Associate Director in the Assamese film PRATHAM RAGINI which received a Rajat Kamal for 1987, and as Assistant Director in Dr. Bhaben Saikia's award-winning AGNISNAAN. WOSOBIPO is his first directorial venture.

लोकप्रिय एवम् स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार

चांदनी (हिन्दी)
और
गीतांजलि (तेलुगु)

निर्माता **यश चोपड़ा (चांदनी)** और **मैसर्स भाग्यलक्ष्मी एंटरप्राईसिस (गीतांजलि)** को स्वर्ण कमल और 40,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **यश चोपड़ा (चांदनी)** और **मणि रत्नम् (गीतांजलि)** को स्वर्ण कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म **चांदनी** को स्वच्छ और रोमांसपूर्ण मनोरंजन के साथ-साथ स्वाभाविक अभिनय तथा लोकधुनों पर आधारित मधुर गीतों के लिए दिया गया है।

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार तेलुगु फिल्म **गीतांजलि** को भी युवा भावनाओं को अभिनव और कल्पनापूर्ण दृष्टिकोण के साथ चित्रित करने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Film Providing Popular and Wholesome Entertainment

CHANDNI (Hindi)
and
GITHANJALI (Telugu)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000 to the Producers, Yash Chopra (for CHANDNI) and M/s Bhagyalakshmi Enterprises (for GITHANJALI).

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Directors, Yash Chopra (for CHANDNI) and Mani Rathnam (for GITHANJALI).

Citation

The Award for the Best Film Providing Entertainment for the year 1989 is given to the Hindi film CHANDNI for providing clean, romantic entertainment illuminated with smooth performances and fresh lyrics in folk form.

The Award for the Best Film Providing Entertainment for the year 1989 is also given to the Telugu film GITHANJALI for its innovative approach in depicting youthful passion.

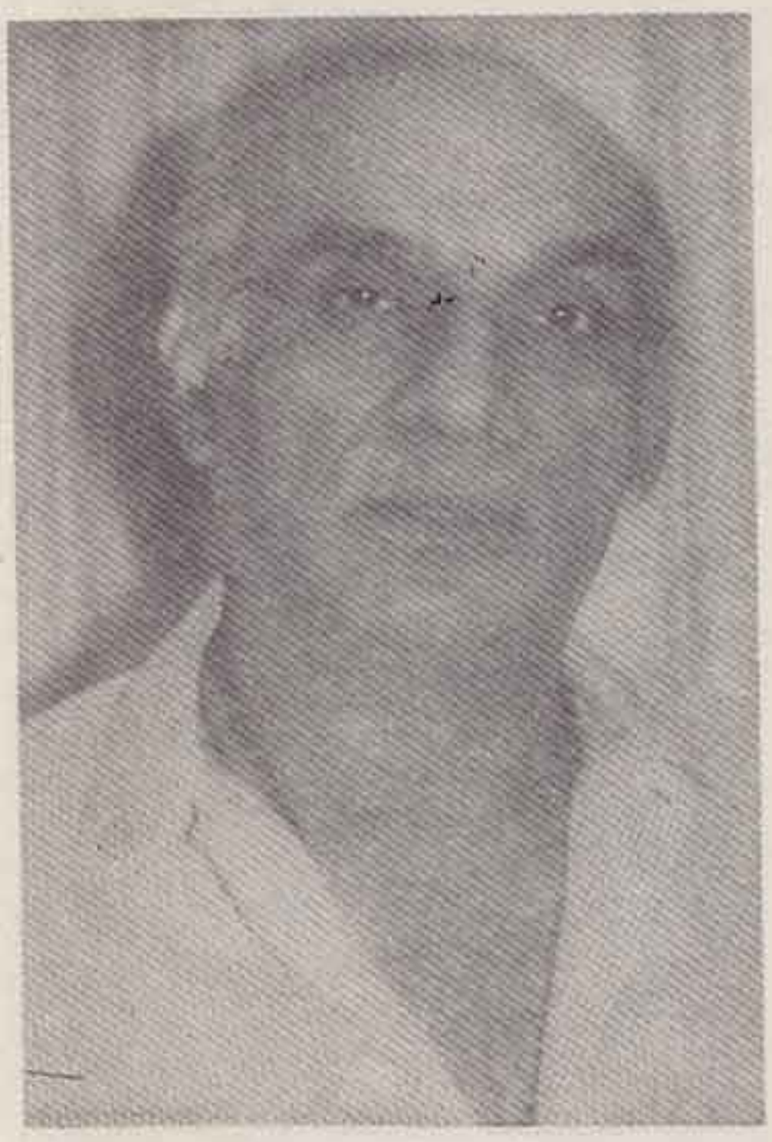

यश चोपड़ा का जन्म 1932 में जालन्धर में हुआ। उन्होंने 1958 में सबसे पहले हिन्दी फिल्म **धूल का फूल** का निर्देशन किया। यश चोपड़ा ने कई लोकप्रिय फिल्मों का निर्देशन करने के बाद 1971 में अपनी फिल्म निर्माण कम्पनी बनाई। 1965, 1967, 1973 और 1975 में उन्हें सर्वोत्तम निर्देशन का फिल्मफेयर पुरस्कार मिला। यश चोपड़ा की कुछ प्रसिद्ध फिल्में हैं **वक्त** (1965), **आदमी और इंसान** (1970), **दीवार** (1975), **कभी-कभी** (1976), **नूरी** (1979) और **सिलसिला** (1981)।

मणि रत्नम बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त हैं। **मणि रत्नम्** ने सबसे पहले कन्नड़ फिल्म **पल्लवी अनु पल्लवी** का निर्देशन किया। उन्होंने मलयालम **उनारु** और तमिल में **पगल निलाव** तथा **इधाया कोइल** का निर्देशन किया। इसके बाद उन्होंने **मौन रागम्** फिल्म बनाई जिसे सर्वोत्तम तमिल फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार और सर्वोत्तम क्षेत्रीय फिल्म तथा निर्देशन का फिल्मफेयर पुरस्कार मिला। उनकी फिल्म **नायकन** बहुत प्रसिद्ध हुई और उसके नायक कमल हासन को सर्वोत्तम अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1988 में उनकी फिल्म **अग्नि नच्चतीरम्** अत्यन्त लोकप्रिय हुई। इस फिल्म की कहानी और पटकथा मणि रत्नम् ने स्वयं लिखी।

YASH RAJ CHOPRA was born in Jullundhar in 1932. He directed his first film in Hindi, DHOOL KA PHOOL, in 1958. His association with the Bombay film industry has been long and eventful and throughout his career his films have enjoyed great popularity with the audience. He started his own production company in 1971 and received Filmfare Awards for Best Direction in 1965, 1969, 1973 and 1975. He is a member of the Film Producers Guild of India Limited, the Indian Film Directors Association, and the Association of Motion Picture Studios. Included among his most well-known films are WAQT (1965), AADMI AUR INSAAN (1970), DEEWAR (1975), KABHI KABHIE (1976), NOORIE (produced by him in 1979) and SILSILA (1981).

MANI RATHNAM did a Masters in Business Administration before his first directorial venture PALLAVI ANU PALLAVI in Kannada. He then directed UNARU in Malayalam and PAGAL NILAVU and IDHAYA KOIL in Tamil. MOUNA RAGAM, his next film, won the National Award for the Best Tamil Film of the year and received the Filmfare Award for the Best Regional Film and the Best Director. His NAYAKAN not only won great critical acclaim but also brought to its hero Kamalhasan the Best Actor Award in the National Awards. His AGNI NATCHATIRAM, made in 1988, is a box-office hit and has had a Silver Jubilee run. Mani Rathnam was responsible for the story and screenplay as well as the direction of the film.

राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नर्गिस दत्त पुरस्कार

संत शिशुनाला शरीफ़ (कन्नड़)

निर्माता **मैसर्स यजमान एंटरप्राईसिस** को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **टी.एस. नागभरण** को रजत कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए 1989 का नर्गिस दत्त पुरस्कार कन्नड़ फिल्म **सन्त शिशुनाला शरीफ़** को एक ऐसे सुप्रसिद्ध मुसलमान संत के जीवन और भजनों के माध्यम से धार्मिक एकता का चित्रण करने के लिए दिया गया है, जो एक हिन्दू गुरू के शिष्य थे।

Nargis Dutt Award for the Best Feature Film on National Integration

SANTHA SHISHUNALA SHARIF (Kannada)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer, M/s Yajaman Enterprises.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director, T.S. Nagabharana.

Citation

The Nargis Dutt Award for the Best Feature Film on National Integration for the year 1989 is given to the Kannada film SANTHA SHISHUNALA SHARIF for its depiction of unity of religions at the popular-mystical level illustrated by the life and lyrics of a famous Muslim saint who had a Hindu guru.

टी.एस. नागभरण ने बी.वी. कारन्त और गिरीश कर्नाड जैसे निर्देशकों से फिल्म कला का प्रशिक्षण लिया। उन्होंने अपनी पहली फीचर फिल्म **ग्रहण** 1970 में बनाई जिसके लिये उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। 1980 में उनकी फिल्म **अन्वेषण** और 1984 में **बैंकर मार्गय्या** को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उनकी फिल्मों में सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया जाता है और वे चालू मसालों का इस्तेमाल किये बिना सफल और लोकप्रिय फिल्में बनाने में निपुण हैं। उन्होंने अनेक लघु फिल्मों तथा वृत्त चित्रों का भी निर्देशन किया है।

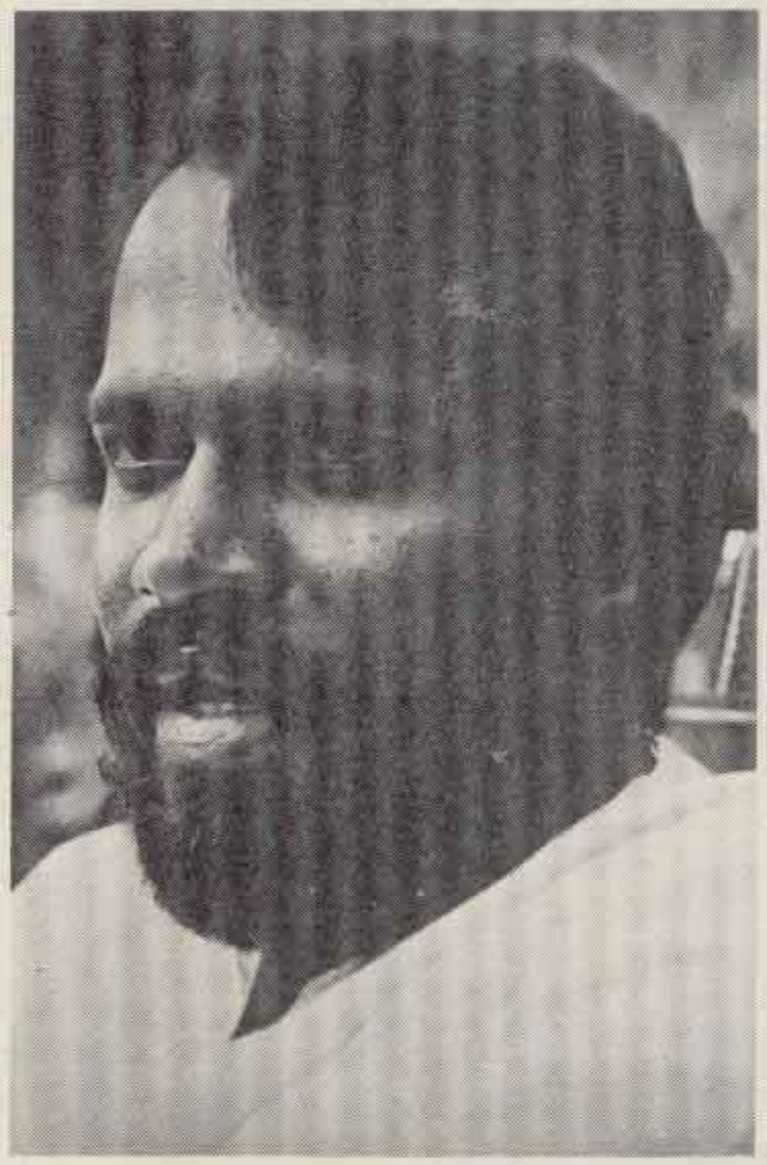

T.S. NAGABHARANA worked in the early years of his apprenticeship with B.V. Karanth and Girish Karnad among others. His first feature film GRAHANA (1978) won a National Award. His ANVESHANE (1980) also won a National Award as did BANKER MARGAYYA in 1984. His films display his social commitment and have been successful without taking recourse to compromises to popular appeal. He has also made many short films and a number of documentaries for government and research institutes.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

संध्या रागम् (तमिल)

निर्माता **बालू महेन्द्र** (दूरदर्शन के लिए) को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **बालू महेन्द्र** को रजत कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार तमिल फ़िल्म **संध्या रागम्** को ऐसे व्यक्ति के जीवन का मानवीय ढंग से चित्रण करने के लिए दिया गया है जो दुख, संकल्प और सूझ-बूझ के बल पर वृद्धावस्था की समस्या से समझौता करता है।

Award for the Best Film on Family Welfare

SANDHIYA RAAGAM (Tamil)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer, Balu Mahendra (a Doordarshan Production).

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director, Balu Mahendra.

Citation

The Award for the Best Film on Family Welfare of 1989 is given to the Tamil film SANDHIYA RAAGAM for the humanity with which it traces a character coming to terms with the problem of old age through suffering, resolution and understanding.

बालू महेन्द्र भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान के एक प्रतिभाशाली छात्र रहे हैं। उन्होंने निर्देशक के रूप में 1976 में अपनी योग्यता का परिचय दिया। इससे पहले वे रामू करियत, पी.एन. मेनन, बापू और के. विश्वनाथ जैसे निर्देशकों के साथ छायाकार के रूप में काम करते रहे। वे अपनी फिल्मों की पटकथा लिखने के साथ-साथ सम्पादन और छायांकन भी स्वयं करते हैं। छायाकार के रूप में उनकी कुछ महत्वपूर्ण फिल्में हैं—**नेल्लू, प्रयाणम्, शंकराभरणम** और **मुल्लुम मलारूम।** उनके निर्देशन में बनी फिल्मों—**कोकिला** और **मुंडरम पिराई** को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उनकी फिल्म **वीडू** में अर्चना को सर्वोत्तम अभिनेत्री का राष्ट्रीय पुरस्कार और सर्वोत्तम तमिल फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ। बालू महेन्द्र ने 5 भाषाओं में फिल्मों का निर्देशन किया है।

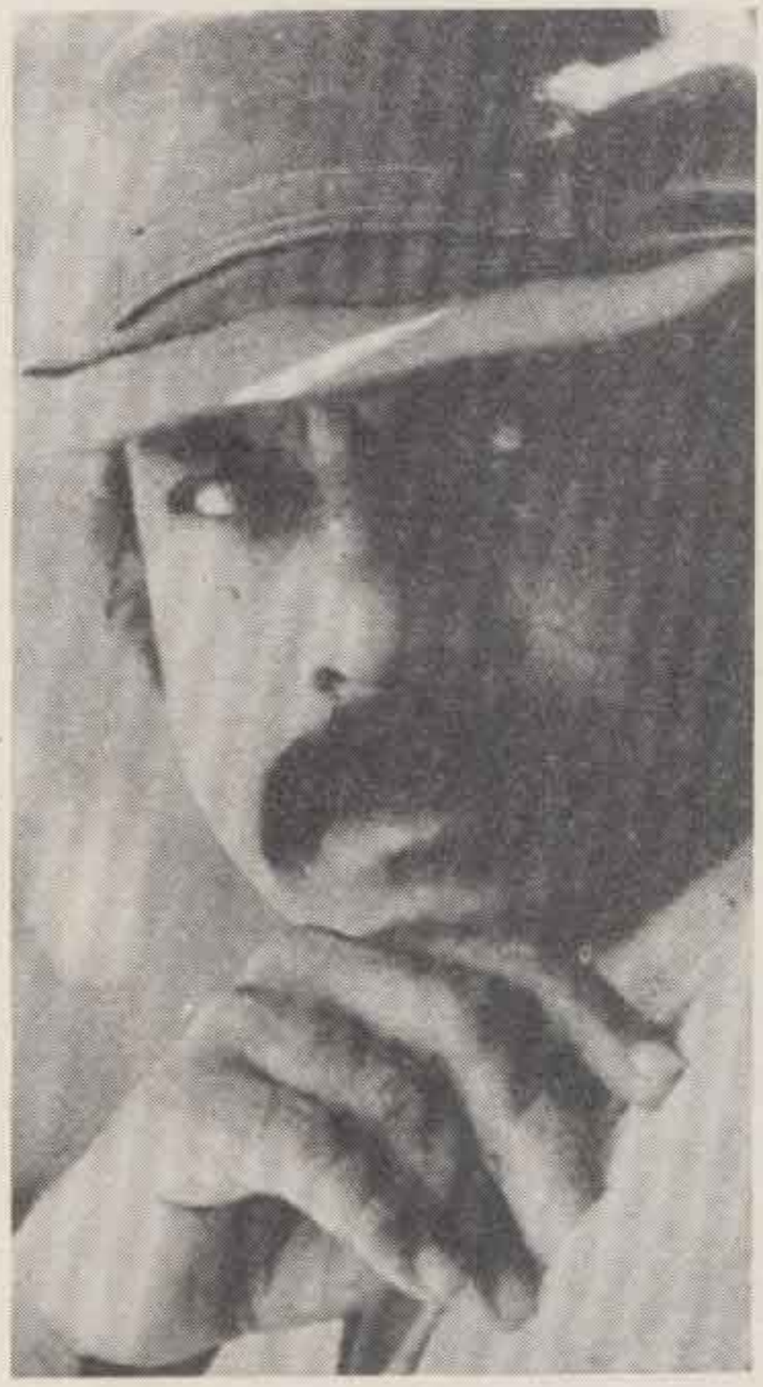

BALU MAHENDRA was a brilliant student of the Film and Television Institute of India and has worked with directors like Ramu Kariat, P.N. Menon, Bapu and K. Vishwanath as an independent cinematographer. His first directorial venture came in 1976. Since then, he has continued to write the screenplays of his films along with editing and photographing them. Some of his important films as a cinematographer are NELLU, PRAYANAM, SANKARABHARANAM and MULLUM MALARUM. Among his directorial efforts are KOKILA and MOONDRUM PIRAI, both National Award winners, OLANGAL, OOMAI KUYIL, NIREEKSHANA and VEEDU for which Archana received the Best Actress Award in the 1988 National Awards. VEEDU was also judged the Best Tamil Film of the year. Mahendra has received many National and State Awards for Best Cinematography and the films directed by him display his versatility in five Indian languages.

अन्य सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार

उन्नीकुट्टनु जोली किट्टी? (मलयालम)

निर्माता **वी.आर. गोपीनाथ** को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **वी.आर. गोपीनाथ** को रजत कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

अन्य सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार मलयालम फिल्म **उन्नीकुट्टनु जोली किट्टी?** को एक ऐसे बेरोज़गार युवक के यथार्थ चित्रण के लिए दिया गया है जो समाज के उपेक्षापूर्ण दृष्टिकोण के कारण पूरी तरह निकम्मा बन जाता है।

Award for the Best Film on Other Social Issues such as prohibition, women and child welfare, anti-dowry, drug abuse, etc.

UNNIKKUTTANU JOLI KITTY? (Malayalam)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer, V.R. Gopinath.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director, V.R. Gopinath.

Citation

The Award for the Best Film on Other Social Issues for 1989 is given to the Malayalam film UNNIKKUTTANU JOLI KITTY? for its bleak narration of an unemployed youth becoming an unemployable due to callous social attitudes.

वी.आर. गोपीनाथ ने भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान से प्रशिक्षण लिया। उन्होंने 21 लघु फिल्मों और 3 कथाचित्रों की पटकथा लिखी और निर्देशन किया है। उनकी दो फिल्में **ग्रीष्मम** तथा **औरु मेमासप्पुलरियिल** भारत के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भारतीय पैनोरामा वर्ग में दिखाई गई। उनकी फिल्मों की काफी सराहना की गई और उन्हें देश-विदेश में कई पुरस्कार मिले हैं।

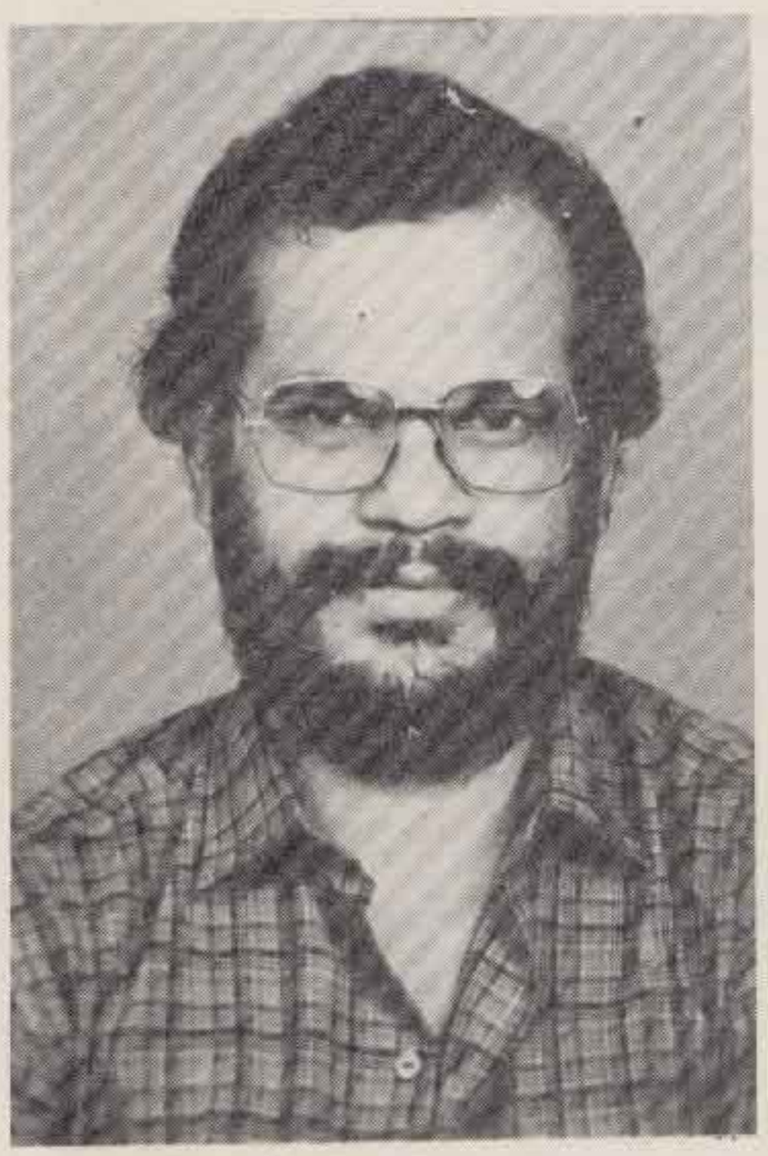

V.R. GOPINATH is a product of the Film and Television Institute of India and has scripted and directed twenty-one short films and three feature films. Two of his films, GREESHMAM and ORU MAYMASAPPULARIYIL, have been shown in the Indian Panorama section of the International Film Festival of India. His work has received critical acclaim as well as its share of awards in India and abroad.

पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार

बनानी (असमिया)

निर्माता **मैसर्स पूर्वांचल फ़िल्म कोआप्रेटिव सोसाइटी लि.** को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **जाहनू बरुआ** को रजत कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फ़िल्म का 1989 का पुरस्कार असमिया फ़िल्म **बनानी** को वनों के विनाश के विरुद्ध एक वन-अधिकारी के संघर्ष को कुशलता पूर्वक चित्रित करने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Film on Environment/ Conservation/Preservation

BANANI (Assamese)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer, M/s Purbanchal Film Co-operative Society Ltd.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director, Jahnu Barua.

Citation

The Award for the Best Film on Environment/Conservation/Preservation for 1989 is given to the Assamese film BANANI for its delicate and nuanced description of a forest official's struggle against mercenary and bureaucratic despoilation of forests.

जाहनू बरुआ ने गुवाहाटी विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक डिग्री प्राप्त की है। 1974 में उन्होंने भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान से निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया। बाद में वे भारतीय अंतरिक्ष संगठन में भर्ती हो गये और उन्होंने उपग्रह शिक्षा टेलीविज़न प्रयोग परियोजना के अंतर्गत बच्चों के लिए 100 से अधिक विज्ञान कार्यक्रम तैयार किये। 1982 में उन्होंने अपने पहले कथाचित्र **अपरुपा** का निर्माण और निर्देशन किया। इस फिल्म को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला और इसका हिन्दी में फिर से निर्माण किया गया। उन्होंने 1986 में **पापोरी** और 1987 में **हलोधिया चोराय बाओधान खाये** फिल्में बनाई। इन दोनों फिल्मों को भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भारतीय पैनोरामा वर्ग में दिखाया गया। **हलोधिया चोराय बाओधान खाए** को 1987 में सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

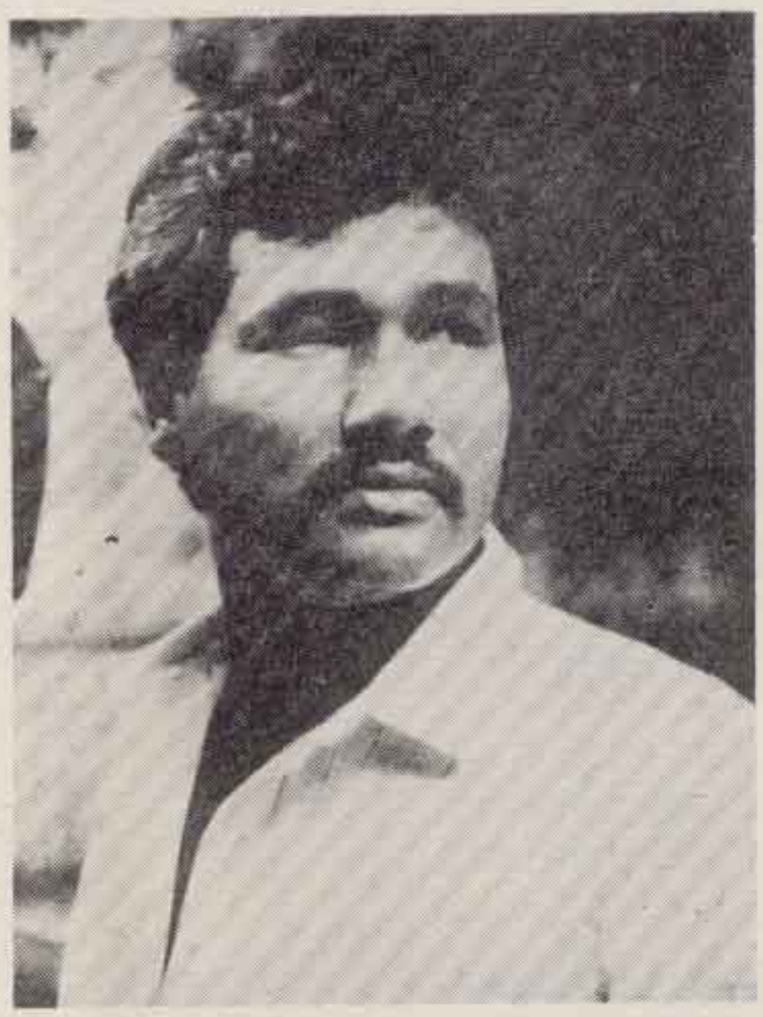

JAHNU BARUA is a science graduate from Guwahati University, Assam and received his diploma in film direction from the Film and Television Institute of India in 1974. He later joined the Indian Space Research Organization and produced more than one hundred science programmes for children under the Satellite Instructional Television Experiment project. He produced and directed his first feature film APAROOPA in 1982. The film won the National Award and was remade in Hindi. His later films are PAPORI, made in 1986 and HALODHIA CHORAYE BAODHAN KHAI made in 1987.

सर्वोत्तम बाल फ़िल्म पुरस्कार

अंकुर मैना और कबूतर (हिन्दी)

जम्बू सवारी (कन्नड़)

निर्माता **भारतीय बालचित्र समिति (अंकुर मैना और कबूतर)** तथा **के.एस.एल. स्वामे (ललिता रवि) (जम्बू सवारी)** को स्वर्ण कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **मदन बावरिया (अंकुर मैना और कबूतर)** तथा **के.एस.एल. स्वामे (ललिता रवि) (जम्बू सवारी)** को स्वर्ण कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल फ़िल्म का 1989 का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म **अंकुर मैना और कबूतर** को मॉरिशस के प्राकृतिक वातावरण में वन्य जीवन के संरक्षण के लिए संघर्ष में बच्चों के सहयोग को चित्रित करने के लिए दिया गया है।

सर्वोत्तम बाल फ़िल्म का 1989 का पुरस्कार कन्नड़ फ़िल्म **जम्बू सवारी** को भी दिया गया है जिसमें एक वन्य प्राणी के प्रति बच्चे के सहज लगाव और आधुनिक विश्व में मनुष्य और जानवरों के सम्बंधों की वास्तविकता के बीच संघर्ष और उसके समाधान को चित्रित किया गया है।

Award for the Best Children's Film

ANKUR MAINA AUR KABOOTAR (Hindi) and JAMBOO SAVAARI (Kannada)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producers, Children's Film Society of India (for ANKUR MAINA AUR KABOOTAR) and K.S.L. Swame (Lalitha Ravee) (for JAMBOO SAVAARI).

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Directors, Madan Bawaria (for ANKUR MAINA AUR KABOOTAR) and K.S.L. Swame (Lalitha Ravee) (for JAMBOO SAVAARI).

Citation

The Award for the Best Children's Film of 1989 is given to the Hindi film ANKUR MAINA AUR KABOOTAR for its involvement of children in the fight for preservation of wildlife in the exotically shot isle of Mauritius.

The Award for the Best Children's Film of 1989 is also given to the Kannada film JAMBOO SAVAARI for the way in which it establishes the conflict between a child's instinctive love for a wild animal and the reality of man-animal relationships in the modern world, along with the resolution of that conflict.

मदन बावरिया ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान से निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। उन्होंने अनेक लघु फिल्मों और वृत्त चित्रों की पटकथा लिखी और निर्देशन किया है। इनमें **बब्बल्स, सुमन, सफर** शामिल हैं। उन्होंने **प्रीत** और **शायद** कथाचित्र बनाये हैं। धारावाहिक **एक कहानी** के अन्तर्गत उन्होंने दो टेली-फिल्मों का भी निर्देशन किया। मदन बावरिया ने प्रेम कपूर, प्रयागराज और बासु चट्टर्जी के साथ सहायक निर्देशक के रूप में काम किया है तथा विष्णु माथुर की फिल्म **पहला अध्याय** और दूरदर्शन धारावाहिक **राग दरबारी** में अभिनय भी किया है।

के.एस.एल. स्वामे (ललिता रवि) ने लगभग 40 फिल्मों का निर्देशन किया है। उनकी गिनती कन्नड़ सिनेमा के जाने-माने निर्देशकों में की जाती है। उन्होंने सामाजिक तथा पौराणिक विषयों के साथ-साथ लोक जीवन, साहसिक कार्यों तथा जीवनी सम्बन्धी फिल्मों का भी निर्माण किया है। उन्होंने अपनी कुछ फिल्मों में अभिनय भी किया है और वे पार्श्व गायक भी हैं। उन्होंने निर्देशन का प्रशिक्षण प्रसिद्ध निर्देशक जी.वी. अय्यर से प्राप्त किया। ललिता रवि ने स्वतंत्र रूप से पहली बार 1966 में **तुगुदीपा** फिल्म का निर्देशन किया। उनकी कुछ प्रसिद्ध फिल्में हैं:- **अरासीना कुमकुम, आरु मूरु ओमबातु, मौथिले सीतेयरू** और **अलुकु**। उन्होंने शास्त्रीय संगीतकारों के जीवन पर आधारित एक फिल्म **मलाया मारुता** का निर्माण किया, जिसके लिये फिल्म के संगीत निर्देशक विजय भास्कर को सुर श्रृंगार संसद का पुरस्कार मिला। ललिता रवि फिल्म उद्योग की गई समितियों के सदस्य भी हैं।

MADAN BAWARIA has a diploma in direction from the Film and Television Institute of India. He has written and directed many short films and documentaries, including BUBBLES, SUMAN, SAFAR (short films), PREET and SHAAYAD (feature films) and two telefilms as part of the series EK KAHANI. He has worked as Assistant Director with Prem Kapoor, Prayag Raj and Basu Chatterjee and has acted in character roles in Vishnu Mathur's PAHELA ADHYAYA and Krishna Raghav's television serial, RAAG DARBARI.

K.S.L. SWAME (LALITHA RAVEE) has directed nearly forty films and is one of the most well-known directors of Kannada cinema. His films have covered a wide range of themes, including social, mythological, folk, biographical and adventure dramas. He has also acted in some of his films and made a name as a playback singer. His training in the cinema was under the celebrated director G.V. Iyer and his first directorial venture was THOOGUDEEPA in 1966. Among his best-known films are ARASINA KUMKUMA, AARU MOORU OMBATHU, ALUKU, MITHILEYA SEETHEYARU and the musical MALAYA MARUTHA based on the life of a classical musician which won the Sur Sringar Sansad Award for his music director Vijayabhaskar. Ravee is actively involved in various committees set up by the film industry.

सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

अडूर गोपालकृष्णन्

निर्देशक **अडूर गोपालकृष्णन्** को स्वर्ण कमल और 50,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम निर्देशन का 1989 का पुरस्कार **अडूर गोपालकृष्णन्** को उनकी मलयालम फ़िल्म **मथिलुकल** में सुप्रसिद्ध लेखक वैक्कम मोहम्मद बशीर के जेल जीवन पर आधारित कहानी की मूल चेतना को सफलता पूर्वक चित्रित करने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Direction

ADOOR GOPALAKRISHNAN

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000 to the Director, ADOOR GOPALAKRISHNAN.

Citation

The Award for the Best Direction of 1989 is given to ADOOR GOPALAKRISHNAN for his work in the Malayalam film MATHILUKAL for successfully capturing the spirit of the short story on his prison days by the celebrated writer Vaikkom Mohammed Basheer.

अडूर गोपालकृष्णन का जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ, जहाँ कथकली परम्परा कई पीढ़ियों से प्रचलित है। वे प्रारम्भ से ही नाटकों से जुड़े रहे और उन्होंने अभिनेता, नाटककार तथा मंच निर्देशक के रूप में काम किया। 1965 में भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से पटकथा लेखन और निर्देशन की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने केरल में चित्रलेखा फिल्म सोसाईटी का निर्माण करके राज्य में सहकारी फिल्म आंदोलन का श्रीगणेश किया और कला फिल्मों के निर्माण, वितरण और प्रदर्शन की दिशा में देश का पहला सहकारी प्रयास भी किया। उन्होंने 6 कथाचित्रों का निर्देशन किया है तथा कई लघु फिल्में और वृत्त चित्र बनाये हैं। उनकी कई फिल्मों को पुरस्कार मिले हैं और वे विश्व भर में भारत के सर्वाधिक कुशल निर्देशकों में गिने जाते हैं।

ADOOR GOPALAKRISHNAN was born in a family which traditionally patronized and practised Kathakali. He grew up in close association with the stage as actor, playwright and stage director. Graduating in script-writing and direction from the Film and Television Institute of India in 1965, Gopalakrishnan pioneered the film society movement in Kerala by starting the Chitralekha Film Society and India's first cooperative for the production, distribution and exhibition of artistic films. He has written and directed six feature films and many short films and documentaries. His ELIPPATHAYAM won the BFI Award and his MUKHAMUKHAM and ANANTARAM won the FIPRESCI prizes. Highly acclaimed by critics the world over, Gopalakrishnan is today considered one of the most important directors from India.

सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार

मम्मूटी

अभिनेता **मम्मूटी** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेता का 1989 का पुरस्कार **मम्मूटी** को मलयालम फ़िल्मों **मथिलुकल** तथा **ओरू वडक्कन वीरगाथा** में बहुमुखी भूमिकायें सफलतापूर्वक निभाने के लिए प्रदान किया गया है।

Award for the Best Actor

MAMMOOTTY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Actor, MAMMOOTTY.

Citation

The Award for the Best Actor of 1989 is given to MAMMOOTTY for successfully portraying the multifaceted roles in the Malayalam films MATHILUKAL and ORU VADAKKAN VEERAGADHA.

मम्मूटी मलयालम फिल्मों के संभवतः सर्वाधिक लोकप्रिय अभिनेता हैं। उन्होंने 250 से अधिक फिल्मों में काम किया है। उनका फिल्मी जीवन आज़ाद के निर्देशन में बनी फिल्म **विल्कानुंडू स्वप्नांगल** से आरम्भ हुआ। के.जी. जार्ज की फिल्मों **मेला** और **यवनिका** से उन्हें व्यापक प्रसिद्धि मिली। फिल्मों में अभिनय शुरू करने से पहले मम्मूटी वकालत करते थे। उन्होंने लोकप्रिय सिनेमा तथा गंभीर कलात्मक फिल्मों में अभिनय करते हुए अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। उन्होंने अडूर गोपालकृष्णन की कलात्मक फिल्म **अनंतरम** में भी अभिनय किया है।

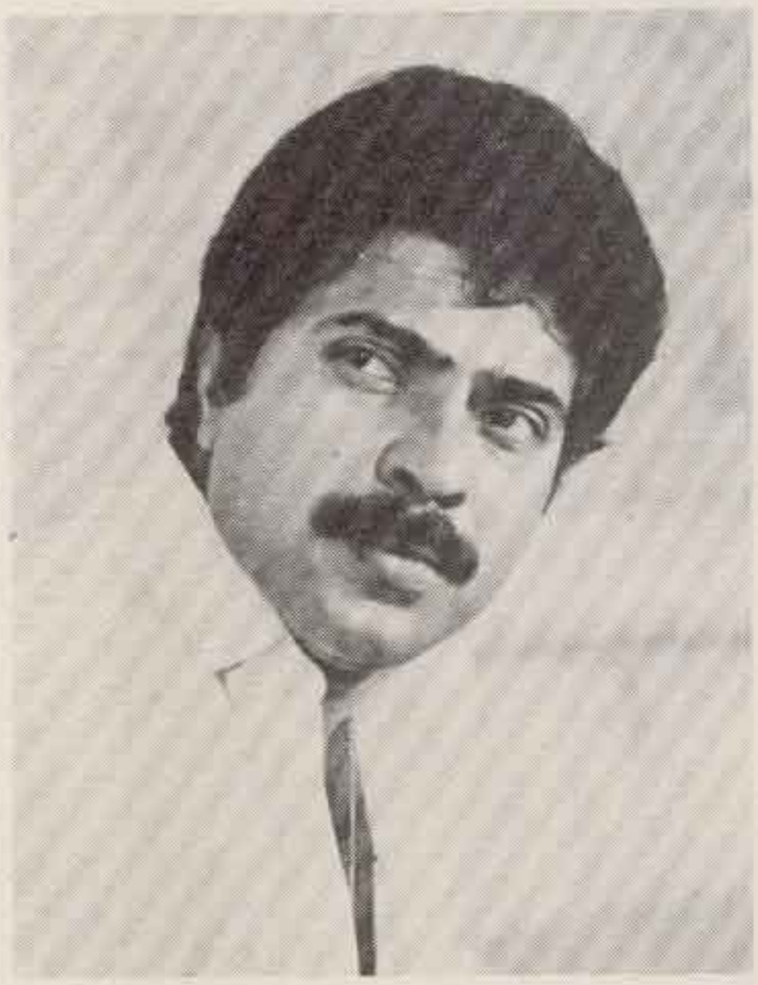

MAMMOOTTY is probably the most popular actor of the Malayalam cinema, with more than 250 films to his credit. His film career began with VILKANUNDU SWAPNANGAL directed by Azad and K.G. George's MELA and YAVANIKA established him on the silver screen. A film society enthusiast in his student days, Mammootty was a practising lawyer before he took to acting. He has displayed his tremendous versatility as an actor both in the popular cinema as well as in serious and artistic films, such as Adoor Gopalakrishnan's earlier film ANANTARAM.

सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार

श्रीलेखा मुखर्जी

अभिनेत्री **श्रीलेखा मुखर्जी** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेत्री का 1989 का पुरस्कार **श्रीलेखा मुखर्जी** को बंगला फ़िल्म **परशुरामेर कुठार** में एक ऐसी असहाय महिला की वेदना और पीड़ा को व्यक्त करने के लिए दिया गया है जिसे समाज पापमय जीवन की ओर धकेल देता है।

Award for the Best Actress

SREELEKHA MUKHERJI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Actress, SREELEKHA MUKHERJI.

Citation

The Award for the Best Actress of 1989 is given to SREELEKHA MUKHERJI for her performance in the Bengali film PARASHURAMER KUTHAR, bringing out the agony and pain of a helpless woman forced by society to live an ignoble life.

श्रीलेखा मुखर्जी का लालन-पालन संगीत और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों के वातावरण में हुआ। स्कूल की शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने कलकत्ता में रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया, जहाँ से उन्होंने गायन संगीत में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। गायिका होने के साथ-साथ वे संगीत की शिक्षा भी देती हैं। **परशुरामेर कुठार** में उन्होंने पहली बार अभिनय किया है।

SREELEKHA MUKHERJI grew up in an atmosphere of music and other cultural activities. After leaving school she joined the Rabindra Bharati University in Calcutta from where she received her Masters degree in vocal music. Music remains her first commitment and she has performed as a singer and taught music. PARASHURAMER KUTHAR is her first appearance in front of a camera.

सर्वोत्तम सह-अभिनेता पुरस्कार

नाना पाटेकर

सह-अभिनेता **नाना पाटेकर** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह-अभिनेता का 1989 का पुरस्कार **नाना पाटेकर** को हिन्दी फ़िल्म **परिंदा** में एक मनोरोगी के चरित्र का अद्वितीय ढंग से अभिनय करने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Supporting Actor

NANA PATEKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Supporting Actor, NANA PATEKAR.

Citation

The Award for the Best Supporting Actor of 1989 is given to NANA PATEKAR for his unique portrayal of a psychotic character in the Hindi film PARINDA.

नाना पाटेकर गत 15 वर्षों से मंच अभिनय से जुड़े हुए हैं। **पाहिजे जातिचे, पुरुष** तथा **महासागर** नाटकों द्वारा वे एक अभिनेता के रूप में प्रसिद्ध हुए। सिनेमा से भी काफी समय से सम्बद्ध रहे हैं तथा पिछले दस वर्षों में लगभग 15 हिन्दी एवं मराठी फिल्मों में अभिनय किया है। **रघु-मैना** तथा **गढ-जेजुरी** फिल्मों में सर्वोत्तम अभिनय के लिए उन्हें राज्य पुरस्कार भी मिला है। उनकी प्रमुख फिल्में **सलाम बाम्बे, अंकुश, प्रतिघात** एवं **परिंदा** हैं।

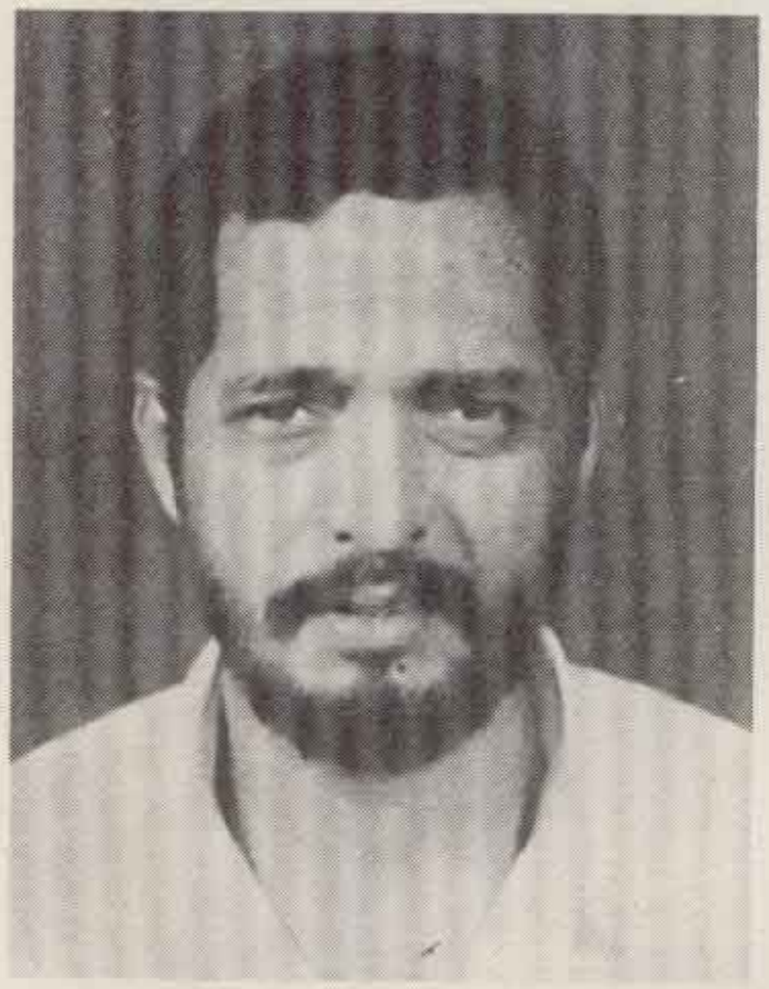

NANA PATEKAR has been acting on the stage for the last fifteen years. Plays such as "Pahije Jatiche", "Purush" and "Mahasagar" established him as an actor of repute. His association with the cinema too goes back a long way. Over a period of ten years he has acted in at least fifteen Marathi and Hindi films. He won the State Award for the Best Actor for his performance in RAGHU-MAINA and GAD-JEJURI. Among his most well-known films are SALAAM BOMBAY, ANKUSH, PRATIGHAAT and PARINDA.

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री पुरस्कार

मनोरमा

सह-अभिनेत्री **मनोरमा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री का 1989 का पुरस्कार **मनोरमा** को तमिल फ़िल्म **पुदिया पादई** में बहुमुखी अभिनय क्षमता का परिचय देने के लिए प्रदान किया गया है।

Award for the Best Supporting Actress

MANORAMA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Supporting Actress, MANORAMA.

Citation

The Award for the Best Supporting Actress of 1989 is given to MANORAMA for the versatility shown in the Tamil film PUDHEA PADHAI.

मनोरमा की अभिनेत्री के रूप में पहली सफल फिल्म **मलाई इत्ता मंगाई** थी जो 1958 में बनी थी। उन्होंने एक हजार से भी अधिक फिल्मों में अभिनय करके अपनी तरह का विश्व रिकार्ड कायम किया है। उन्हें कई पुरस्कार मिले हैं। वे सफल रंगमंच अभिनेत्री के साथ-साथ लोकप्रिय गायिका भी हैं। मनोरमा को तमिल नाडु के तीन मुख्य मंत्रियों अन्ना दुरई, करुणानिधि और एम.जी. रामचन्द्रन के साथ अभिनय करने का गौरव प्राप्त है। वे टेलीविज़न कार्यक्रमों में भी बढ़-बढ़ कर भाग लेती हैं।

MANORAMA's first success as an actress was in MALAI ITTA MANGAI in 1958. Since then she has acted in more than 1000 films and set a world record in the process. A recipient of the Kalaimamani Award and the Kalaivanar Award, Manorama has also been a successful stage actress and a popular singer. A familiar figure on Madras television, Manorama also has the distinction of having acted with three Tamil Nadu Chief Ministers—Annadurai, Karunanidhi and M.G. Ramachandran.

सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार

मृण्मयी चंदोरकर

बाल कलाकार **मृण्मयी चंदोरकर** को रजत कमल और 5000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कलाकार का 1989 का पुरस्कार **मृण्मयी चंदोरकर** को मराठी फ़िल्म **कलत नाकलत** में सहज और स्वभाविक अभिनय के लिए दिया गया है।

Award for the Best Child Artiste

MRINMAYEE CHANDORKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000 to the Child Artiste, MRINMAYEE CHANDORKAR.

Citation

The Award for the Best Child Artiste of 1989 is given to MRINMAYEE CHANDORKAR for her innocent and spontaneous portrayal in the Marathi film KALAT NAKALAT.

मृण्यमी चंदोरकर केवल 5 साल की बच्ची है और एक प्राथमिक विद्यालय में पढ़ती है। **कलत नाकलत** उनकी पहली फिल्म है।

MRINMAYEE CHANDORKAR is only five years old and studies in a primary school. KALAT NAKALAT is her first film.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार

अजय चक्रवर्ती

पार्श्व गायक **अजय चक्रवर्ती** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायक का 1989 का पुरस्कार **अजय चक्रवर्ती** को बंगला फ़िल्म **छन्दनीड़** में शास्त्रीय संगीत पर अपने अधिकार के बल पर गायन में भावनाओं की अद्‌भुत गहराई लाने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Male Playback Singer

AJOY CHAKRABORTY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Male Playback Singer, AJOY CHAKRABORTY.

Citation

The Award for the Best Male Playback Singer of 1989 is given to AJOY CHAKRABORTY for bringing a rare depth of emotion, adorned by his command of the classical idiom, in the Bengali film CHHANDANEER.

अजय चक्रवर्ती ने रविन्द्र भारती विश्वविद्यालय से संगीत में स्नातकोत्तर की शिक्षा प्राप्त की तथा संगीत शोध अकादमी, कलकत्ता में प्राध्यापक भी हैं। स्वर्ण पदक प्राप्तकर्ता, अजय चक्रवर्ती अकादमी के अधिसदस्य हैं तथा उत्तरी भारत के पटियाला-कसूर घराना गायन के व्याख्याता हैं। शास्त्रीय संगीत विशिष्ठता के साथ-साथ, अजय चक्रवर्ती पार्श्व गायन में बहुत लोकप्रिय हैं तथा इसके लिए राज्य पुरस्कार भी प्राप्त किया है। वे पन्नालाल सामन्त, कनाईदास बैरागी, पद्मभूषण पंडित ज्ञान प्रकाश घोष तथा उस्ताद मुनववर अलि खान के शिष्य रहे हैं। 1981 एवं 1983 में इन्होंने अमेरिका की अमीर-खुसरो सोसाईटी में अध्यापन कार्य किया तथा 1985 में अमेरिका में आयोजित भारत महोत्सव में भी भाग लिया है।

AJOY CHAKRABORTY completed his post-graduation in music from Rabindra Bharati University and is a member of the faculty of the Sangeet Research Academy in Calcutta. A gold-medallist and a Fellow of the Academy, he is an exponent of the Patiala-Kasoor Gharana of North Indian vocal classical music. With his expertise in light classical music as well, Chakraborty has proved to be a highly successful playback singer and received State Awards for his performance. He has been a pupil of Pannalal Samanta, Kanaidas Bairagi, Padamabhushan Pandit Jnan Prakash Ghosh and Ustad Munawar Ali Khan. In 1981 and 1983, he taught at the Amir-Khusrau Society of America and, in 1985, he participated in the Festival of India in the USA.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार

अनुराधा पौडवाल

पार्श्व गायिका **अनुराधा पौडवाल** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का 1989 का पुरस्कार **अनुराधा पौडवाल** को मराठी फ़िल्म **कलत नाकलत** में स्पष्टता और माधुर्य के साथ गीत गाने के लिए प्रदान किया गया है।

Award for the Best Female Playback Singer

ANURADHA PAUDWAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Female Playback Singer, ANURADHA PAUDWAL.

Citation

The Award for the Best Female Playback Singer of 1989 is given to ANURADHA PAUDWAL for her clear and mellifluous rendering of the songs in the Marathi film KALAT NAKALAT.

अनुधारा पौडवाल का जन्म 1954 में बम्बई में हुआ। फिल्म उद्योग से बाहर उन्होंने गायन प्रारम्भ किया। मराठी फिल्म से गायन प्रारम्भ किया तथा हिन्दी फिल्म उद्योग में **आप बीती** फिल्म से प्रसिद्धि प्राप्त की। बाद में जिन फिल्मों के लिए अनुराधा ने गीत गाए उनके अधिकतर संगीत निर्देशक लक्ष्मीकांत एवं प्यारेलाल रहे हैं। जिन फिल्मों में उनके गीत अधिक लोकप्रिय हुए, वे हैं: **अभिमान, दोस्त मजा मस्त** (मराठी) **लाल दुपट्टा मलमल का, जीना तेरी गली में, आई मिलन की रात** (हिन्दी)। फिल्मों के अतिरिक्त उन्होंने गीत, गजल एवं भजन तथा मराठी में भक्ति गीत भी गाए हैं। उन्होंने राजस्थानी, बंगला, उड़िया और हरियाणवी भाषाओं में भी गीत गाएं हैं।

ANURADHA PAUDWAL was born in Bombay in 1954. She began her career as a vocalist outside the film industry. Her first appearance as a playback singer was in a Marathi film and she established herself in the Hindi film industry with her first solo in the film AAP BEETI. The Music Directors for the film were Laxmikant and Pyarelal, for whom Anuradha was to sing many popular pieces in later years. Films in which her songs were highly appreciated include ABHIMAN and DOST MAZHA MAST in Marathi and LAL DUPATTA MALMAL KA, JEENA TERI GALI MEIN and AAYEE MILAN KI RAAT in Hindi. Her repertoire outside the film industry includes geets, ghazals and bhajans as well as devotional music in Marathi. She has also sung in Rajasthani, Bengali, Oriya and Haryanvi.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

वीरेन्द्र सैनी

छायाकार **वीरेन्द्र सैनी** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

फ़िल्म की प्रोसेसिंग करने वाली प्रयोगशाला **मैसर्स ऐडलैब्स, बम्बई** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम छायांकन का 1989 का पुरस्कार **वीरेन्द्र सैनी** को हिन्दी फ़िल्म **सलीम लंगड़े पे मत रो** की विशेष प्रकृति को उभारने में उच्चकोटि के तकनीकी कौशल का परिचय देने के लिए प्रदान किया गया है।

Award for the Best Cinematography

VIRENDRA SAINI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Cameraman, VIRENDRA SAINI.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the laboratory processing the film, M/s Ad-Labs.

Citation

The Award for the Best Cinematography of 1989 is given to VIRENDRA SAINI for the high technical skill shown in evoking the special ethos of the Hindi film SALIM LANGDE PE MAT RO.

वीरेन्द्र सैनी ने 1976 में भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान से छायांकन का प्रशिक्षण लेने के बाद युक्त फिल्म सहकारी समिति की सदस्यता ग्रहण कर ली जिसने उसी साल **घासी राम कोतवाल** फिल्म का निर्माण किया। तब से वे मणि कौल, सई पंराजपे, सईद मिर्ज़ा, कुन्दन शाह, विधु विनोद चोपड़ा और भीम सेन जैसे श्रेष्ठ युवा निर्देशकों के साथ छायाकार के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने 14 कथाचित्रों और कथाचित्र जितनी लम्बाई के वृत्त चित्रों तथा 6 दूरदर्शन धारावाहिकों का छायांकन किया है। उन्होंने दूरदर्शन के लिए सियोल ओलम्पिक के बारे में एक फिल्म का निर्देशन किया। इस समय वे भारतीय खेल प्राधिकरण के लिए विशेष क्षेत्र खेल कार्यक्रम के बारे में तैयार किये जा रहे धारावाहिकों **क्वेस्ट फार गोल्ड** का निर्देशन कर रहे हैं।

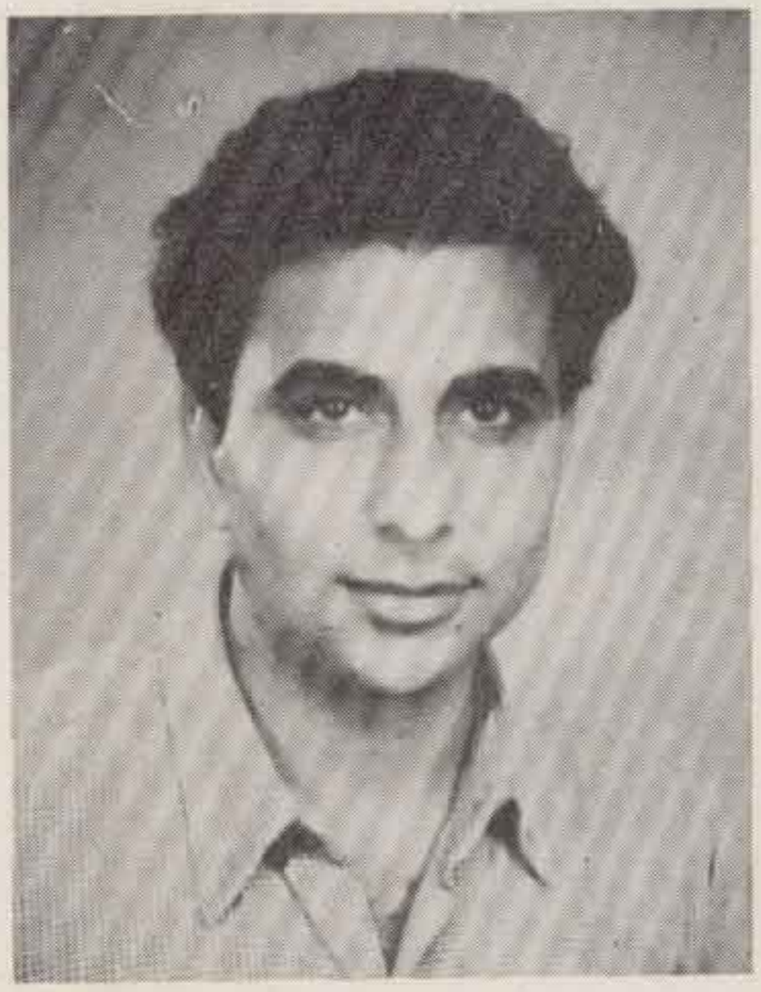

VIRENDRA SAINI graduated in cinematography in 1976 from the Film and Television Institute of India and became a member of the Yukt Film Cooperative Society which produced GHASIRAM KOTWAL the same year. Since then he has worked as a cinematographer with some of the best younger directors in the country—Mani Kaul, Sai Paranjpye, Saeed Mirza, Kundan Shah, Vidhu Vinod Chopra and Bhim Sain—and in 14 feature films and feature-length documentaries and six tele-serials. He has also directed THE CURTAIN-RAISER ON SEOUL OLYMPICS: 1988 for Doordarshan and is now directing a six episode television serial, QUEST FOR GOLD, on the Special Area Games Programme for the Sports Authority of India.

सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार

एम.टी. वासुदेवन नायर

पटकथा लेखक **एम.टी. वासुदेवन नायर** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पटकथा का 1989 का पुरस्कार **एम.टी. वासुदेवन नायर** को मलयालम फ़िल्म **ओरू वडक्कन वीरगाथा** की सुगठित और रोचक कथानक का यथार्थ चरित्र चित्रण तथा केरल में कुछ सौ वर्ष पहले के जनजीवन को विवेकपूर्ण ढंग से चित्रित करने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Screenplay

M.T. VASUDEVAN NAIR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Screenplay Writer, M.T. VASUDEVAN NAIR.

Citation

The Award for the Best Screenplay of 1989 is given to M.T. VASUDEVAN NAIR for the gripping plot, clearly etched characterizations and the brilliant portrayal of life in Kerala a few hundred years ago in the Malayalam film ORU VADAKKAN VEERAGADHA.

एम.टी. वासुदेवन नायर केरल के सुप्रसिद्ध लेखक हैं और उनके 7 उपन्यास तथा पन्द्रह कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने 31 फिल्मों की पटकथा लिखी है और 4 फिल्मों का पटकथा लेखन और निर्देशन दोनों किया है। इनमें **निर्मालयम** फिल्म भी शामिल है, जिसे 1973 में राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक मिला। वे केरल सरकार की ओर से दो सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार तथा 7 सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

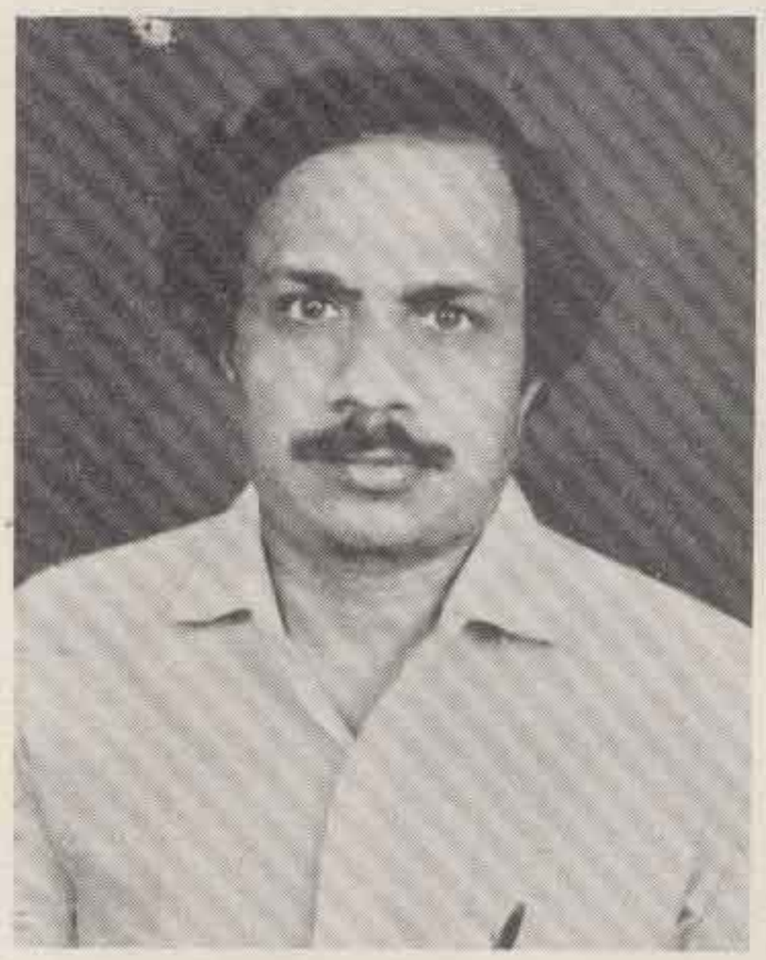

M.T. VASUDEVAN NAIR is a leading writer from Kerala and the author of seven novels and fifteen volumes of short stories. Closely associated with the Kerala film industry since 1964, he has written screenplays for thirty-one films. He has also written and directed four films including NIRMALYAM which won the President's Gold Medal in 1973. He has won two Best Director awards and seven Best Screenplay awards from the Kerala State Government.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

हरिकुमार

ध्वनि आलेखक **हरिकुमार** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1989 का पुरस्कार **हरिकुमार** को मलयालम फ़िल्म **मथिलुकल** में जेल की चारदिवारी के भीतर फ़िल्म के प्रभाव और रोचकता को बनाए रखने में निर्देशक को सृजनात्मक ढंग से सहायता प्रदान करने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Audiography

HARIKUMAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Audiographer, HARIKUMAR.

Citation

The Award for the Best Audiography of 1989 is given to HARIKUMAR for his work in the Malayalam film MATHILUKAL for the perfection noticeable throughout in creatively helping the Director to capture the mood and sustain interest within the enclosed walls of a jail.

हरिकुमार ने मद्रास में तमिलनाडु फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान से स्नातक का डिप्लोमा प्राप्त किया। नई दिल्ली दूरदर्शन केन्द्र में कुछ समय तक ध्वनि आलेखक के रूप में काम करने के बाद वे त्रिवेन्द्रम् में केरल राज्य विकास निगम के चित्रांज़लि स्टूडियो में काम करने लगे। उन्हें 1987 में अडूर गोपालकृष्णन की फिल्म **अनंतरम** के लिए सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। जिन अन्य पुरस्कृत फिल्मों में उन्होंने ध्वनि आलेखन किया है, वे हैं के.जी. जार्ज की फिल्म **यवनिका,** अडूर गोपालकृष्णन की **मुखामुखम्** एम.टी. वासुदेवन नायर की **मंजु,** अरविंदन की **चिदम्बरम्** और सिबी मलाइल की फिल्म **दूरे दूरे ओरु कूडु कूट्टम।**

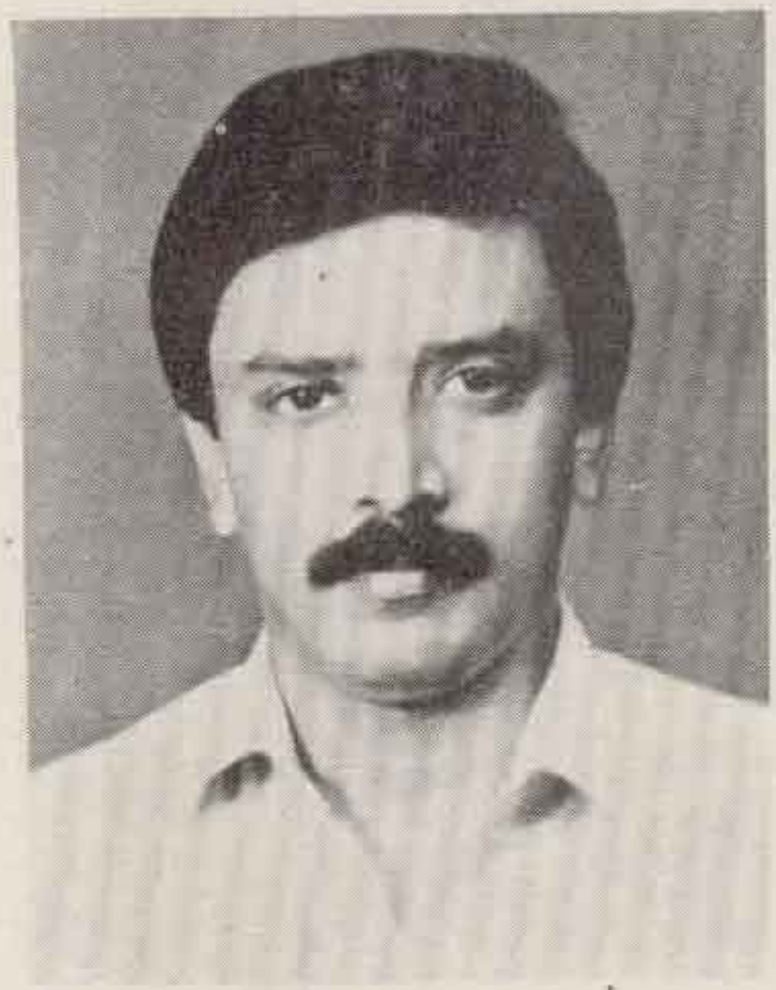

N. HARIKUMAR graduated from the Film and Television Institute of Tamil Nadu, Madras. After a stint as sound recordist in the Doordarshan Kendra in New Delhi, he joined the Chitranjali Studio of the Kerala State Film Development Corporation in Trivandrum. He won the National Award for Best Audiography for his work in Adoor Gopalakrishnan's ANANTARAM in 1987. Among the other award-winning films for which he has recorded sound are YAVANIKA by K.G. George, MUKHAMUKHAM by Adoor Gopalakrishnan, MANJU by M.T. Vasudevan Nair, CHIDAMBARAM by Aravindan and DOORE DOORE ORU KOODU KOOTTAM by Siby Malayil.

सर्वोत्तम सम्पादन पुरस्कार

रेणु सलूजा

फिल्म सम्पादिका **रेणु सलूजा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सम्पादन का 1989 का पुरस्कार **रेणु सलूजा** को हिन्दी फ़िल्म **परिंदा** में उनके काम के लिए दिया गया है जिसमें उन्होंने अपनी कला के उच्च ज्ञान का परिचय देते हुए स्टीक कटाई-छटाई करके फ़िल्म को सृजनात्मक उच्चता प्रदान की है।

Award for the Best Editing

RENU SALUJA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Editor, RENU SALUJA.

Citation

The Award for the Best Editing of 1989 is given to RENU SALUJA for her work in the Hindi film PARINDA for her brisk and precise cutting and the creative heights to which she has taken the film with her intelligent and intuitive knowledge of her art.

रेणु सलूजा ने बम्बई एल्फिंस्टन कालेज से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की और वहीं भारतीय विद्या भवन में राजेंद्र प्रसाद संचार संस्थान से पत्रकारिता में डिप्लोमा प्राप्त किया। इसके बाद उन्होंने 1976 में भारतीय फिल्म एवम् टेलीविज़न संस्थान में प्रवेश किया। उन्होंने अनेक दूरदर्शन धारावाहिकों और हिन्दी फिल्मों का सम्पादन किया है। इनमें उल्लेखनीय हैं— **जाने भी दो यारो, अर्ध सत्य, पार्टी, जन्म, न्यू दिल्ली टाइम्स, पेस्टनजी** और **परिन्दा**।

RENU SALUJA graduated from Elphinstone College, Bombay, completed a diploma course in journalism for the Rajendra Prasad Institute of Communications, Bharatiya Vidya Bhavan, Bombay, and went on to graduate from the Film and Television Institute of India in 1976. She has edited a number of television serials and many feature films in Hindi, among which are JANE BHI DO YAARO, ARDH SATYA, PARTY, JANAM, NEW DELHI TIMES, PESTONJI and PARINDA.

सर्वोत्तम कला निर्देशन पुरस्कार

कृष्णमूर्ति

कला निर्देशक **कृष्णमूर्ति** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला निर्देशन का 1989 का पुरस्कार **कृष्णमूर्ति** को मलयालम फिल्म **ओरू वडक्कन वीरगाथा** में सभी बारीकियों पर पूरा ध्यान देते हुए केरल में बीते हुए युग के यथार्थ को पुनर्जीवित करके फ़िल्म की सौन्दर्य चेतना को उजागर करने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Art Direction

KRISHNAMOORTHY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Art Director, KRISHNAMOORTHY.

Citation

The Award for the Best Art Direction of 1989 is given to KRISHNAMOORTHY for his work in the Malayalam film ORU VADAKKAN VEERAGADHA for adding to the aesthetic value of the film as a whole by carefully recreating the essence of the reality of a bygone era in Kerala with minute attention to details of props and decor.

कृष्णमूर्ति हिन्दी, तेलुगु और मलयालम की अनेक फिल्मों में कला निर्देशक और वेशभूषाकार के रूप में काम कर चुके हैं। उन्हें **वैशाली** फिल्म में राज्य स्तर का पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्होंने भारत तथा अन्य देशों में कई फोटो प्रदर्शनियां आयोजित की हैं और उन्हें कई पुरस्कारों से पुरस्कृत किया जा चुका है।

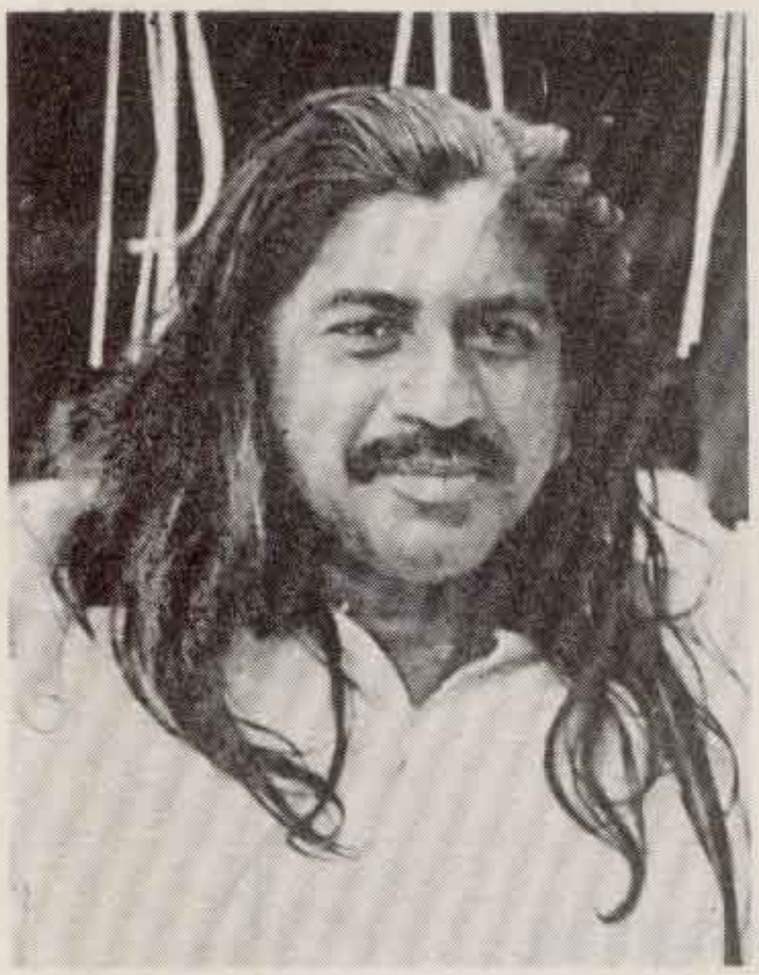

KRISHNAMOORTHY has worked as an Art Director and Costume Designer in many Hindi, Telugu and Malayalam films. His work in the film VAISALI earned him a State Award. At present he lives in Madras. He has also organized many photographic exhibitions in India and overseas and received a number of awards.

सर्वोत्तम वेशभूषा पुरस्कार

कृष्णमूर्ति

वेशभूषाकार **कृष्णमूर्ति** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वेशभूषा का 1989 का पुरस्कार **कृष्णमूर्ति** को मलयालम फ़िल्म **ओरू वडक्कन वीरगाथा** में बीते हुए युग की वेशभूषा उत्तम ढंग से तैयार करने, अतीत के जीवन के यथार्थ को अभूतपूर्व ढंग से पुनर्जीवित करने तथा व्यापक ज्ञान और कलात्मक कुशलता का परिचय देने के लिए प्रदान किया गया है।

Award for the Best Costume Designing

KRISHNAMOORTHY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Costume Designer, KRISHNAMOORTHY.

Citation

The Award for the Best Costume Designing of 1989 is given to KRISHNAMOORTHY for his work in the Malayalam film ORU VADAKKAN VEERAGADHA for his intimate knowledge, artistic competence and the brilliant execution of the costumes of a bygone era, recreating the reality of life in the past as few films have done.

कृष्णमूर्ति हिन्दी, तेलुगु और मलयालम की अनेक फिल्मों में कला निर्देशक और वेशभूषाकार के रूप में काम कर चुके हैं। उन्हें **वैशाली** फिल्म में राज्य स्तर का पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्होंने भारत तथा अन्य देशों में कई फोटो प्रदर्शनियां आयोजित की हैं और उन्हें कई पुरस्कारों से पुरस्कृत किया जा चुका है।

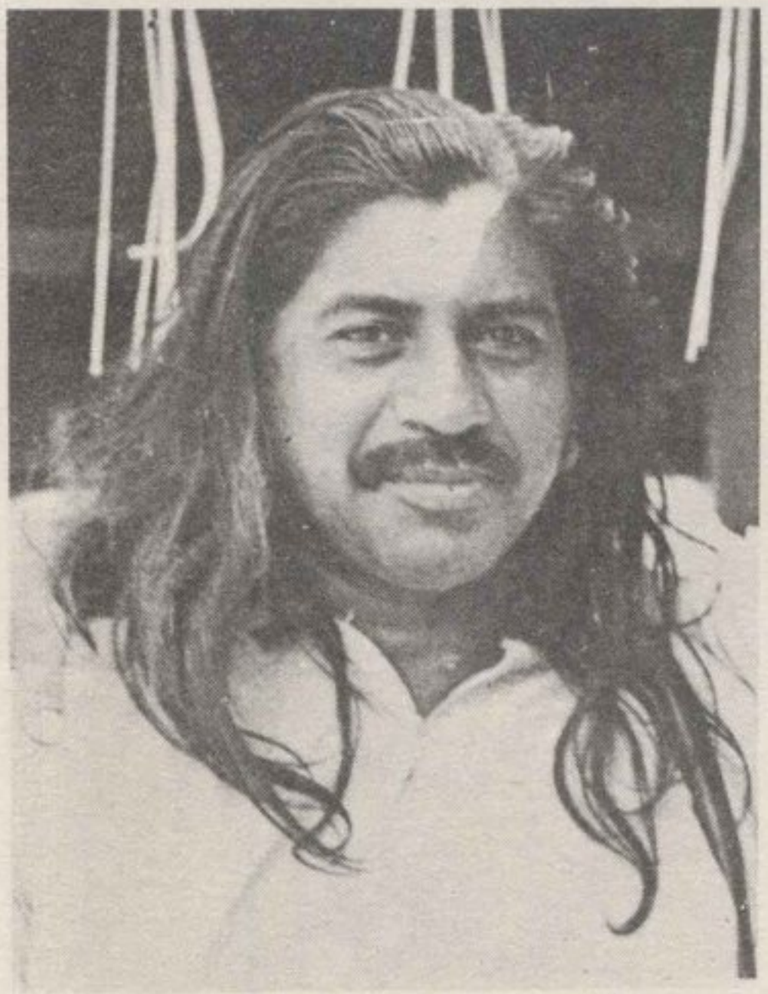

KRISHNAMOORTHY has worked as an Art Director and Costume Designer in many Hindi, Telugu and Malayalam films. His work in the film VAISALI earned him a State Award. At present he lives in Madras. He has also organized many photographic exhibitions in India and overseas and received a number of awards.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

शेर चौधरी

संगीतकार **शेर चौधरी** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का 1989 का पुरस्कार **शेर चौधरी** को करबी फ़िल्म **वोसोबिपो** में अद्‌भुत संगीत रचना के माध्यम से असम के अन्दरूनी क्षेत्रों के जनजीवन को चित्रित करने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Music Direction

SHER CHOUDHURY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Music Director, SHER CHOUDHURY.

Citation

The Award for the Best Music Direction of 1989 is given to SHER CHOUDHURY for his work in the Karbi film WOSOBIPO, depicting life in interior Assam with a unique background score.

शेर चौधरी इस समय शिलांग में केन्द्र सरकार के महालेखापाल के दफ़्तर में नौकरी करते हैं। उन्होंने 1963 में गोहाटी विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। संगीत नाटक और चित्रकला में रुचि के कारण वे उत्तर पूर्व भारत के अनेक सांस्कृतिक संगठनों से जुड़े रहे हैं। उन्होंने भारतीय और पाश्चात्य दोनों संगीत शैलियों में प्रशिक्षण लिया है और वे कई प्रकार के वाद्य यंत्र बजा लेते हैं। उनकी पहली फिल्म **प्रथम रागिनी** (असमिया) थी, जिसमें उन्होंने सहायक निर्देशक के साथ-साथ संगीत निर्देशक के रूप में काम किया और उन्हें 1987-88 वर्ष के लिए ईस्टर्न इंडिया मोशन पिक्चर एसोसिएशन द्वारा सर्वोत्तम संगीत निर्देशक का पुरस्कार दिया गया। 1987 से वे निर्देशक गौतम बोरा के मुख्य सहायक और संगीत निर्देशक के रूप में काम कर रहे हैं।

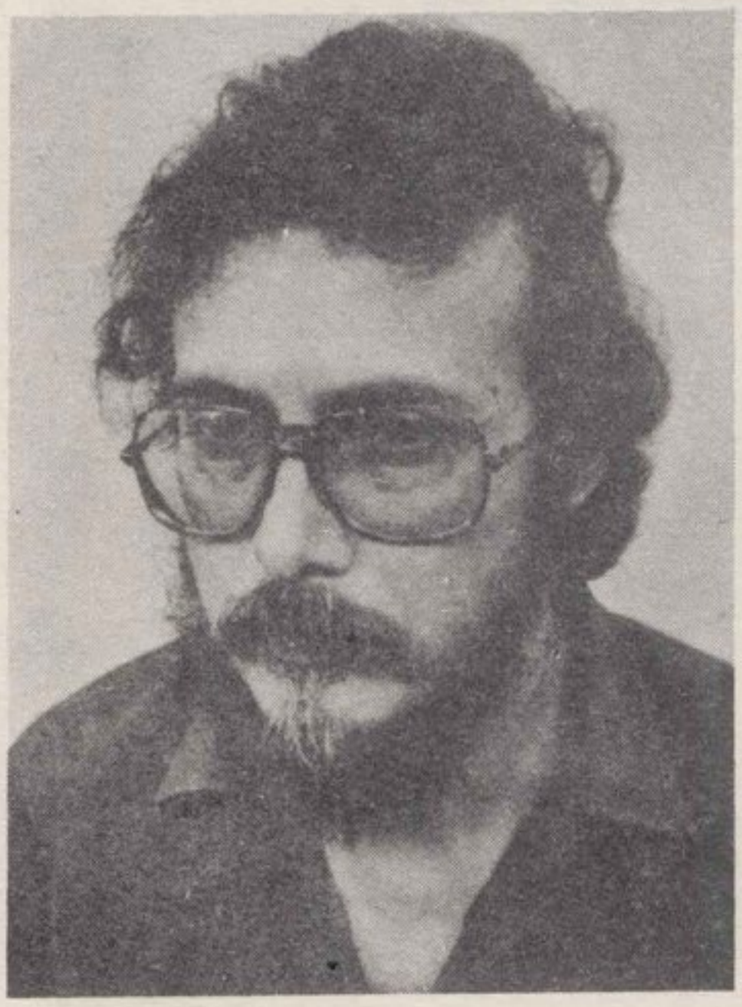

SHER CHOUDHURY graduated from Guwahati University in 1963 and is at present working in the Central Government Accountant General's Office in Shillong. With his keen interest in painting, music and drama, he has been closely associated with various cultural and dramatic groups in north-east India. His early training in music covered both western and Indian classical forms and he plays a variety of musical instruments. His entry into films was with PRATHAM RAGINI (Assamese), in which he worked as both Assistant Director and Music Director, and went on to receive the Best Music Director Award for 1987-88 from the Eastern India Motion Picture Association. From 1987 he has been working with director Gautam Bora as Chief Assistant and Music Director.

सर्वोत्तम गीतकार पुरस्कार

शतरूपा सान्याल

गीतकार **शतरूपा सान्याल** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गीतकार का 1989 का पुरस्कार **शतरूपा सान्याल** को बंगला फ़िल्म **छन्दनीड़** के सभी गीतों में अद्‌भुत काव्यात्मक ऊंचाइयों को छूने के लिए प्रदान किया गया है।

Award for the Best Lyrics

SATARUPA SANYAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Lyricist, SATARUPA SANYAL.

Citation

The Award for the Best Lyrics of 1989 is given to SATARUPA SANYAL for the rare poetic heights reached in all the lyrics for the Bengali film CHHANDANEER.

शतरूपा सान्याल ने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा उस्ताद यामिनी गांगुली और श्रीकान्त बाक्रे से प्राप्त की। आकाशवाणी के कलकत्ता केन्द्र पर नियमित रूप से गाती हैं और 1986 से उत्पलेन्दु चक्रवर्ती के साथ संगीत निर्देशक तथा पटकथा लेखक के रूप में काम कर रही हैं। उनकी कई कवितायें बंगला पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। **छन्दनीड़** फिल्म के सभी गीत उन्होंने ही लिखे हैं और वे काफी लोकप्रिय हुए हैं।

SATARUPA SANYAL received her training in classical music from Ustad Jamini Ganguly and Sreekant Bakrey. She sings regularly on All India Radio, Calcutta, and has been working as music director and screenplay writer for Utpalendu Chakraborty since 1986. Many of her poems have been published in Bengali magazines and she wrote all the lyrics in Chakraborty's CHHANDANEER whose musical score has been highly appreciated by the audience as well as by the critics.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

अमिताभ चक्रवर्ती

निर्देशक **अमिताभ चक्रवर्ती** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

1989 का विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार निर्देशक **अमिताभ चक्रवर्ती** को बंगला फिल्म **काल अभिरती** के लिए दिया गया है। उन्होंने यह प्रयोगात्मक फ़िल्म का निर्माण करके साहस और विचार-निष्ठा का परिचय दिया है जिससे फ़िल्म निर्माण के क्षेत्र में नये आयाम खुल सकते हैं।

Special Jury Award

AMITABH CHAKRABORTY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, AMITABH CHAKRABORTY.

Citation

The Special Jury Award for 1989 is given to the Director AMITABH CHAKRABORTY for his work in the Bengali film KAAL ABHIRATI for having had the courage of his convictions in making this experimental film which sets out to explore new horizons in the realm of film making.

अमिताभ चक्रवर्ती ने 1985 में भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान से फिल्म संपादन में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद के दो वर्षों में इन्होंने बम्बई, कलकत्ता और मद्रास में कई विज्ञापन तथा लघु फिल्मों का संपादन किया। 1987 में वे कलकत्ता में रहने लगे जहाँ उन्होंने वृत्तचित्रों के लिए काम किया। इनमें अंडमान द्वीप समूह के बारे में भी एक फिल्म बनाई जिसके वे सम्पादक के साथ-साथ सहायक निर्देशक भी थे। **काल अभिरती** उनकी पहली फिल्म है।

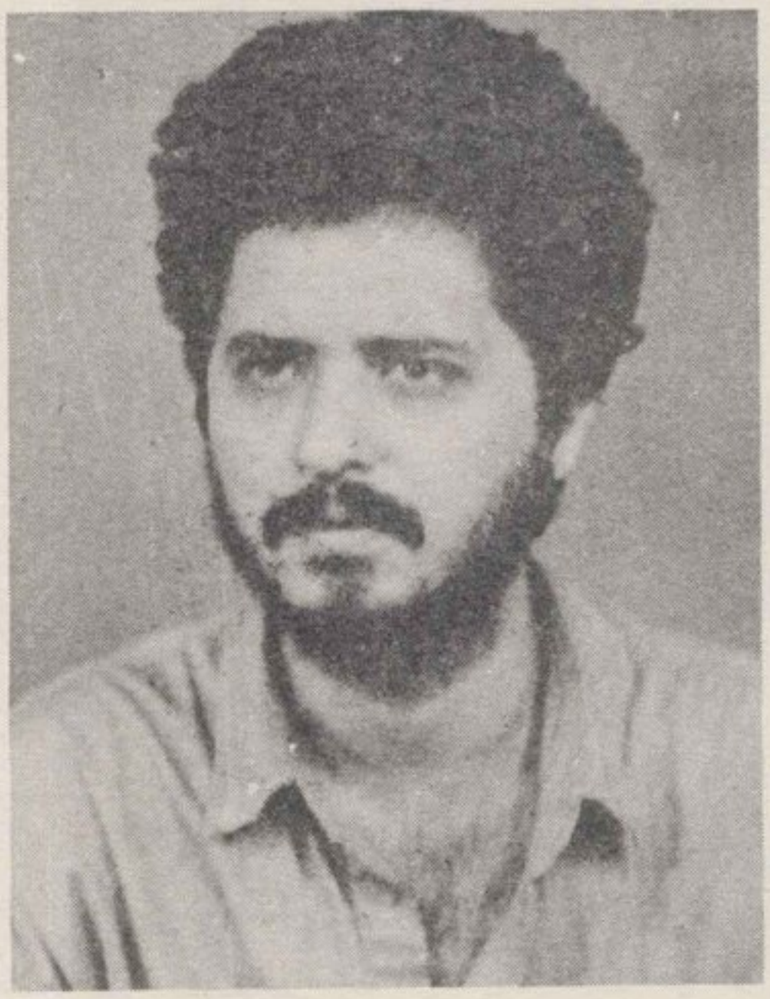

AMITABH CHAKRABORTY graduated in 1985 from the Film and Television Institute of India, specializing in film editing. For the next two years he worked in Bombay, Calcutta and Madras, editing a number of advertisement and short films. In 1987 he moved to Calcutta where he also got involved in several documentary films, including one on the Andaman islands, of which he was the associate director and editor. KAAL ABHIRATI is his first feature film as a director.

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र पुरस्कार

गणशत्रु

निर्माता मैसर्स **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **सत्यजीत राय** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार **गणशत्रु** को इबसेन की पुस्तक **ऐन एनीमी ऑफ दि पीपल** को कुशलता पूर्वक रूपान्तरित करने तथा हाल के पुनरुत्थानवाद के खतरों पर प्रकाश डालने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Feature Film in Bengali

GANASHATRU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer, M/s National Film Development Corporation Ltd.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Satyajit Ray.

Citation

The Award for the Best Feature Film in Bengali for 1989 is given to GANASHATRU for its brilliant adaptation of Ibsen's "An Enemy of the People" to highlight the dangers of current revivalism.

सत्यजीत राय बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। फिल्म निर्माण के अलावा चित्रकला, संगीत, कहानी और उपन्यास लेखन, विज्ञान लेखन तथा अन्य अनेक कलाओं में पारंगत हैं। उन्होंने 1955 में अपनी पहली फिल्म **पाथेर पांचाली** से भारतीय सिनेमा को एक नया मोड़ दिया। इस फिल्त में निर्देशक के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति भी मिली। फिल्म क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए उन्हें अनेक पुरस्कार मिले हैं। 1975 में ब्रिटिश फिल्म इंस्टिट्यूट ने उन्हें पिछले 50 वर्षों के सर्वश्रेष्ठ अंतर्राष्ट्रीय फिल्म निर्देशक के रूप में सम्मानित किया। 1979 में सत्यजीत राय को मास्को फिल्म समारोह में विश्व के 9 महानतम फिल्म निर्देशकों में से एक घोषित किया गया। जनवरी 1989 में फ्रांस के राष्ट्रपति मित्तरां ने कलकत्ता में एक विशेष समारोह में उन्हें फ्रांस के सर्वोच्च कला सम्मान से विभूषित किया।

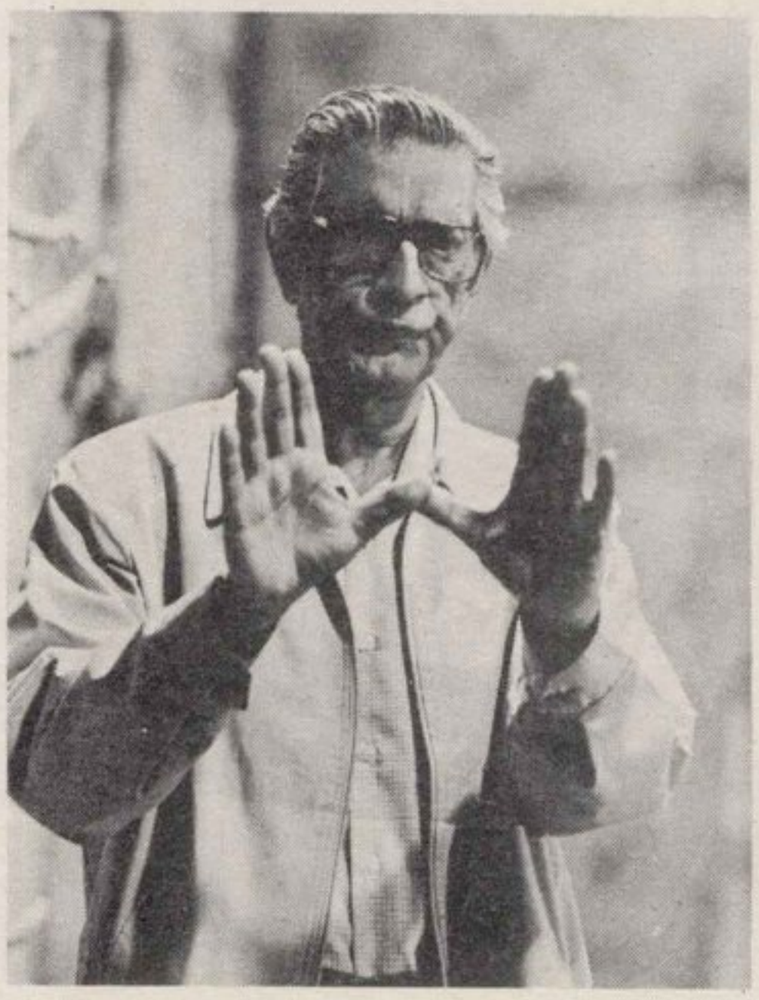

SATYAJIT RAY was born in a well-known Calcutta family of cultural pioneers. His own talents are many and varied and range from painting, illustration, typography, music, to writing stories, novels and science fiction and of course making films. His first film, PATHER PANCHALI, released in 1955, created history in Indian cinema and established him as a director of international repute. Throughout his career Ray has received innumerable awards and official recognition of his talent and contribution to world cinema. In 1975 he was honoured by the British Film Institute as "the most distinguished international film director in the last half century". In 1979 in the Moscow Film Festival, Ray was acclaimed as "one of the nine greatest film makers of all time". And in January 1989 President Francois Mitterand of France presented him with the Legion d'Honneur in a special ceremony in Calcutta.

सर्वोत्तम गुजराती कथाचित्र पुरस्कार

परसी

निर्माता **मैसर्स राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम लिमिटेड** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **परवेज़ मेरवानजी** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गुजराती कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार **परसी** को एक सीमित पारिवारिक संस्कृति की मानसिक आशंकाओं और स्थान छोड़ने के भय को यथार्थवाद शैली में चित्रित करने के लिए प्रदान किया गया है।

Award for the Best Feature Film in Gujarati

PERCY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer, M/s National Film Development Corporation Ltd.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Pervez Merwanji.

Citation

The Award for the Best Feature Film in Gujarati for 1989 is given to PERCY for its searing exploration of the neuroses and the claustrophobic embrace of an ingrown familial culture.

परवेज़ मेरवानजी ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान से फिल्म सम्पादन में डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद वृत्तचित्रों के छायाकार, सम्पादक और निर्देशक के रूप में कार्य किया। 1975 में उन्होंने कन्नड़ निर्देशक पट्टाभिरामा रेड्डी के साथ उनकी फिल्म **चन्द्रमारुता** में काम किया। अगले 5 वर्षों तक उन्होंने बड़ी संख्या में वृत्तचित्र तथा लोकप्रिय विज्ञान फिल्में बनाई। 1980 में उन्होंने वज्र फिल्म्स नाम से अपनी फिल्म कम्पनी शुरू की। 1987 में उन्होंने वन्य जीवन संरक्षण के बारे में एक दूरदर्शन धारावाहिक के पांच भागों का निर्देशन किया।

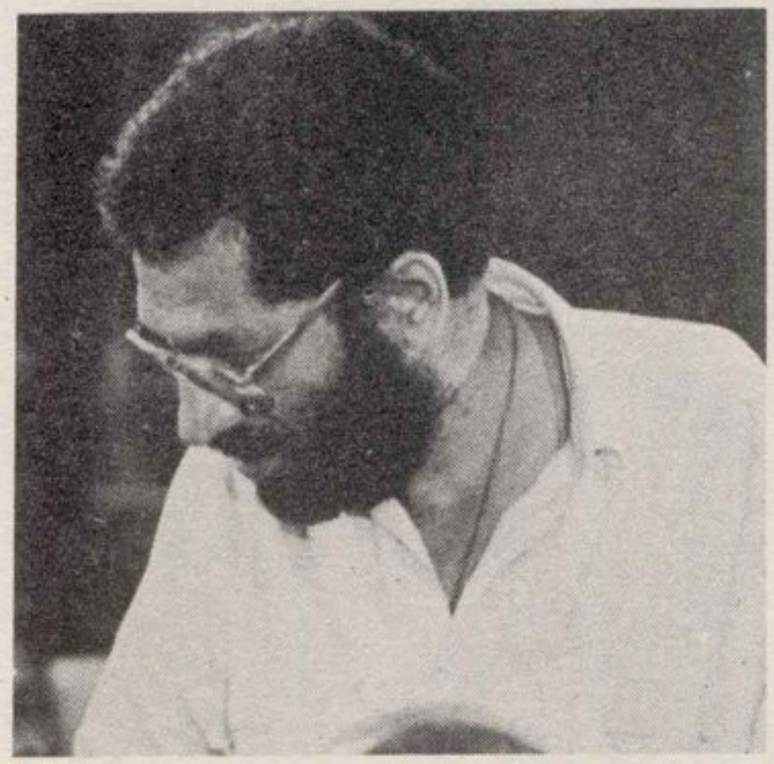

PERVEZ MERWANJI studied sociology and anthropology in St. Xavier's College, Bombay, before joining the Film and Television Institute of India. After receiving a diploma in film editing, he worked as photographer, editor and director of documentary films. He worked with Kannada director Pattabi Rama Reddy on his production CHANDRAMARUTHA in 1975. The next five years were spent with TVNF, where he made a large number of documentary and popular science films. In 1980 he founded his own production company, Vajra Films. He has also directed five episodes of a television serial on wild life and conservation in 1987.

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र पुरस्कार

सलीम लंगड़े पे मत रो

निर्माता **मैसर्स राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम लिमिटेड** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **सईद अख़तर मिर्ज़ा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार **सलीम लंगड़े पर मत रो** को दिया गया है जिसमें शहरी जीवन में अपराध तथा धार्मिक पुनरुत्थानवाद के बीच मिली-भगत को नये ढंग से उजागर किया गया है।

Award for the Best Feature Film in Hindi

SALIM LANGDE PE MAT RO

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer, M/s National Film Development Corporation Ltd.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Saeed Akhtar Mirza.

Citation

The Award for the Best Feature Film in Hindi for 1989 is given to SALIM LANGDE PE MAT RO for its novel examination of the nexus between urban lumpen life, crime and religious revivalism.

सईद अख्तर मिर्ज़ा भारत में नव सिनेमा आन्दोलन के एक प्रमुख प्रवक्ता माने जाते हैं। 8 वर्ष तक विज्ञापन जगत में काम करने के बाद वे सिनेमा क्षेत्र में सक्रिय हुए। 1976 में उन्होंने फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान से डिप्लोमा प्राप्त किया। 1978 में उन्होंने अपनी पहली फिल्म **अरविन्द देसाई की अजीब दास्तान** बनाई। 1980 में उन्होंने **अल्बर्ट पिन्टो को गुस्सा क्यों आता है?** और 1984 में **मोहन जोशी हाजिर हो** का निर्माण किया। उनकी सभी फिल्मों में सामाजिक सन्देश निहित है। उन्होंने अत्यन्त सफल और लोकप्रिय दूरदर्शन धारावाहिक **नुक्कड़** और **इंतजार** का भी निर्माण किया है।

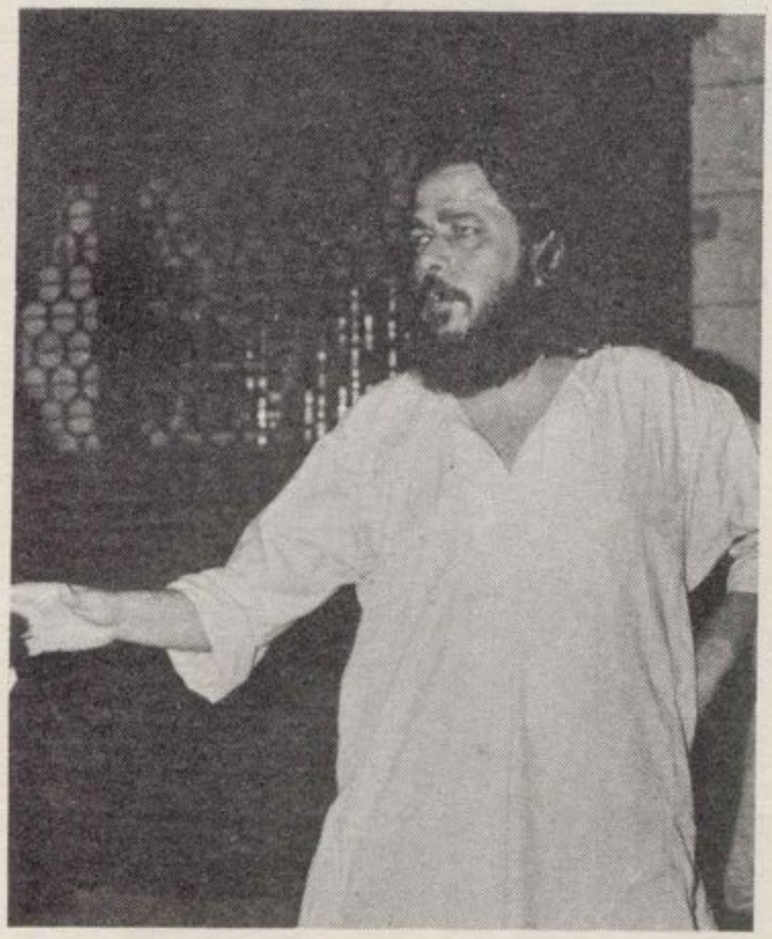

SAEED AKHTAR MIRZA is one of the most vociferous spokesmen of the New Cinema Movement in India. After spending eight years in advertising, he shifted to the cinema, graduating from the Film and Television Institute of India in 1976. His first film made in 1978 was ARVIND DESAI KI AJEEB DAASTAN, to be followed by ALBERT PINTO KO GUSSA KYON ATA HAI? in 1980 and MOHAN JOSHI HAZIR HO in 1984. All his films display his strong social commitment, as do his highly successful television serials, NUKKAD and INTEZAAR.

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र पुरस्कार

माने

निर्माता **मैसर्स अपूर्व चित्र** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **गिरीश कासरवल्ली** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार **माने** को भ्रष्ट सामाजिक ढांचे में नैतिक औचित्य तथा सुरक्षा की शहरी मध्यम वर्ग की तलाश में विद्यमान अन्तर्विरोधों और विसंगतियों को प्रकट करने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Feature Film in Kannada

MANE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer, M/s Apoorva Chitra.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Girish Kasaravalli.

Citation

The Award for the Best Feature Film in Kannada for 1989 is given to MANE for setting out the contradictions in the urban middle class search, both for moral legitimacy and security, in a corrupt social structure.

गिरीश कासरवल्ली ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया और उनकी डिप्लोमा फिल्म **अवशेष** को 1976 में सर्वोत्तम प्रयोगात्मक लघु फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्होंने अपनी डिप्लोमा पटकथा के आधार पर अपनी पहली फिल्म **घटश्राद्ध** का निर्माण किया जिसे 1977 में स्वर्ण कमल प्रदान किया गया और इस फिल्म को देश में नव सिनेमा आंदोलन की एक श्रेष्ठ फिल्म के रूप में मान्यता मिली। कासरवल्ली की फिल्म **आक्रमण** (1980) और **मूरुदारीगलु** (1981) को कई राज्य पुरस्कार मिले। 1986 में उन्होंने **तबर्णा कथे** फिल्म बनाई जिसके लिए उन्हें स्वर्ण कमल तथा अभिनेता चारूहासन को सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार मिला। 1988 में बनी फिल्म **बन्नडा वेशा** को सर्वोत्तम कन्नड़ फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

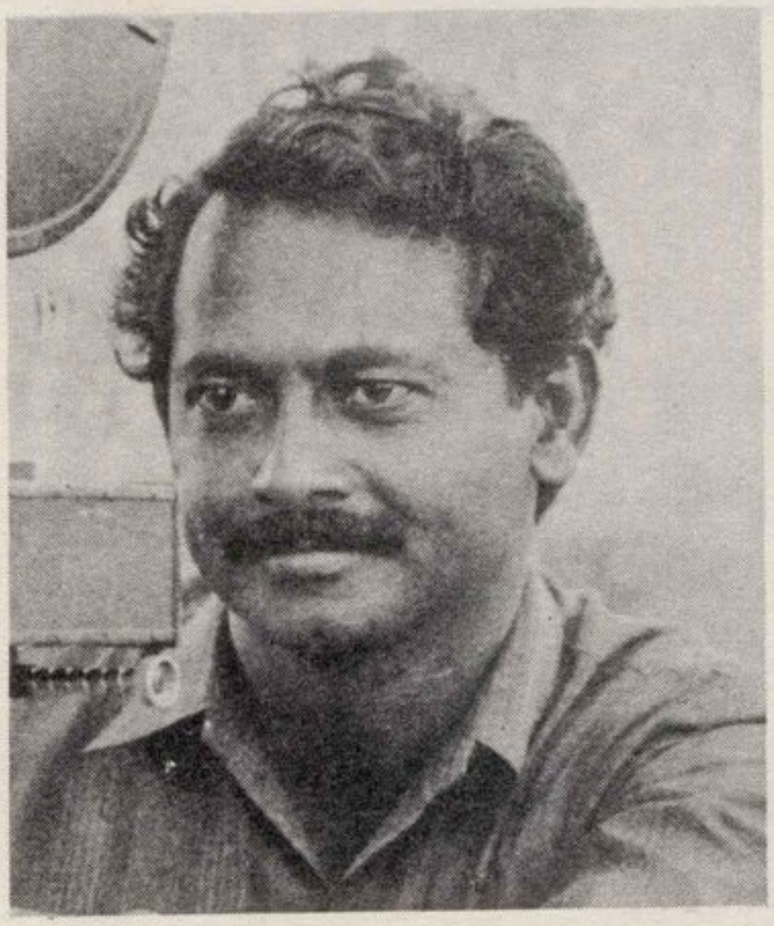

GIRISH KASARAVALLI completed the course in film direction from the Film and Television Institute of India and AVASHESH, his diploma film, won the Silver Medal as the Best Experimental Short Film in the 1976 National Awards. His diploma script, not approved by the Film Institute Jury, later became the basis for his first feature film GHATASHRADDHA which won the President's Golden Lotus Award in 1977 and came to be accepted as one of the outstanding films of the New Cinema Movement in the country. Kasaravalli's AKRAMANA (1980) and MOORU DARIGALU (1981) bagged a number of State awards. After a long gap he made TABARANA KATHE in 1986 which won him the Golden Lotus once again and brought to his actor Charuhasan the Best Actor Award. The film also won seven Karnataka State awards. BANNADA VESHA, made in 1988, also received an award for the Best Feature Film in Kannada at the National Awards.

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र पुरस्कार

मथिलुकल

निर्माता **अडूर गोलाकृष्णन्** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **अडूर गोपालकृष्णन्** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार **मथिलुकल** को दिया गया है, जिसमें जेल में कैद एक लेखक के बन्धन की पीड़ा, मौत के भय तथा प्रेम की भ्रामक वास्तविकता के बीच झूलते मन का सुन्दर ढंग से चित्रण किया गया है।

Award for the Best Feature Film in Malayalam

MATHILUKAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer, Adoor Gopalakrishnan.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Adoor Gopalakrishnan.

Citation

The Award for the Best Feature Film in Malayalam for 1989 is given to MATHILUKAL for its remarkable creation of an imprisoned writer's mind hovering between the pain of confinement, existential apprehension of death and the hallucinatory "reality" of sensual love.

अडूर गोपालकृष्णन का जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ, जहाँ कथकली परम्परा कई पीढ़ियों से प्रचलित है। वे प्रारम्भ से ही नाटकों से जुड़े रहे और उन्होंने अभिनेता, नाटककार तथा मंच निर्देशक के रूप में काम किया। 1965 में भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से पटकथा लेखन और निर्देशन की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने केरल में चित्रलेखा फिल्म सोसाईटी का निर्माण करके राज्य में सहकारी फिल्म आंदोलन का श्रीगणेश किया तथा कला फिल्मों के निर्माण, वितरण और प्रदर्शन की दिशा में देश का पहला सहकारी प्रयास भी किया। उन्होंने 6 कथाचित्रों का निर्देशन किया है तथा कई लघु फिल्में और वृत्त चित्र बनाये हैं। उनकी कई फिल्मों को पुरस्कार मिले हैं और वे विश्व भर में भारत के सर्वाधिक कुशल निर्देशकों में गिने जाते हैं।

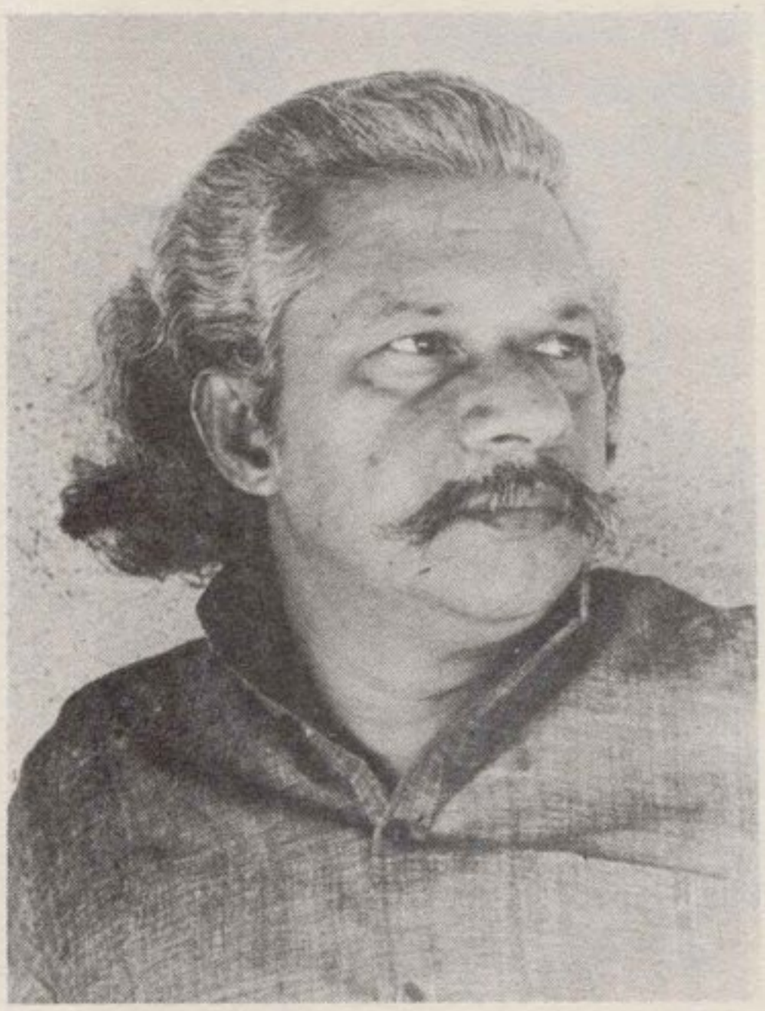

ADOOR GOPALAKRISHNAN was born in a family which traditionally patronized and practised Kathakali. He grew up in close association with the stage as actor, playwright and stage director. Graduating in script-writing and direction from the Film and Television Institute of India in 1965, Gopalakrishnan pioneered the film society movement in Kerala by starting the Chitralekha Film Society and India's first cooperative for the production, distribution and exhibition of artistic films. He has written and directed six feature films and many short films and documentaries. His ELIPPATHAYAM won the BFI Award and his MUKHAMUKHAM and ANANTARAM won the FIPRESCI prizes. Highly acclaimed by critics the world over, Gopalakrishnan is today considered one of the most important directors from India.

सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र पुरस्कार

कलत नाकलत

निर्माता **स्मिता तलवालकर** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **कंचन नायक** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार **कलत नाकलत** को पत्नी, प्रेमिका और बच्चों के प्रति प्रेम के विविध रूपों से उत्पन्न तनावों को बारीकी के साथ प्रस्तुत करने तथा परिवार को टूटने से बचाने के प्रयास में इन तनावों को हल करने की प्रक्रिया का कुशलता पूर्वक चित्रण करने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Feature Film in Marathi

KALAT NAKALAT

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer, Smita Talwalkar.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Kanchan Nayak.

Citation

The Award for the Best Feature Film in Marathi for 1989 is given to KALAT NAKALAT for its delicate description of the tensions of love in various facets—wife, mistress and children—and the resolution of tensions in favour of keeping a family together.

स्मिता तलवालकर बम्बई दूरदर्शन की समाचार वाचिका हैं। उन्होंने 1983 में मराठी नाटकों में अभिनय शुरू किया और अब तक वे 4 नाटकों, 5 फिल्मों और 6 मराठी टेलीविजन धारावाहिकों में काम कर चुकी है। उन्हें मराठी नाटक **तू फाक्ता हो म्हेन** में अभिनय के लिए नाट्य दर्पण पुरस्कार दिया गया। 1989 में उन्होंने अपनी फिल्म कम्पनी अस्मिता चित्र शुरू की। **कलत-नाकलत** इस कम्पनी द्वारा बनाई गई पहली फिल्म है और इसे 4 महीनों में तैयार किया गया।

कंचन नायक 1972 से मराठी फिल्म उद्योग में सक्रिय हैं। वे राजदत्त और जब्बार पटेल जैसे निर्देशकों द्वारा बनाई गई अनेक पुरस्कृत फिल्मों के सहायक निर्देशक रहे। इनमें **भालू, आरे संसार संसार, सर्जा, सिंहासन** और **उम्बर्था** शामिल हैं। उन्होंने सतीश आलेकर को हिन्दी दूरदर्शन धारावाहिक **देखो मगर प्यार से** के निर्देशन में सहयोग दिया और जयन्त दलवी के नाटक पर आधारित मराठी टेलीविजन धारावाहिक **आवाहन** की पटकथा और संवाद लिखे। उन्होंने जब्बार पटेल के साथ मिलकर महाराष्ट्र सरकार और फिल्म प्रभाग के लिए कई वृत्तचित्र भी बनाये। **कलत-नाकलत** निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म है।

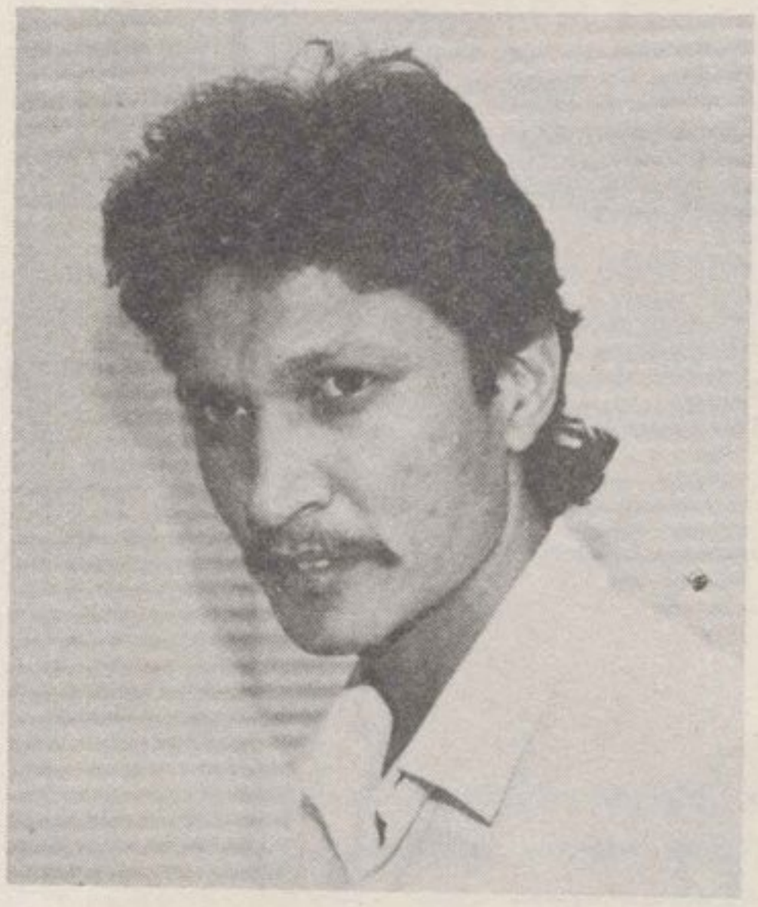

SMITA A. TALWALKAR is a newsreader at the Bombay Doordarshan Kendra. She began acting on the Marathi stage in 1983 and since then has acted in four Marathi plays, five Marathi feature films and six Marathi television serials. She has also won the Natya Darpan Award for her performance in a Marathi play, "Tu Fakta Ho Mhan". In 1989 she started her own production company, Asmita Chitra. KALAT NAKALAT, made in a record time of four months, is the first venture of this company.

KANCHAN PRABHAKAR NAYAK has been working in the Marathi film industry since 1972. He was assistant director of award-winning films made by reputed film makers such as Rajdutt (BHALU, ARE SANSAR SANSAR, SARJA), and Jabbar Patel (SIMHASAN, UMBARTHA). He also assisted Satish Alekar for his Hindi television serial, DEKHO MAGAR PYAR SE and wrote the script and dialogues for the Marathi television serial AVHAN based on a well-known play by Jaywant Dalvi. His association with director Jabbar Patel has led to his working on various documentary films made for the Maharashtra government and Films Division. KALAT NAKALAT is his first film as a director.

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र पुरस्कार

अन्ध दिगंत

निर्माता **मैसर्स वोक्स विजुअल्स प्रा.लि.** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **मनमोहन महापात्र** को रजत कमल और 10,000/-रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार **अन्ध दिगंत** को एक किसान के कष्टों का बेबाक चित्रण करने के लिए दिया गया है, जो अपनी आर्थिक दुर्दशा तथा अपनी पत्नी के पिछले जीवन के प्रति बुर्ज़ुवा दृष्टिकोण से मुक्ति पाने में असमर्थ है।

Award for the Best Feature Film in Oriya

ANDHA DIGANTA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer, M/s Vox Visuals Pvt. Ltd.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Manmohan Mahapatra.

Citation

The Award for the Best Feature Film in Oriya for 1989 is given to ANDHA DIGANTA for its unemotional description of the increasing misery of a peasant who discovers his inadequacy in fighting his economic servitude and his own bourgeois attitude towards his wife's past.

मनमोहन महापात्र ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान से डिप्लोमा प्राप्त किया है। उन्होंने 7 फिल्में बनाई हैं जिनमें से 6 को राष्ट्रीय पुरस्कार और एक फिल्म को 4 राज्य पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उनकी उल्लेखनीय फिल्में हैं **सीताराती, नीरब झाड़,** और **माझी पहाचा**। इस समय वे राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम की सहायता से बन रही फिल्म **अग्निवीणा** का निर्देशन कर रहे हैं।

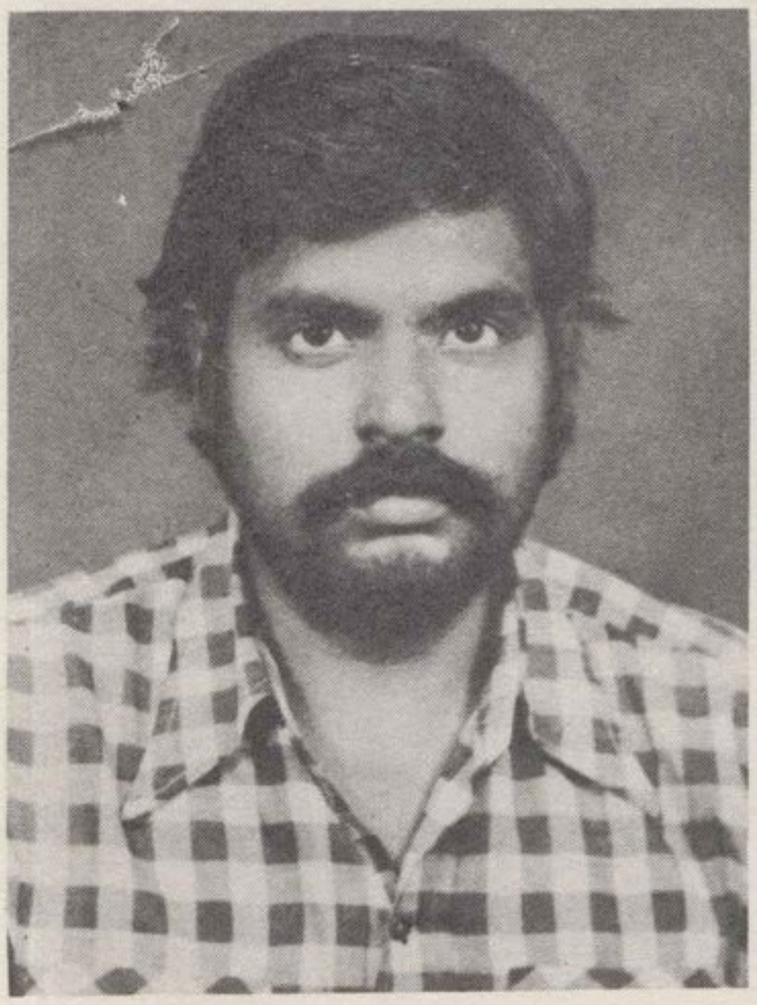

MANMOHAN MAHAPATRA received his diploma from the Film and Television Institute of India before launching into his film-making career. Six of his seven feature films have won National Awards, while one has received four major state awards. Notable among his films are SEETA RATI, NEERABA JHADA, and MAJHI PAHACHA. He is currently working on a film financed by the National Film Development Corporation, called AGNI VEENA.

सर्वोत्तम पंजाबी कथाचित्र पुरस्कार

मढ़ी दा दीवा

निर्माता **मैसर्स राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम लिमिटेड** और **दूरदर्शन महानिदेशालय** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **सुरिन्दर सिंह** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पंजाबी फिल्म का 1989 का पुरस्कार **मढ़ी दा दीवा** को सामन्तवाद से पूंजीवाद में परिवर्तन से जुड़ी पीड़ा और दुख के चित्रण के लिए दिया गया है। इसमें यह भी दिखाया गया है कि इस परिवर्तन से दोस्ती और प्रेम जैसे मानवीय सम्बन्ध बिखरने लगते हैं।

Award for the Best Feature Film in Punjabi

MARHI DA DEEVA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer, M/s National Film Development Corporation Ltd. and Doordarshan.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Surinder Singh.

Citation

The Award for the Best Feature Film in Punjabi for 1989 is given to MARHI DA DEEVA for its depiction of the pain and tragedy involved in the transformation of feudalism into capitalism, which entails destruction and degradation of normal human relationships like friendship and love.

सुरिन्दर सिंह ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान से डिप्लोमा प्राप्त किया है। उन्होंने अपना फिल्मी जीवन वृतचित्रों के निर्माण से शुरू किया। लेकिन कुछ समय बाद वे फीचर फिल्में बनाने लगे। उन्होंने अनेक पंजाबी फिल्मों का निर्माण किया, किन्तु वे लोकप्रिय सिनेमा के परम्परागत ढाँचे के अनुरूप नहीं थीं। इनमें **साल सोलवां चढ़या** और **मुटियार** उल्लेखनीय हैं। उन्होंने विभिन्न विषयों पर वृत्तचित्र और लघु फिल्में भी तैयार की हैं। उन्होंने दूरदर्शन कार्यक्रमों के लिए पटकथायें भी लिखी हैं। **मढ़ी दा दीवा** की पटकथा को 1986 में राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम की ओर से दूसरा पुरस्कार दिया गया था।

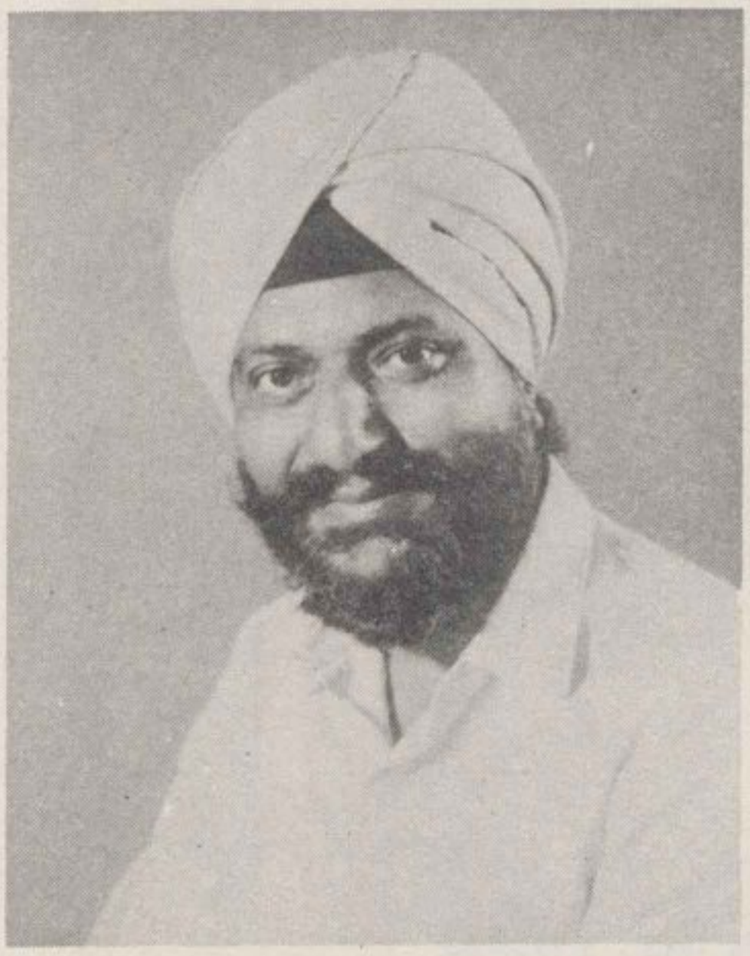

SURINDER SINGH graduated in direction from the Film and Television Institute of India and began his career making documentary films. He soon shifted to feature film direction and made a number of films in Punjabi, films which did not conform to the conventional framework of popular cinema. Among them are SAAL SOLVA CHADIYA and MUTIYAR. Singh has also made a number of documentaries and short films on a variety of subjects besides writing scripts for Doordarshan productions. The script of MARHI DA DEEVA was awarded second prize in the NFDC Script Awards in 1986.

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र पुरस्कार

पुदिया पादई

निर्माता **ए. सुन्दरम्** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **आर. पार्थिबन** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार **पुदिया पादई** को एक महिला के साहस और समर्पण से उसके पति के जीवन में आने वाले परिवर्तन का चित्रण करने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Feature Film in Tamil

PUDHEA PADHAI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer, A. Sundaram.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, R. Parthiban.

Citation

The Award for the Best Feature Film in Tamil for 1989 is given to PUDHEA PADHAI for its depiction of the transforming effects of a woman's courage and devotion on her husband.

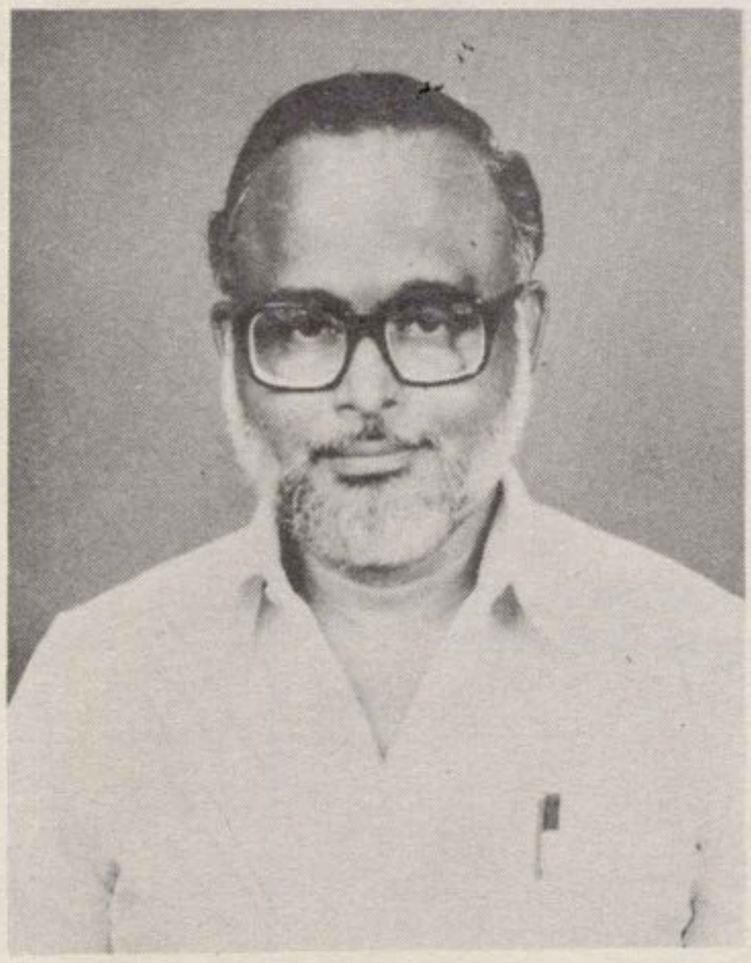

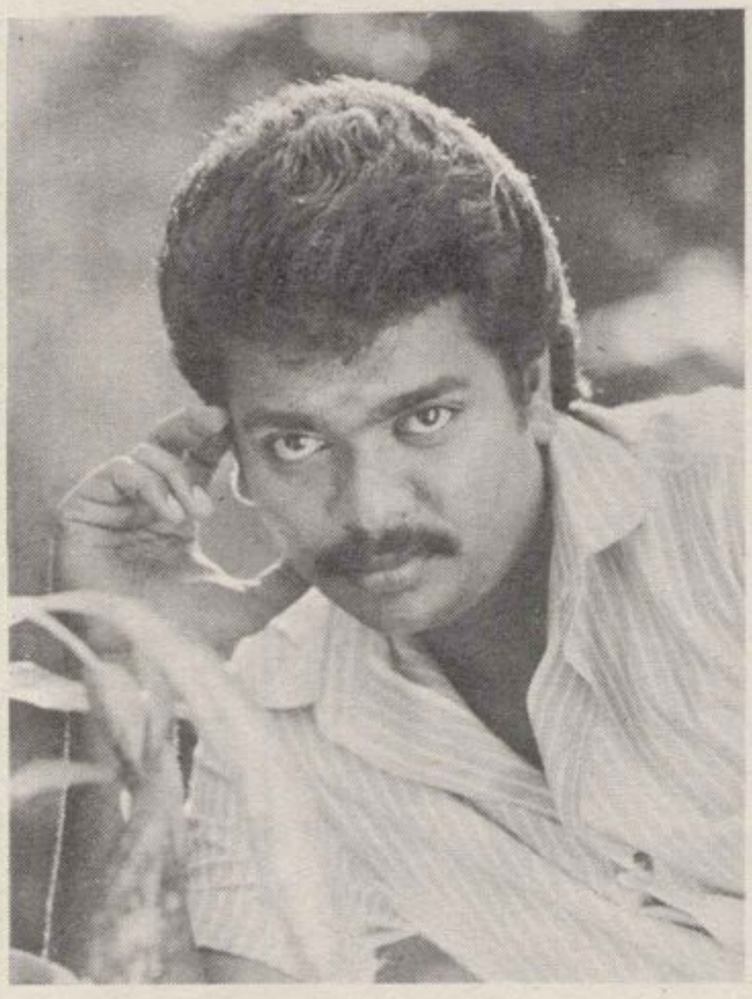

ए. सुन्दरम् अपनी फिल्म वितरण कम्पनी विवेक चित्र के माध्यम से कई वर्षों से एक सफल फिल्म वितरक के रूप में काम कर रहे हैं। **पुदिया पादई** निर्माता के रूप में उनकी पहली फिल्म है। यह फिल्म काफी लोकप्रिय हुई है और अब तेलुगु, कन्नड़ तथा हिन्दी में इसका पुनर्निमाण किया जा रहा है।

आर. पार्थिबन तमिल फिल्मों के प्रसिद्ध निर्देशक के. भाग्यराज के निकट सम्पर्क में रहे हैं। पटकथा लेखक और निर्देशक के रूप में **पुदिया पादई** उनकी पहली फिल्म है। उन्होंने इस फिल्म के नायक की भूमिका भी स्वयं की है। इस फिल्म की सफलता के बाद पार्थिबन दक्षिण भारत में लोकप्रिय अभिनेता-निर्देशक के रूप में प्रसिद्ध हो गये हैं।

A. SUNDARAM has been a successful film distributor for many years and runs his own company, Vivek Chitra. PUDHEA PADHAI is his first venture as a producer. The film, which celebrated its Silver Jubilee, is now being remade in Telugu, Kannada and Hindi.

R. PARTHIBAN has been closely associated with K. Bhagyaraj the famous Tamil director. PUDHEA PADHAI is his first venture as a script-writer and director. He has also acted in the lead role of the film whose success has made him one of the much sought-after actor-directors in the region.

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र पुरस्कार

सूत्र धारुलू

निर्माता **ए. सुधाकर रेड्डी** और **सी. करुणाकर राव** को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **के. विश्वनाथ** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार **सूत्र धारुलू** को प्रदान किया गया है, जिसमें आध्यात्मिक सद्‌भाव और शान्ति के द्वारा सामाजिक शोषण पर विजय का सुन्दर ढंग से चित्रण किया गया है।

Award for the Best Feature Film in Telugu

SUTHRA DHAARULU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producers, A. Sudhakar Reddy and C. Karunakar Rao.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, K. Vishwanath.

Citation

The Award for the Best Feature Film in Telugu for 1989 is given to SUTHRA DHAARULU for the way it charts the conquest of social oppression by spiritual understanding and peace.

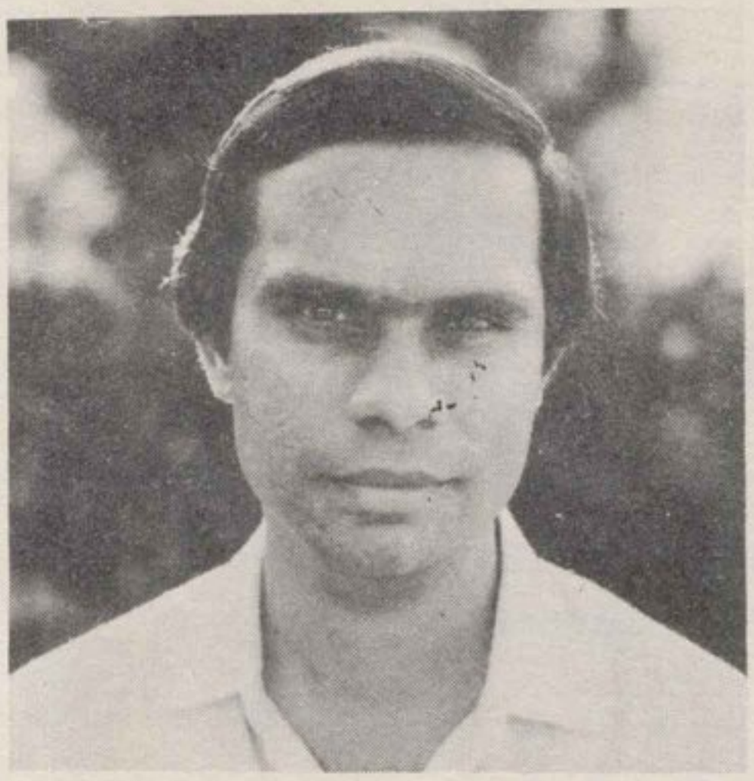

ए. सुधाकर रेड्डी वाणिज्य स्नातक हैं और उद्योगपति हैं। वे कलाओं के संरक्षक के रूप में प्रसिद्ध हैं तथा तेलुगु में आदर्श विषयों पर फिल्में तैयार करने के लिए गठित संस्था सुदर्शन सिने एन्टरप्राइसिस के संस्थापकों में से एक हैं।

सी. करुणाकर राव कानून के स्नातक हैं। प्रसिद्ध अभिनेत्री और फिल्म निर्माता लक्ष्मी राज्यम् के माध्यम से फिल्मों की ओर आकर्षित हुए। वे भी सुदर्शन सिने एन्टरप्राइसिस के संस्थापकों में से एक हैं।

के. विश्वनाथ साहसिक विषयों पर फिल्म बनाने के लिए विख्यात हैं। उन्होंने अपना फिल्मी जीवन ध्वनि इंजीनियर के रूप में शुरू किया। 1965 में उन्होंने अपनी पहली फिल्म **आत्मागौरवम्** का निर्देशन किया। इसके लिए उन्हें राज्य पुरस्कार मिला। इसके बाद उन्होंने **कलम मारिनडी, चेल्लेली कापुरम, शारदा, वो सीता कथा** तथा **जीवन ज्योति** फिल्में बनायी और उन्हें भी कई पुरस्कार मिले। **शुभ लेखा** और **सागर संगमम** से उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। प्रसिद्ध फिल्म शंकराभरणम् का निर्देशन भी विश्वनाथ ने किया। उनकी फिल्में मधुर संगीत लिये हुए रहती हैं और आम दर्शक तथा गंभीर दर्शक समान रूप से उन्हें पसंद करते हैं।

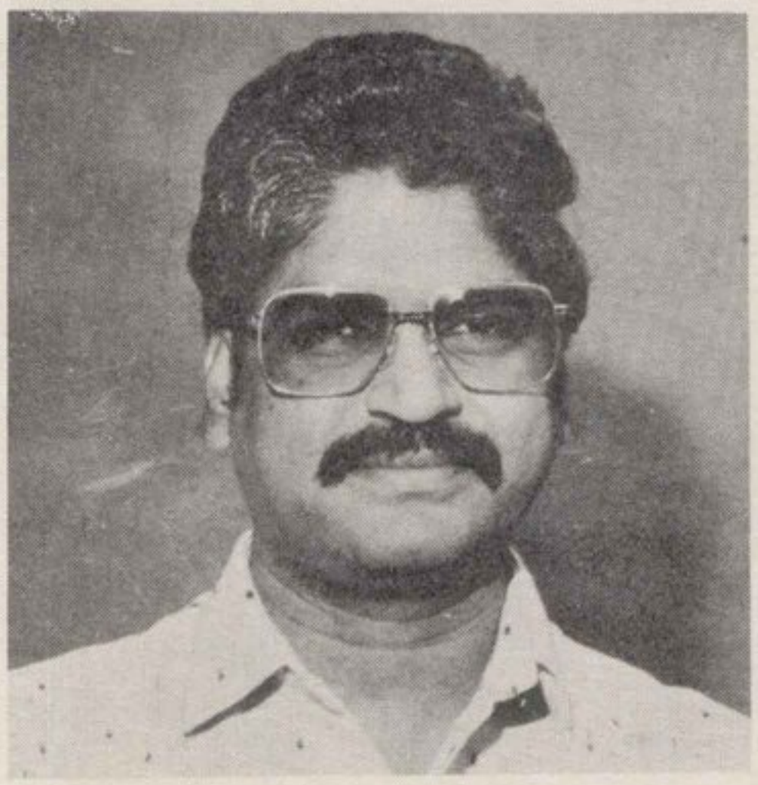

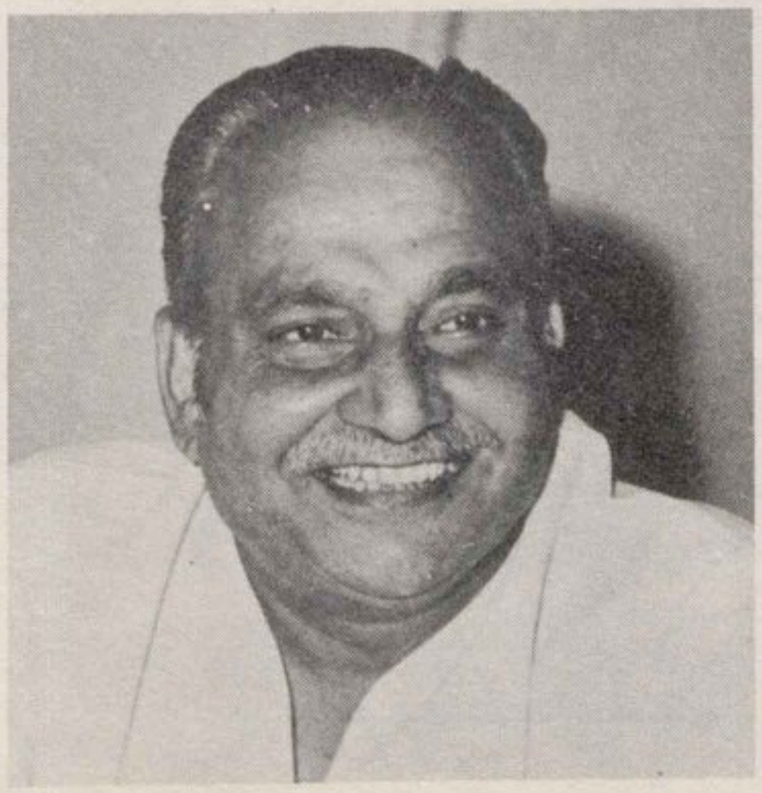

A. SUDHAKAR REDDY, a graduate in commerce and the son of a noted industrialist, is a patron of the arts and one of the founders of Sudarshan Cine Enterprises which aims to produce films with classical themes in Telugu.

C. KARUNAKAR RAO is a law graduate from Madras who was exposed to the charms of the silver screen through his aunt Lakshmi Rajyam, a noted actress and producer. He is one of the founders of Sudarshan Cine Enterprises.

K. VISHWANATH, director of the acclaimed film SHANKARABHARANAM, is known for his bold themes. Starting his career as a sound engineer, he directed his first film ATMA GOWRAVAM in Telugu in 1965. The film won a State award, to be followed by many such awards for his later films such as KALAM MARINDI, CHELLELI KAPURAM, SARADA, O SEETHA KATHA and JEEVANA JYOTHI. SUBHA LEKHA and SAGARA SANGAMAM brought him international recognition. Vishwanath's films are known for their lyrical charm and attract the admiration of both the ordinary film viewer and the discerning critic.

विशेष उल्लेख
अनुपम खेर
और
मोहनलाल

कथाचित्र निर्णायक मण्डल ने हिन्दी कथाचित्र **डैडी** में **अनुपम खेर** के अभिनय का विशेष उल्लेख किया है जिसमें उन्होंने दुखद व्यक्तिगत सम्बन्धों के शिकार एक प्रतिभाशाली कलाकार की भूमिका बहुत सहजता और परिपक्वता के साथ निभाई है।

कथाचित्र निर्णायक मण्डल ने मलयालम फिल्म **किरीडम्** में **मोहनलाल** के अभिनय का भी विशेष उल्लेख किया है, जिसमें उन्होंने एक युवा की मानसिक पीड़ा और वेदना को अद्‌भुत शैली में व्यक्त किया है।

Special Mention

ANUPAM KHER and MOHANLAL

The Feature Film Jury makes a Special Mention of ANUPAM KHER in the Hindi film DADDY for having played with great finesse and an unequalled range, the role of a gifted artiste hurt by unfortunate personal relationships.

The Feature Film Jury also makes a Special Mention of MOHANLAL in the Malayalam film KIREEDOM for portraying a young man's agony and pain marvellously and in unique style.

Note: Due to the wrong categorization of the Hindi Film MEETING A MILESTONE by the producer, the Jury felt unhappy that it could not honour this deserving film.

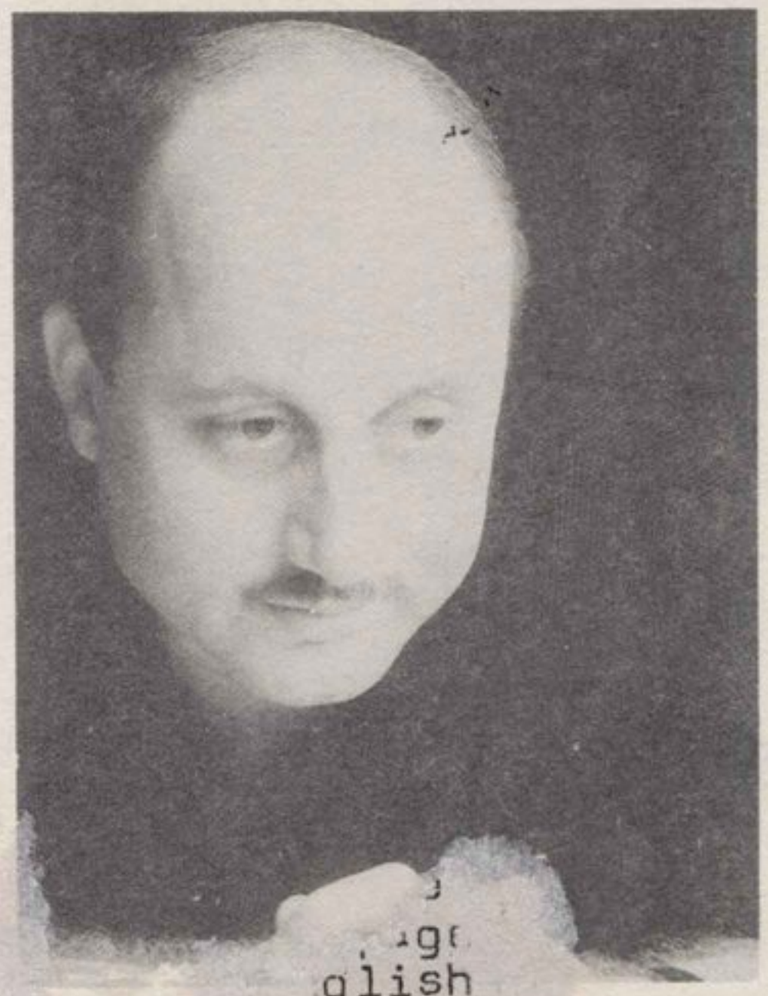

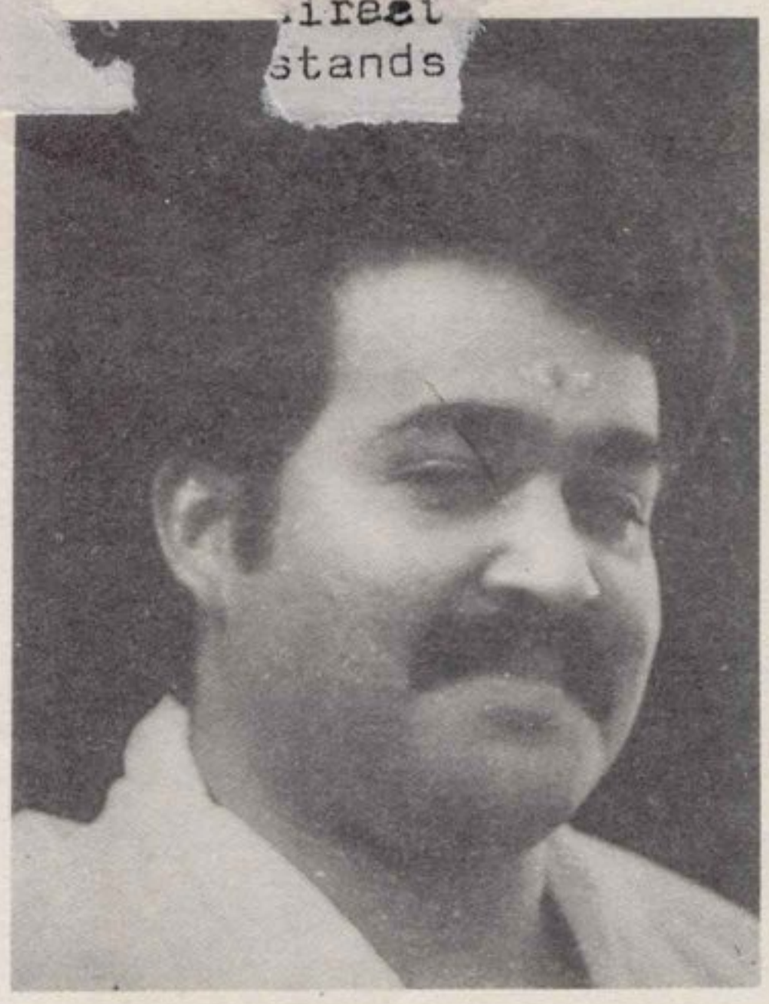

अनुपम खेर ने पंजाब श्विविद्यालय से बी.ए. की डिग्री और भारतीय रंगमंच में डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद नई दिल्ली के राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से अभिनय में प्रशिक्षण लिया। उन्होंने 50 से अधिक नाटकों में अभिनय किया है और 10 नाटकों का निर्देशन किया है। उनका फिल्मी जीवन 1984 में आरम्भ हुआ। अब तक वे 60 से अधिक फिल्मों में काम कर चुके हैं, जिनमें **सारांश, जन्म, राव साहिब, अर्जुन, कर्मा, पेस्टनजी, एक आदमी, विजय, राम लखन, चांदनी** और **डैडी** उल्लेखनीय हैं। उन्होंने 1984 में **सारांश** के लिए सर्वोत्तम अभिनेता का फिल्मफेयर पुरस्कार और 1988 में **विजय** फिल्म के लिए सर्वोत्तम सह-अभिनेता का फिल्मफेयर पुरस्कार मिला।

मोहन लाल की पहली फिल्म **मंजिल विरंगप्पोक्कल** थी; जिसमें उन्होंने खलनायक के रूप में काम किया। यह अति लोकप्रिय फिल्म 1980 में रिलीज हुई थी। नायक के रूप में उन्होंने सबसे पहले शशि कुमार द्वारा निर्देशित फिल्म **अट्टक्कलासम** में काम किया। यह फिल्म भी काफी सफल रही। तब से वे लगभग दो सौ फिल्मों में काम कर चुके हैं और मलयालम सिनेमा के सफलतम अभिनेताओं में गिने जाते हैं। उन्होंने हाल में मलयालम फिल्म **हिज़ हाइनेस अब्दुल्ला** का निर्माण किया, जिसका निर्देशन सिबी मलाईल ने किया। मोहन लाल को अनेक बार श्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मिला है। 1986 में उन्हें सत्यन् के निर्देशन में बनी मलयालम फिल्म **अन्तिकाड** में श्रेष्ठ अभिनय के लिए केरल राज्य सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार मिला। 1988 में मोहन लाल को फिल्म कला के क्षेत्र में शानदार योगदान के लिए केरल राज्य के विशेष पुरस्कार से सम्मानित [illegible] स्तर के और भी कई पुरस्कार प्रदान किये गये हैं।

ANUPAM KHER is an Arts graduate [illegible] Punjab University and another diploma in acting from the National School of Drama, New Delhi. He has acted in more than 50 plays and directed 10 stage productions. His career as a screen actor began in 1984. To date he has acted in nearly sixty films including SAARANSH, JANAM, RAO SAHEB, ARJUN, KARMA, PESTONJI, EK AADMI, VIJAY, RAM LAKHAN and DADDY. He received the Filmfare Best Actor Award for his performance in SARAANSH in 1984 and the Filmfare Best Supporting Actor Award for his performance in VIJAY in 1988.

MOHANLAL acted as a villain in his first film to be released in 1980, Fazil's super hit, MANJIL VIRINGAPPOOKKAL. His first film as a hero was ATTAKKALASAM, directed by Sasi Kumar, which proved to be another super hit. Since then he has acted in nearly 200 films and remains one of the most successful stars of the Malayalam cinema. He has also recently produced a Malayalam film, HIS HIGHNESS ABDULLAH, directed by Siby Malayil. Mohanlal has won many awards during his career, including the Kerala State Best Actor Award for 1986 for his outstanding performance in the Malayalam film ANTHICADU, directed by Sathyan; the Kerala State Special Award for outstanding brilliance in any aspect of cinematic art in the year 1988; and various other institutional awards such as the Kunjakko Smaraka Award, the Kerala Film Critics Award and the Bangalore Malayalee Association Film Award.

पुरस्कार जो नहीं दिए गए

(1) सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र पुरस्कार
(2) संविधान की आठवीं अनुसूचि में शामिल भाषाओं से भिन्न भाषा का सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

निम्नलिखित भाषाओं में प्रविष्ठियां प्राप्त नहीं हुई

(1) कश्मीरी
(2) संस्कृत
(3) सिन्धी
(4) उर्दू

AWARDS NOT GIVEN

1. Best Feature Film in Assamese.
2. Best Feature Film in a language other than those specified in Schedule VIII of the Constitution.

There were no entries in the following languages:

1. Kashmiri
2. Sanskrit
3. Sindhi
4. Urdu

ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Non-feature Films

सर्वोत्तम ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार

आर कोतो दिन

निर्माता **सूचना एवं सांस्कृतिक विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार** को स्वर्ण कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **शशि आनन्द** को स्वर्ण कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ग़ैर-कथाचित्र का 1989 का पुरस्कार **आर कोतो दिन** को हमारे देश में बड़ी संख्या में बच्चों की दुर्दशा पर क्षोभ और कुछ नए कर पाने की विवशता को फ़िल्म के माध्यम से कुशलता पूर्वक चित्रित करने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Non-Feature Film

AAR KOTO DIN

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Producer, Department of Information and Cultural Affairs, Government of West Bengal.

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director, Shashi Anand.

Citation

The Award for the Best Non-Feature Film of 1989 is given to AAR KOTO DIN for a brilliant cinematic exposition of deep anguish and helplessness at the fate of a large section of the children of our country.

शशि आनन्द ने फिल्म एवम् टेलीविजन संस्थान से डिप्लोमा लेने के बाद कई कथाचित्रों के लिए सहायक छायाकार एवं सहायक निर्देशक के रूप में काम किया। इनमें मृणाल सेन के निर्देशन में बनी कुछ फिल्में भी शामिल हैं। उनकी पहली फिल्म **मैन वर्सिस मैन** कलकत्ता के रिक्शा-चालकों के जीवन पर आधारित थी। इसे 1983 में ओर्बहासन फिल्म समारोह में ग्रान्डप्री पुरस्कार मिला। इस फिल्म को कनाडियन अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1985 में कलकत्ता में आयोजित लघु फिल्म समारोह में इस फिल्म को सर्वोत्तम वृत्त चित्र का पुरस्कार दिया गया।

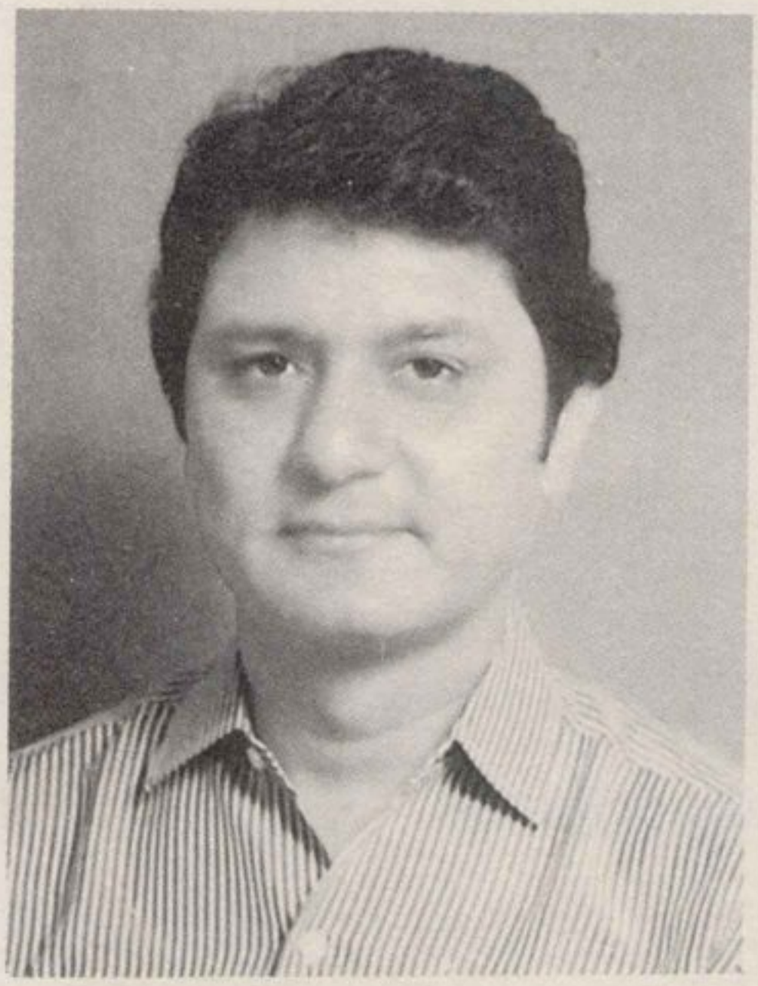

SHASHI ANAND has been a keen film buff since his school days. After graduating from the Film and Television Institute of India, he worked as assistant cameraman or assistant director on many feature films, including some directed by Mrinal Sen. His first film, MAN VS MAN, based on the rickshaw pullers of Calcutta, went on to win the Grand Prix (ex aqueo) at the Oberhausen Film Festival in 1983. It also received the Best Social Comment Film Award at the Canadian International Film Festival, Ontario and the Best Documentary Film Award at the Shorts-1 Film Festival in Calcutta in 1985.

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फ़िल्म पुरस्कार

बैगा

निर्माता **मध्य प्रदेश माध्यम** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **राजेन्द्र जांगले** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फ़िल्म का 1989 का पुरस्कार **बैगा** को एक जनजातीय समाज के जीवन, संस्कृति तथा रीति-रिवाज़ों का खोज पूर्ण ढंग से चित्रण करने के लिए प्रदान किया गया है।

Award for the Best Anthropological/ Ethnographic Film

BAIGA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, Madhya Pradesh Madhyam.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Rajendra Janglay.

Citation

The Award for the Best Anthropological/Ethnographic Film of 1989 is given to BAIGA for its well-researched portrayal of the life, culture and customs of a tribal community.

राजेन्द्र जांगले ने बम्बई के जे.जे. व्यावहारिक कला संस्थान में छायांकन का प्रशिक्षण लिया और भारतीय फिल्म एवम् टेलीविजन संस्थान से छायांकन में डिप्लोमा और फिल्म निर्देशन में पोस्ट डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने कई लघु फिल्मों और वृत्तचित्रों का निर्देशन किया है जिनमें से **संकल्प** को 1987 में सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। **बुद्धिजीवि** और **मान्डू—साइटेडल आफ जॉय** जैसी उनकी कुछ फिल्में विभिन्न राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित हुई हैं। इस समय वे भोपाल में मध्य प्रदेश माध्यम में निदेशक (फिल्म्स) के रूप में काम कर रहे हैं।

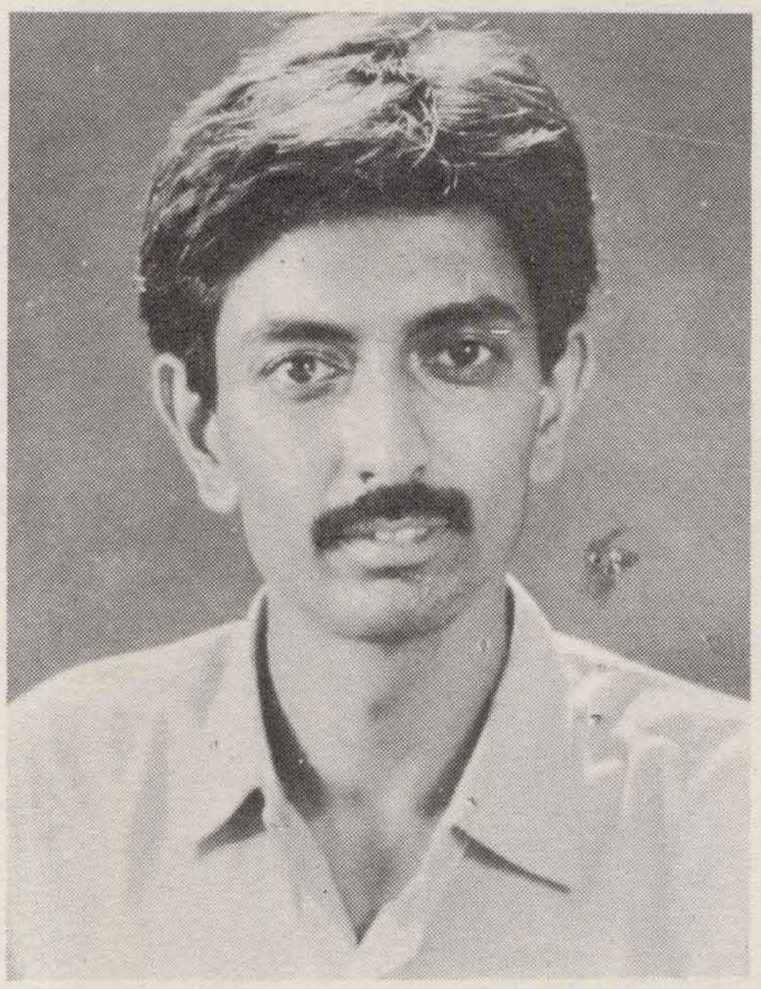

RAJENDRA JANGLAY took an apprentice training course in photography at the J.J. Institute of Applied Arts, Bombay. He then joined the Film and Television Institute of India and received his diploma in cinema and motion picture photography and his post diploma in film direction. He has made several short films and documentaries, among which SANKALP won the National Award for the Best Film on Social Issues in 1987. Some of his films, such as BUDDHIJIVI and MANDU—CITADEL OF JOY, have been shown in various national and international festivals. At present, he is working as Director (Films) in Madhya Pradesh Madhyam, Bhopal.

सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म पुरस्कार

सी.वी. रमण: द साइंटिस्ट एंड हिज़ लैगसी

निर्माता **डा. एन.के. सहगल** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **नन्दन कुढयाढि** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म का 1989 का पुरस्कार **सी.वी. रमण : द साइंटिस्ट एंड हिज़ लैगसी** को दिया गया है, जिसमें महान वैज्ञानिक के जीवन-चरित्र को अभिनव और सूक्ष्म ढंग से प्रस्तुत किया गया है और उनकी उपलब्धियों तथा दुख-तकलीफ़ों का मार्मिक चित्रण किया गया है।

Award for the Best Biographical Film

C.V. RAMAN: THE SCIENTIST & HIS LEGACY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, Dr. N.K. Sehgal.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Nandan Kudhyadi.

Citation

The Award for the Best Biographical Film of 1989 is given to C.V. RAMAN: THE SCIENTIST & HIS LEGACY for being an innovative and sensitive biography of a great scientist, C.V. Raman, portraying his achievements, trials and tribulations.

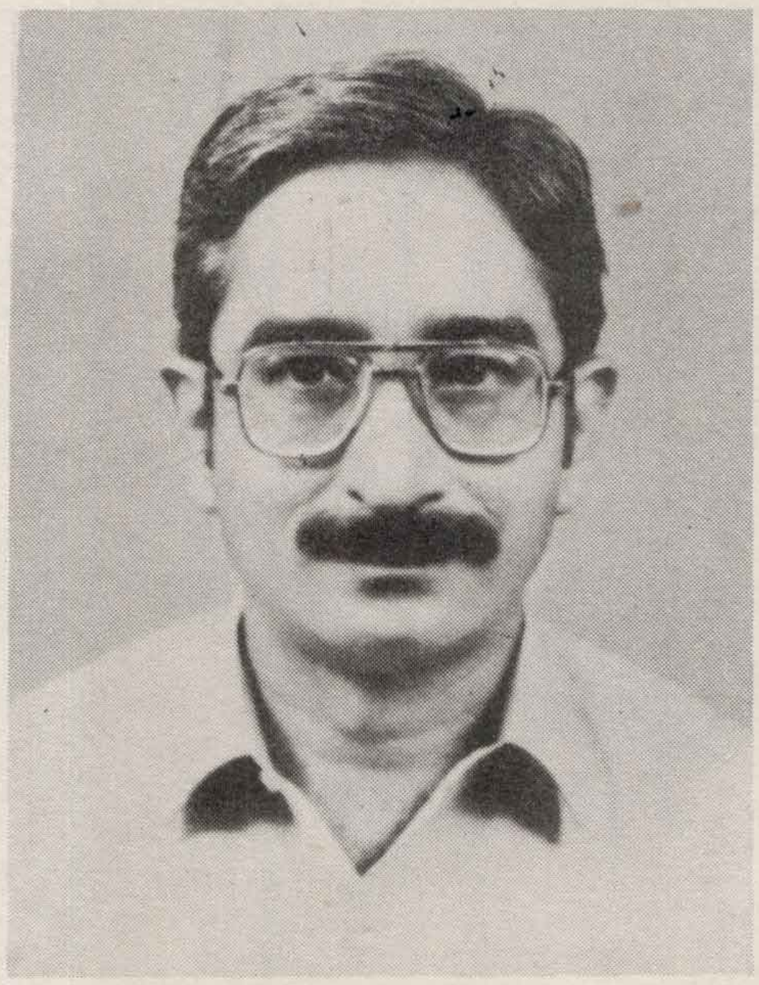

डा॰ एन.के. सहगल नई दिल्ली में विज्ञान और टेक्नोलॉजी विभाग के निदेशक हैं। इस पद पर काम करते हुए वे विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के कार्यक्रमों को तैयार कराने का दायित्व निभाते हैं। भौतिकी के संबंध में उनके अनेक अनुसंधान निबंध अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये हैं।

नन्दन कुढयाढि ने बड़ौदा के एम.एस. विश्वविद्यालय से ललित कला की शिक्षा लेने के बाद 1978 में भारतीय फिल्म एवम टेलीविजन संस्थान से सिनेमा में डिप्लोमा प्राप्त किया। इसके बाद उन्होंने कई फिल्मों के लिए पटकथा लिखी। उन्होंने भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार के बारे में कई दृश्य-श्रव्य कार्यक्रम तैयार किये हैं। इसी तरह का कार्यक्रम उन्होंने 1982 में लन्दन में आयोजित भारत महोत्सव के बारे में बनाया। उन्होंने कई लघु फिल्मों का निर्माण और निर्देशन भी किया है।

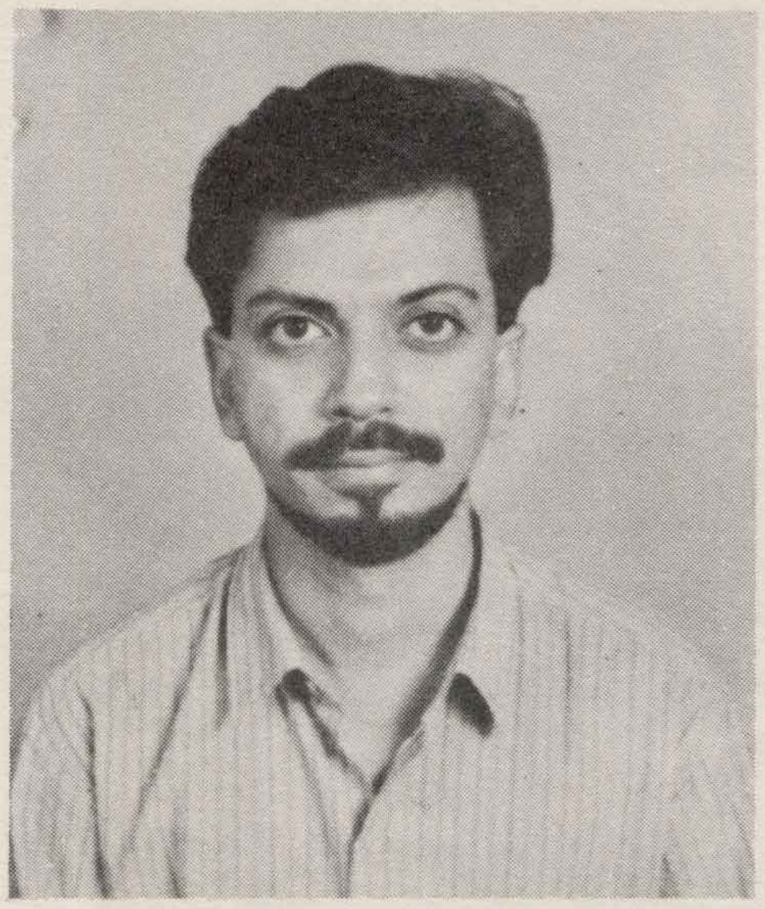

NARENDER K. SEHGAL is Director (NCSTC), Department of Science and Technology, Ministry of Science and Technology, New Delhi. In his official capacity, he is involved in the conceptualization, formulation, implementation and coordination of science popularization programmes. Several of his research papers on particle physics and reactor physics have been published in international journals. He has also been involved in transfer of technology studies.

NANDAN KUDHYADI graduated in Fine Arts from M.S. University in Baroda and went to Pune to the Film and Television Institute of India to receive a diploma in cinema in 1978. Since then, he has been involved in various productions as script-writer; has organized multi-screen audio-visual presentations for the Bharatiya Jnanpith Award and the Festival of India in London, 1982; and produced and directed short films of his own.

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म पुरस्कार

सिद्धेश्वरी

निर्माता **मणि कौल** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **मणि कौल** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म का 1989 का पुरस्कार **सिद्धेश्वरी** को एक गायिका की उपलब्धियों और उसके वातावरण को कल्पनाशील तथा सुव्यवस्थित शैली में चित्रण करने के लिए प्रदान किया गया है।

Award for the Best Arts/Cultural Film

SIDDHESHWARI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, Mani Kaul.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Mani Kaul.

Citation

The Award for the Best Arts/Cultural Film of 1989 is given to SIDDHESHWARI for its innovative and stylized interpretation of a singer's work and her milieu.

मणि कौल ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान से डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्हें अपनी पहली फीचर फिल्म **उसकी रोटी** से ही गंभीर सिनेमा के प्रमुख निर्देशक के रूप में मान्यता मिल गई। इसके बाद उन्होंने **आषाढ़ का एक दिन** और **दुविधा** फिल्में बनाई। इन तीनों फिल्मों को कई पुरस्कार मिले। उन्होंने अनेक गैर-कथाचित्र फिल्मों का भी निर्माण किया जिनमें कुछ उल्लेखनीय फिल्में हैं— **नोमेड पपेटियर्स, दि हिस्टोरिकल स्केच ऑफ इंडियन वोमेन, चित्रकथा, अराइवल, सतह से उठता आदमी, दी डैजर्ट आफ दि थाऊजेंनड् लाईन्स** और **ध्रुपद।**

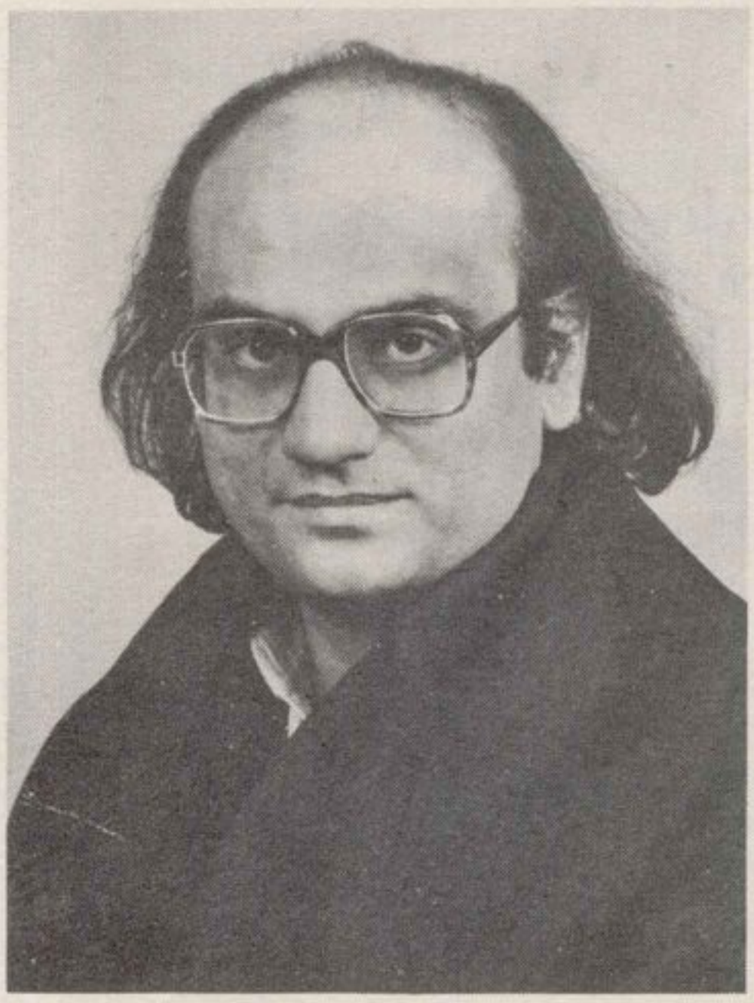

MANI KAUL graduated from the Film and Television Institute of India. His first feature film was USKI ROTI, an experimental effort which brought him immediate recognition as a major director of serious cinema. He followed it up with ASHAD KA EK DIN and DUVIDHA. All three films have won awards and critical acclaim at many festivals. A Jawaharlal Nehru Fellow, he has had retrospective shows of his films at Rotterdam (1981) and Pesaro (1985). He has also made many non-feature, short and documentary films, among which THE NOMAD PUPPETEERS, A HISTORICAL SKETCH OF INDIAN WOMEN, CHITRAKATHA, ARRIVAL, SATAH SE UTHATA ADMI, THE DESERT OF A THOUSAND LIVES and DHRUPAD have won great critical acclaim.

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म पुरस्कार (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित)

न्यूरोपैथिक फ़ुट इन लैप्रोसी

निर्माता **डा. जाल मेहता** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **विश्राम रेवंकर** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित) का 1989 का पुरस्कार **न्यूरोपैथिक फ़ुट इन लैप्रोसी** को दिया गया है। यह एक विशेष विषय पर बहुत बढ़िया ढंग से बनाई गई फ़िल्म है, जिसमें एक गंभीर रोग के इलाज की प्रभावशाली तरीके से जानकारी दी गई है।

Award for the Best Scientific Film (including Environment and Ecology)

NEUROPATHIC FOOT IN LEPROSY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, Dr. Jal Mehta.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Vishram Revankar.

Citation

The Award for the Best Scientific Film (including Environment and Ecology) of 1989 is given to NEUROPATHIC FOOT IN LEPROSY for being a well-made specialized film effectively communicating the course of treatment in a serious disease.

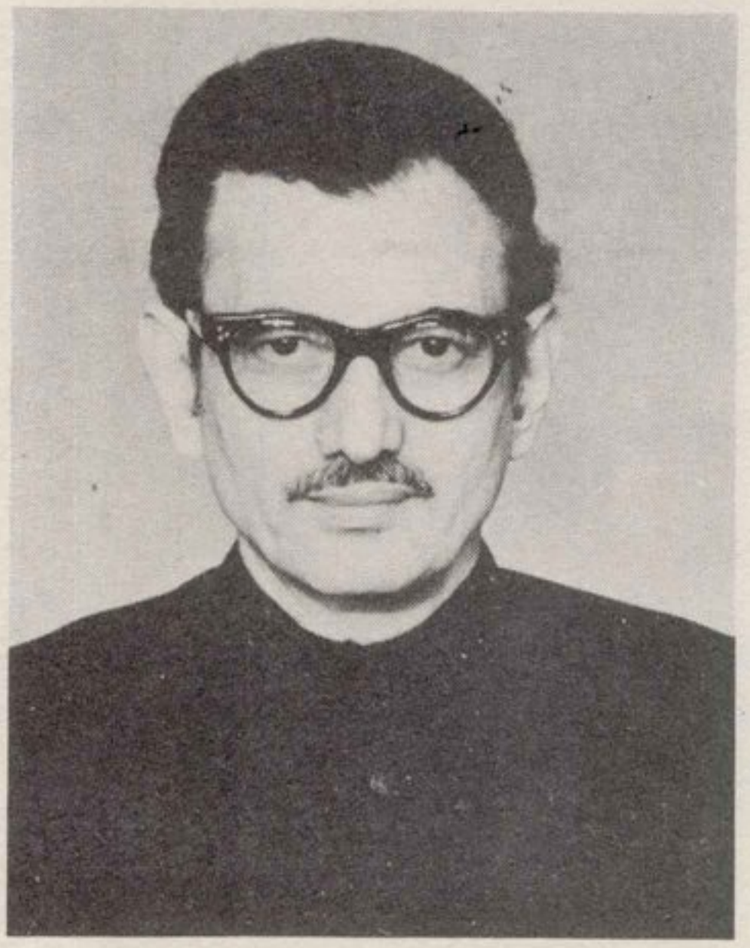

डा॰ जाल मेहता पुणे के बन्दोरवाला कुष्ठ रोग अस्पताल के अध्यक्ष और सेरम संस्थान के निदेशक हैं। वे भारतीय रेडक्रास सोसायटी, अन्तर्राष्ट्रीय कुष्ठ रोग कांग्रेस तथा अनेक राष्ट्रीय कुष्ठ रोग संगठनों से सम्बद्ध हैं। उन्होंने कुष्ठरोग के क्षेत्र में प्लास्टिक सर्जरी के मामले में महत्वपूर्ण काम किया है। उनकी फिल्म—**स्वीकार,** और **रिकंस्ट्रक्टिव सर्जरी : लैप्रोसी (हैंड)** को सर्वोत्तम समाज कल्याण फिल्म और सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। 1989 में उन्हें रिहैब्बीटेशन इंटरनेशनल द्वारा आर.सी.आई. पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह संस्था संयुक्त राष्ट्र को विकलांगों के पुर्नवास के सम्बन्ध में परामर्श देती है। उन्हें 1982 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

विश्राम रेवंकर भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान में सहायक प्रोफेसर के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने कई वृत्तचित्र और वीडियो फिल्मों का निर्माण किया है। 1985 में उन्हें सर्वोत्तम निर्देशन का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

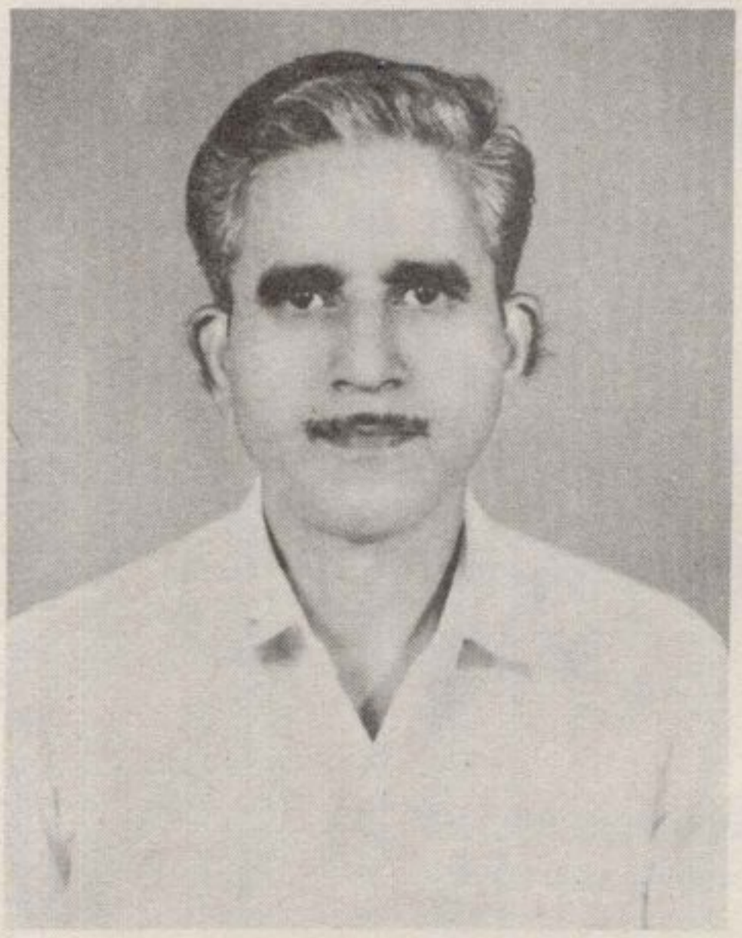

Dr. JAL MEHTA heads the Dr. Bandorawala Leprosy Hospital in Pune and is the Director of the Serum Institute. He is associated with the Indian Red Cross Society, the International Leprosy Congress and various national leprosy organizations. He has also done pioneering work as a reconstructive and plastic surgeon in the field of leprosy. The films SWEEKAR and RECONSTRUCTIVE SURGERY: LEPROSY (HAND), produced by Dr. Mehta, won National Awards for the Best Social Welfare Film and the Best Scientific Film at the 32nd and 36th National Film Festivals. In 1989, he received the R.C.I. International Award from Rehabilitation International, which is affiliated to the United Nations as a Consultative Committee on the rehabilitation of the disabled.

VISHRAM REVANKAR is at present on the faculty of the Film and Television Institute of India as Assistant Professor, Educational Television Films. He has made a number of documentaries and video films and won a National Award for Best Direction in 1985.

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फ़िल्म पुरस्कार

द डिअर ऑन द लेक

निर्माता **अरिबम श्याम शर्मा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **अरिबम श्याम शर्मा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फ़िल्म का 1989 का पुरस्कार **द डिअर ऑन द लेक** को मणिपुर की लोकतक झील और उसके द्वीपों के प्राकृतिक सन्तुलन की जटिलताओं तथा मनुष्य के उस लोभ का चित्रण करने तथा फिल्म माध्यम का सृजनात्मक उपयोग करने के लिए दिया गया, जिसके कारण मणिपुर के सांगाय हिरण का अस्तित्व संकट में पड़ गया है।

Award for the Best Environment/ Conservation/Preservation Film

THE DEER ON THE LAKE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, Aribam Syam Sharma.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Aribam Syam Sharma.

Citation

The Award for the Best Environment/Conservation/Preservation Film of 1989 is given to THE DEER ON THE LAKE for the creative use of the cinematic medium in explaining the complexities of the ecosystem of the Loktak lake, its floating islands and the greed of man that led to the near extinction of the Sangai, the Deer of Manipur.

अरिबम श्याम शर्मा ने विश्व भारती विश्वविद्यालय, शान्ति निकेतन में भारतीय दर्शन और शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली। मणिपुर लौटने के बाद, वे नाटकों में काम करने लगे और अभिनेता तथा निर्देशक के रूप में प्रसिद्ध हो गये। 1974 से उन्होंने बड़ी संख्या में वृत्त चित्रों और लघु फिल्मों का निर्देशन किया है। 1981 में बने उनके पहले कथाचित्र **इमागी निंगथम** को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। इस फिल्म ने कई अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में भाग लिया और फ्राँस के नांट्स फिल्म समारोह में फिल्म को ग्रांडप्री पुरस्कार मिला।

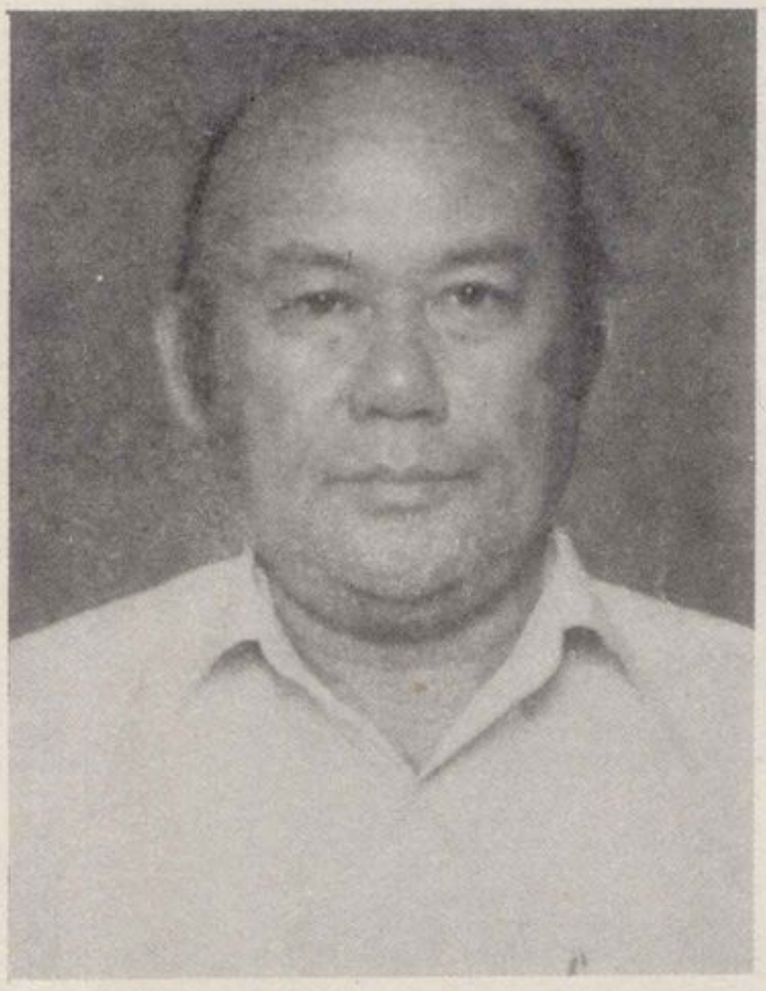

ARIBAM SYAM SHARMA read Indian philosophy in Viswabharati University, Shantiniketan, where he also trained in Indian classical music. Back in Manipur, with his interest in the theatre, he became an actor and director of note. With his musical background, he was also a popular vocalist. Sharma has been making films since 1974 and has directed a large number of documentaries and short films. His first feature film, released in 1981, IMAGI NINGTHEM, went on to win a National Award. The film was an entry in various international festivals abroad and won the Grand Prix at Nantes, France.

सर्वोत्तम प्रोत्साहन फ़िल्म पुरस्कार (पर्यटन, निर्यात, शिल्प, उद्योग, आदि)

ट्यूना द चिकन ऑफ द सी

निर्माता **डी. गौतमन्** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **के. जगजीवन राम** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम प्रोत्साहन फिल्म (पर्यटन, निर्यात, शिल्प, उद्योग आदि) का 1989 का पुरस्कार **ट्यूना द चिकन ऑफ द सी** को ट्यूना मछली उद्योग का रोचक तथा सशक्त चित्रण करने के लिए प्रदान किया गया है।

Award for the Best Promotional Film (to cover Tourism, Exports, Crafts, Industry, etc.)

TUNA THE CHICKEN OF THE SEA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, D. Gautaman.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, K. Jagajivan Ram.

Citation

The Award for the Best Promotional Film (to cover Tourism, Exports, Crafts, Industry, etc.) of 1989 is given to TUNA THE CHICKEN OF THE SEA for being a competent and engaging depiction of the Tuna fishing industry.

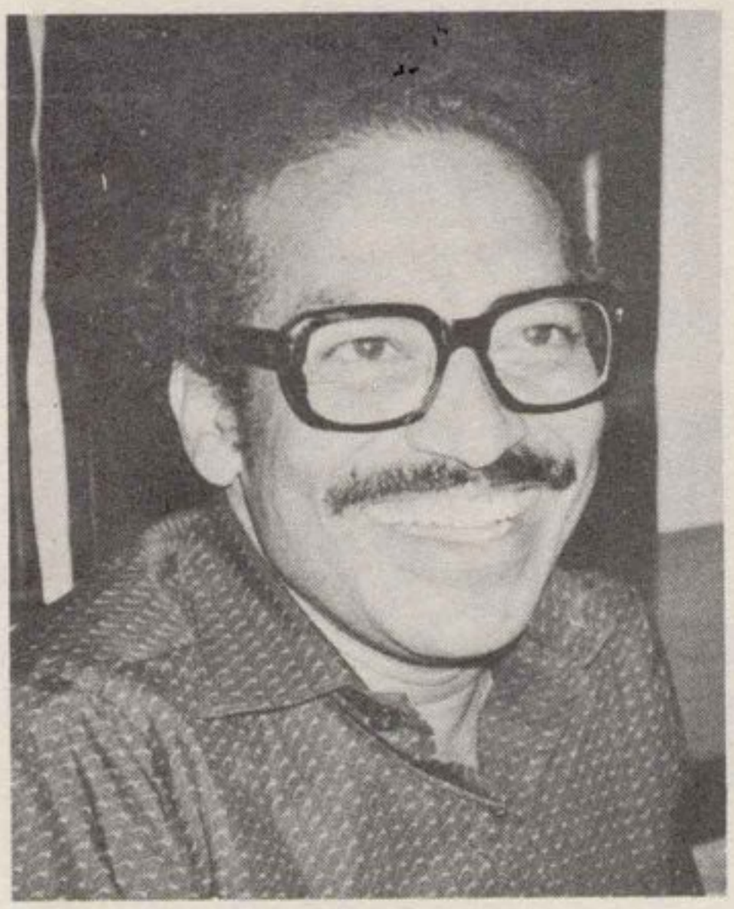

डी. गौतमन् ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से प्रशिक्षण लेने के बाद प्रसिद्ध मलयालम निर्देशक रामू करियत के सहायक के रूप में अपना फिल्मी जीवन आरंभ किया। बाद में वे फिल्म प्रभाग में निर्देशक बन गये और उन्होंने 60 से अधिक वृत्तचित्रों का निर्देशन किया। इस समय वे फिल्म प्रभाग में निर्माता के रूप में काम कर रहे हैं और वे कृषि पर वृत्तचित्र बनाने के विशेषज्ञ हैं।

के. जगजीवन राम ने बंगलौर से छायांकन में डिप्लोमा हासिल करने के बाद 1973 में प्रीमियर स्टुडियोज मैसूर में कैमरामैन के रूप में अपना फिल्मी जीवन शुरू किया। 1975 में वे फिल्म प्रभाग में चले गये। उन्होंने अनेक पुरस्कृत फिल्में तैयार की हैं, जिनमें **चार-भुजा, सिज़ेरीटोमी ऑन मिल्च ऐनीमल्स** और **हाइड्रम** उल्लेखनीय हैं। निर्देशक के रूप में उन्हें **अंगोरा फार वूल** फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। वे परिवार कल्याण पर फिल्में बनाने के विशेषज्ञ हैं।

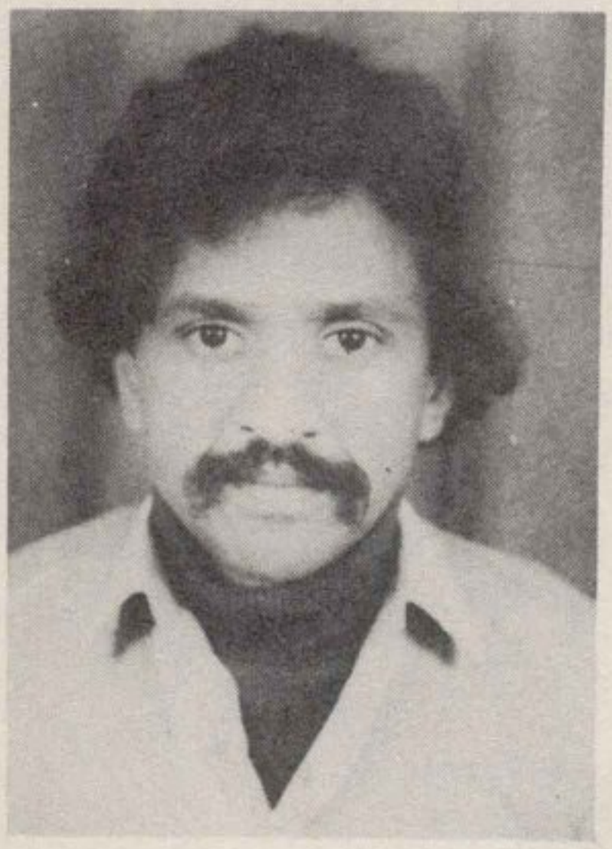

D. GAUTAMAN received a diploma from the Film and Television Institute of India and started his career as assistant to the well-known Malayalam director Ramu Kariat. He subsequently joined Films Division as Director and made more than sixty documentaries. Today he is a Producer in Films Division, specializing in documentaries on agriculture.

K. JAGAJIVAN RAM is a diploma holder in cinematography from Bangalore. He started his career as a cameraman with Premier Studios, Mysore, in 1973. In 1975 he joined Films Division. Today he has to his credit a number of award-winning films including CHARBHUJA, CAESAR-IOTOMY ON MILCH ANIMALS and HYDRUM. As a director he got a National Award for his film ANGORA FOR WOOL. He also specializes in films on family welfare.

सर्वोत्तम कृषि फ़िल्म (पशु पालन, दुग्ध उत्पादन, आदि जैसे कृषि से सम्बन्धित विषयों सहित)

इंटिग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेंट इन कॉटन

निर्माता **डी. गौतमन्** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **के. जगजीवन राम** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कृषि फिल्म (पशु पालन, दुग्ध उत्पादन, आदि कृषि से सम्बन्धित विषयों सहित) का 1989 का पुरस्कार **इंटिग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेंट इन कॉटन** को प्रदान किया गया है जिसमें समन्वित कीट प्रबन्ध में जैव-नियन्त्रण के महत्व के बारे में चेतना पैदा करने की कोशिश की गई है।

Award for the Best Agricultural Film (to include subjects related to and allied to Agriculture like Animal Husbandry, Dairying, etc.)

INTEGRATED PEST MANAGEMENT IN COTTON

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, D. Gautaman.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, K. Jagajivan Ram.

Citation

The Award for the Best Agricultural Film (to include subjects related to and allied to Agriculture like Animal Husbandry, Dairying, etc.) of 1989 is given to INTEGRATED PEST MANAGEMENT IN COTTON for its efforts towards generating awareness regarding the importance of bio-control in integrated pest management.

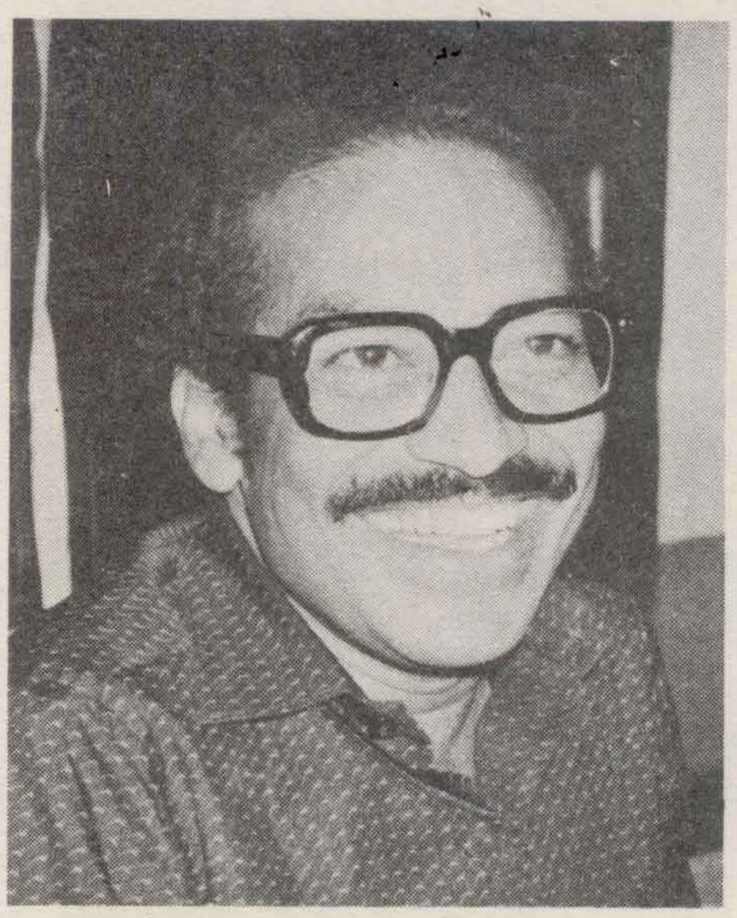

डी. गौतमन् ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से प्रशिक्षण लेने के बाद प्रसिद्ध मलयालम निर्देशक रामू करियत के सहायक के रूप में अपना फिल्मी जीवन आरंभ किया। बाद में वे फिल्म प्रभाग में निर्देशक बन गये और उन्होंने 60 से अधिक वृत्तचित्रों का निर्देशन किया। इस समय वे फिल्म प्रभाग में निर्माता के रूप में काम कर रहे हैं और वे कृषि पर वृत्तचित्र बनाने के विशेषज्ञ हैं।

के. जगजीवन राम ने बंगलौर से छायांकन में डिप्लोमा हासिल करने के बाद 1973 में प्रीमियर स्टुडियोज मैसूर में कैमरामैन के रूप में अपना फिल्मी जीवन शुरू किया। 1975 में वे फिल्म प्रभाग में चले गये। उन्होंने अनेक पुरस्कृत फिल्में तैयार की हैं, जिनमें **चार-भुजा, सिज़ेरीटोमी ऑन मिल्च ऐनीमल्स** और **हाइड्रम** उल्लेखनीय हैं। निर्देशक के रूप में उन्हें **अंगोरा फार वूल** फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। वे परिवार कल्याण पर फिल्में बनाने के विशेषज्ञ हैं।

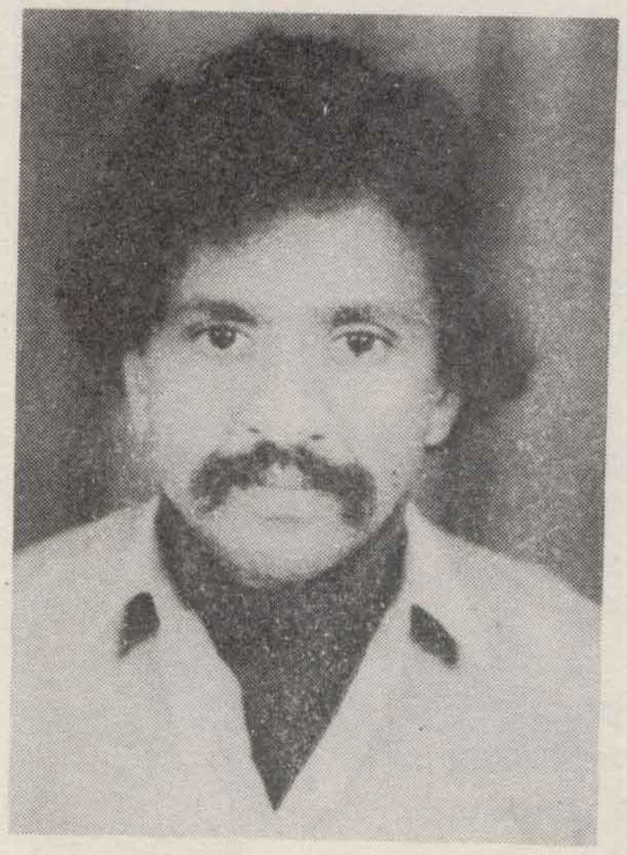

D. GAUTAMAN received a diploma from the Film and Television Institute of India and started his career as assistant to the well-known Malayalam director Ramu Kariat. He subsequently joined Films Division as Director and made more than sixty documentaries. Today he is a Producer in Films Division, specializing in documentaries on agriculture.

K. JAGAJIVAN RAM is a diploma holder in cinematography from Bangalore. He started his career as cameraman with Premier Studios. Mysore, in 1973. In 1975 he joined Films Division. Today he has to his credit a number of award-winning films including CHARBHUJA, CAESAR-IOTOMY ON MILCH ANIMALS and HYDRUM. As a director he got a National Award for his film ANGORA FOR WOOL. He also specializes in films on family welfare.

सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निमाण/संकलन फ़िल्म पुरस्कार

छापाखानार बांगला हरफ और कथनी करनी एकसी (जमनालाल बजाज)

निर्माता **श्रीमती चटर्जी** और **चन्द्रिका भट्टाचार्जी (छापाखानार बांगला हरफ)** और **मैसर्स क्लाइम्ब फ़िल्मस् [कथनी करनी एकसी (जमनालाल बजाज)]** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **अभिजित चट्टोपाध्याय (छापाखानार बांगला हरफ)** और **भीम सेन [कथनी करनी एकसी (जमनालाल बजाज)]** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निमाण/संकलन फ़िल्म का 1989 का पुरस्कार **छापाखानार बांगला हरफ** को बंगला भाषा के मुद्रण के इतिहास को चित्रित करने में अनुसंधान और कल्पना के सुन्दर मेल के लिए दिया गया है।

सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निमाण/संकलन फ़िल्म का 1989 का पुरस्कार **कथनी करनी एकसी (जमनालाल बजाज)** को भी दिया गया है, जिसमें इस महापुरुष के जीवन और उनके समय की परिस्थितियों का प्रामाणिक ढंग से चित्रण किया गया है।

Award for the Best Historical Reconstruction/Compilation Film

CHHAPAKHANAR BANGLA HARAF and KATHNI KARNI EKSI (JAMANALAL BAJAJ)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers, Shreemati Chatterjee and Chandrika Bhattacharjee (for CHHAPAKHANAR BANGLA HARAF) and M/s Climb Films [for KATHNI KARNI EKSI (JAMANALAL BAJAJ)].

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Directors, Abhijit Chattopadhyay (for CHHAPAKHANAR BANGLA HARAF) and BHIM SAIN [for KATHNI KARNI EKSI (JAMANALAL BAJAJ)].

Citation

The Award for the Best Historical Reconstruction/Compilation Film of 1989 is given to CHHAPAKHANAR BANGLA HARAF for achieving a creative blend of research and imagination in depicting the history of Bengali printing.

The Award for the Best Historical Reconstruction/Compilation Film of 1989 is also given to KATHNI KARNI EKSI (JAMANALAL BAJAJ) for its authentic recreation of the life and times of the late Shri Jamanalal Bajaj.

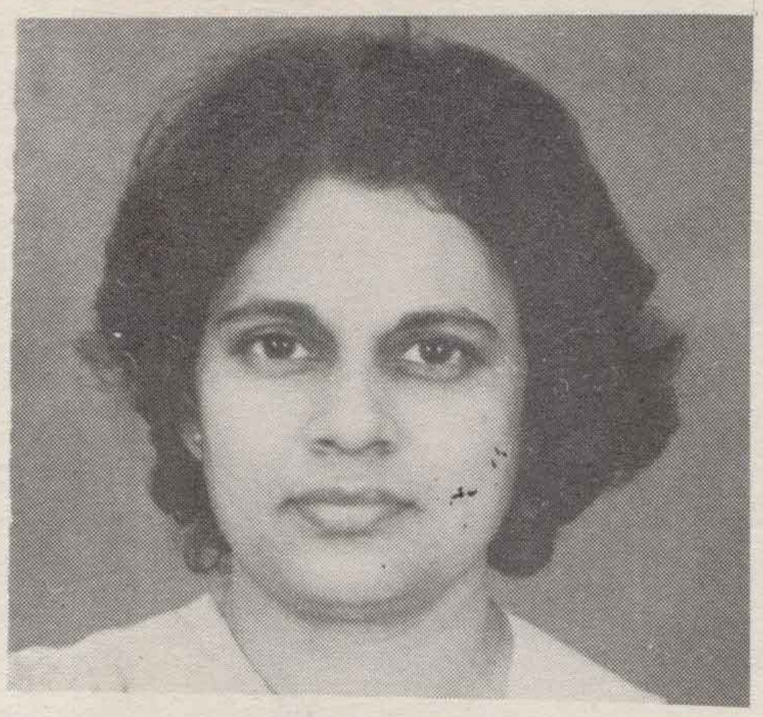

श्रीमती चटर्जी ने 1972 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। वे एक वेशभूषा डिजाइनिंग विद्यालय की प्राधानाचार्य और कलकत्ता के ऋत्विक फिल्म क्लब की सक्रिय सदस्य हैं।

चन्द्रिका भट्टाचार्य ने 1968 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। वे सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता हैं और इस समय दक्षिण कलकत्ता डोल्फिन कमप्यूटर क्लब की सचिव हैं।

अभिजित चट्टोपाध्याय ने कई विज्ञापन फिल्मों का निर्देशन किया है। उन्होंने अनेक दूरदर्शन धारावाहिकों की पटकथा भी लिखी है जिनमें टैगोर के उपन्यास पर आधारित धारावाहिक **गोरा** और आशापूर्णा देवी के उपन्यास पर आधारित **बकूल कथा** शामिल हैं। उन्होंने बंगला फिल्म **गणेर इन्द्रधनुष** की पटकथा भी लिखी है। उन्होंने एक वृत्तचित्र **पाता लेखन अबन ठाकुर** का निर्देशन किया है और धारावाहिक **प्रथम प्रतिश्रुति** का कला निर्देशन किया है।

भीमसेन ने लखनऊ विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा पूरी करने के बाद हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखा। इसके बाद उन्होंने लखनऊ महाविद्यालय में चित्रकला की शिक्षा ली। उन्होंने 7 वर्ष तक फिल्म प्रभाग में कलाकार के रूप में काम किया। इसके पश्चात् उन्होंने प्रसाद प्रोडक्शन्स में काम किया जहां उनकी फिल्म **'द क्लाइम्ब'** को शिकागो अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में पुरस्कार मिला। कई सफल लघु फिल्में बनाने के बाद उन्होंने 1976 में कथाचित्र **घरौंदा** का निर्माण किया। उन्होंने 1979 में **दूरियाँ** और 1983 में **तुम लौट आओ** फिल्म बनाई। उन्होंने दूरदर्शन धारावाहिक **छोटी बड़ी बातें** और कई वृत्तचित्र भी तैयार किये। इन दिनों वे दूरदर्शन के लिए एक कार्टून धारावाहिक **वर्तमान** का निर्माण कर रहे हैं।

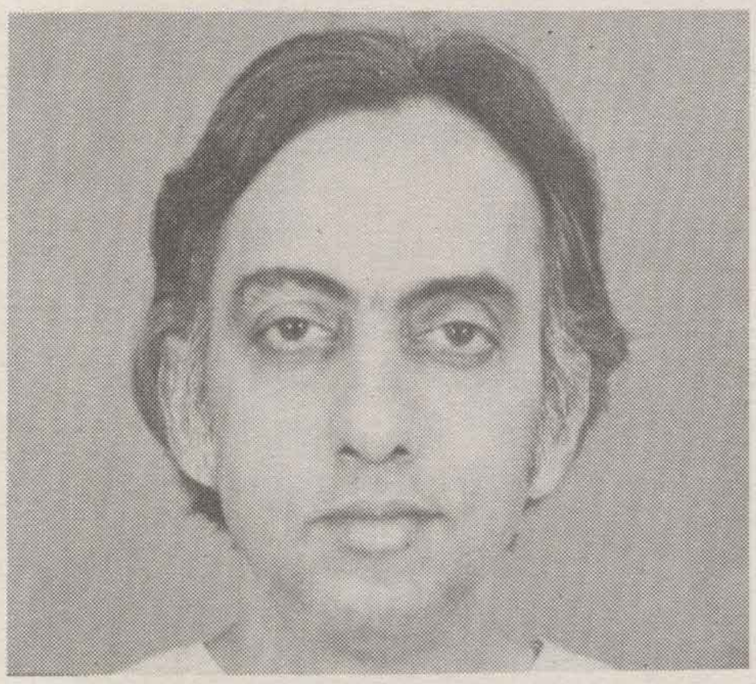

SHREEMATI CHATTERJEE graduated from Calcutta University in 1972. She is the principal of a dress designing school and is an active member of the Ritwik Film Club in Calcutta.

CHANDRIKA BHATTACHARJEE graduated from Calcutta University in 1968 and is the Secretary of the South Calcutta Dolphine's Computer Club. She is also an active social worker and a Rotarian.

ABHIJIT CHATTOPADHYAY has worked as a director of advertisement films. He has written screenplays for many television serials, including GORA based on Tagore's novel of the same name and BAKUL KATHA based on a novel by Ashapurna Devi. He has also written the script for a feature film in Bengali, GANER INDRADHANU. He has directed a documentary PATA LEKHEN ABAN THAKUR and worked as an art director for the serial PRATHAM PRATISRUTI.

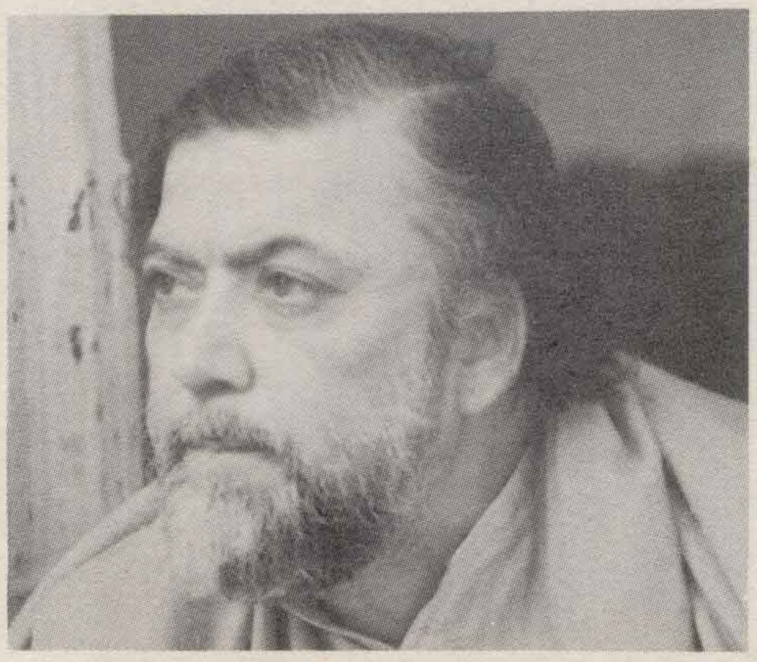

BHIM SAIN graduated from Lucknow University before studying Hindustani classical music and following it up with painting at the Lucknow College of Art. He worked for seven years in the Films Division, first as a background artist and then as a layout artist. The next two years were spent with Prasad Productions where his film THE CLIMB won the Silver Hugo at the Chicago International Film Festival. After many successful shorts he made his first feature film, GHARAONDA, in 1976. In 1979 he made DOORIYAN and in 1983 TUM LAUT AAO. He also made the television serial CHHOTI BADI BAATEN and a number of documentaries. At present he is in the process of producing an animation serial, VARTAMAAN, for Doordarshan.

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

द लैम्प इन द नीश

निर्माता **गिरीश कर्नाड** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **गिरीश कर्नाड** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फ़िल्म का 1989 का पुरस्कार **द लैम्प इन द नीश** को मानवीय दर्शन को अत्यन्त सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है, जिसमें विश्व बन्धुत्व, सद्भाव और सब मनुष्यों में समानता का प्रचार किया गया है।

Award for the Best Film on Social Issues

THE LAMP IN THE NICHE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer Girish Karnad.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Girish Karnad.

Citation

The Award for the Best Film on Social Issues of 1989 is given to the THE LAMP IN THE NICHE for being an illuminating exposition of a very humane philosophy, preaching universal brotherhood, harmony and equality of all living beings.

गिरीश कनार्ड ने देश व विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद मद्रास में आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस में मैनेजर के रूप में काम किया। उन्होंने नाटककार के रूप में अपना जीवन बहुत पहले ही शुरू कर दिया था। 1961 में उनका पहला नाटक **ययाति** प्रकाशित हुआ। उनके सभी नाटकों का सफल मंचन हुआ है। वे दो वर्ष तक भारतीय फिल्म एवम् टेलीविजन संस्थान के निर्देशक रहे। उन्होंने फिल्म और टेलीविजन के लिए व्यापक रूप से अभिनय, निर्देशन और लेखन किया है। उनके निर्देशन में बनी लगभग सभी फिल्में खूब सराही गई हैं। उनकी फिल्मों— **काडू** और **ओन्डानोंडू कलाडली** को क्रमशः 1975 और 1979 में भारत के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भारतीय प्रविष्टि के रूप में शामिल किया गया। वे 1976 से 1979 तक कर्नाटक संगीत एकादमी के अध्यक्ष रहे और वर्तमान में संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के अध्यक्ष हैं।

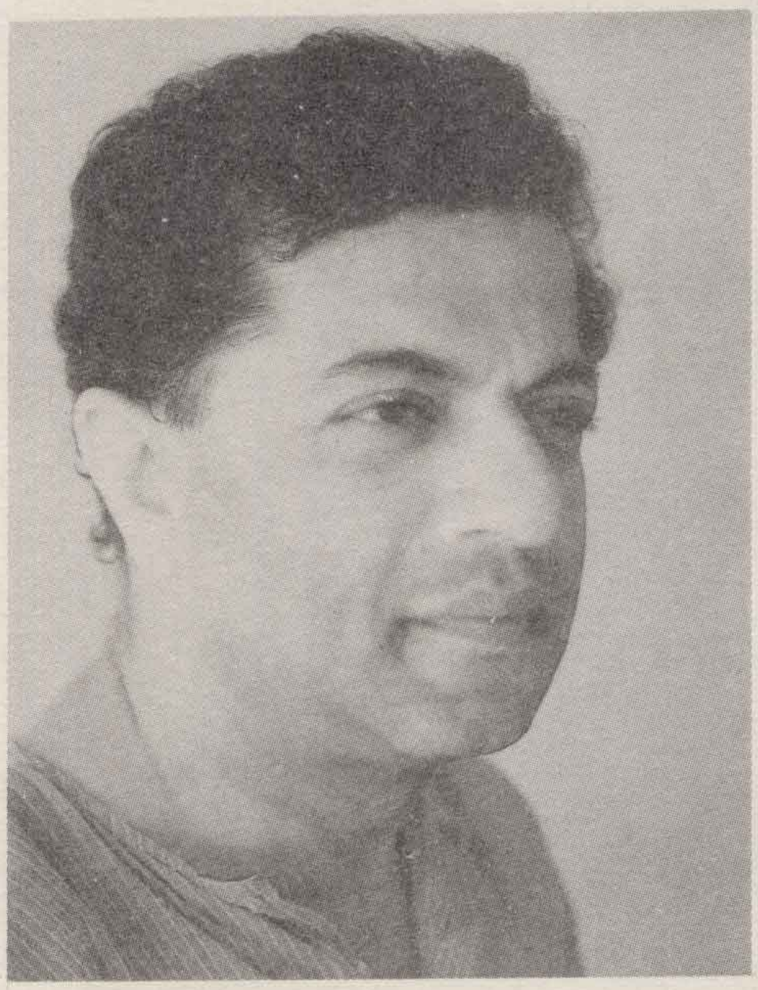

GIRISH KARNAD followed up his brilliant academic career at home and abroad by joining Oxford University Press in Madras, where he took over as Manager for a short while. His career as a playwright had begun earlier, with YAYATI in 1961. All his plays have been staged with great success. He was Director of the Film and Television Institute of India for two years. He has acted, directed, and written for the cinema and the television. Among the feature films directed by him, all of which have earned critical acclaim, KAADU and ONDANONDU KALADALLI were Indian entries at the International Film Festival of India in 1975 and 1979. Karnad has also been President of the Karnatak Sangeet Natak Akademi (1976-78) and is, at present, the Chairman of the Sangeet Natak Akademi, New Delhi.

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म पुरस्कार

सेर अलंग
और
यूं सिखलाएं आखर

निर्माता **बागवानी विशेषज्ञ, करबी आंगलौंग (सेर अलग)** और **मैसर्स रमेश अशर फिल्मस् (यूँ सिखलाएं आखर)** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **इन्द्रजीत नारायण देब (सेर अलंग)** और **रमेश अशर (यूँ सिखलाएं आखर)** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फिल्म का 1989 का पुरस्कार **सेर अलंग** और **यूं सिखलाएं आखर** को सिनेमा के माध्यम से प्रेरक सन्देशों को सूझबूझ के साथ प्रस्तुत करने के लिए प्रदान किया गया है।

Award for the Best Educational/Motivational/ Instructional Film

SER ALANG and YUN SIKHLAYEN AKHAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers, Horticulturist, Karbi Anglong (for SER ALANG) and M/s Ramesh Asher Films (for YUN SIKHLAYEN AKHAR).

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000 to the Directors, Indrajit Narayan Deb (for SER ALANG) and Ramesh Asher (for YUN SIKHLAYEN AKHAR).

Citation

The Award for the Best Educational/Motivational/Instructional Film of 1989 is given jointly to SER ALANG and YUN SIKHLAYEN AKHAR for their sensitive handling of motivational messages through the medium of cinema.

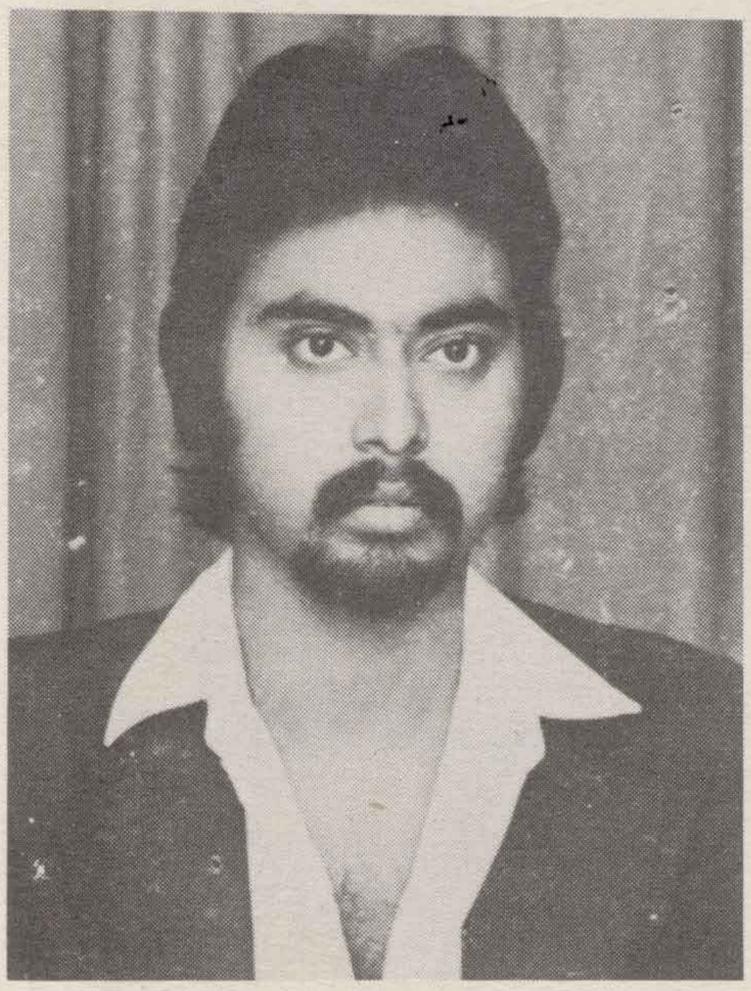

इन्द्रजीत नारायण देब असमिया फिल्म निर्माता द्विजेन्द्र नारायण देब और सुप्रभा देवी के पुत्र हैं और उनका बचपन फिल्मी वातावरण में बीता। शिलाँग में पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने एक ऐतिहासिक विषय पर आधारित अपने पहले वृत चित्र **पूर्व स्मृति** का निर्माण और निर्देशन किया। इसके साथ ही उन्होंने अपने माता-पिता द्वारा बनाई जा रही फिल्म के मुख्य सहायक निर्देशक के रूप में काम किया। बाद में उन्होंने 6 और वृत्त चित्रों एवं लघु चित्रों का निर्माण और निर्देशन किया।

रमेश अशर ने अर्थशास्त्र में स्नातक की शिक्षा पूरी करने के बाद भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से डिप्लोमा प्राप्त किया। इसके बाद वे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में उपग्रह शिक्षा टेलीविजन प्रयोग परियोजना के लिए काम करने लगे। पिछले 10 वर्षों के दौरान उन्होंने कई विषयों पर वृत्तचित्रों का निर्माण, निर्देशन, सम्पादन और पटकथा लेखन किया है। उन्होंने केतन मेहता की फिल्म **भवनी भवाई** के सम्पादक और सह-निर्माता के रूप में भी काम किया।

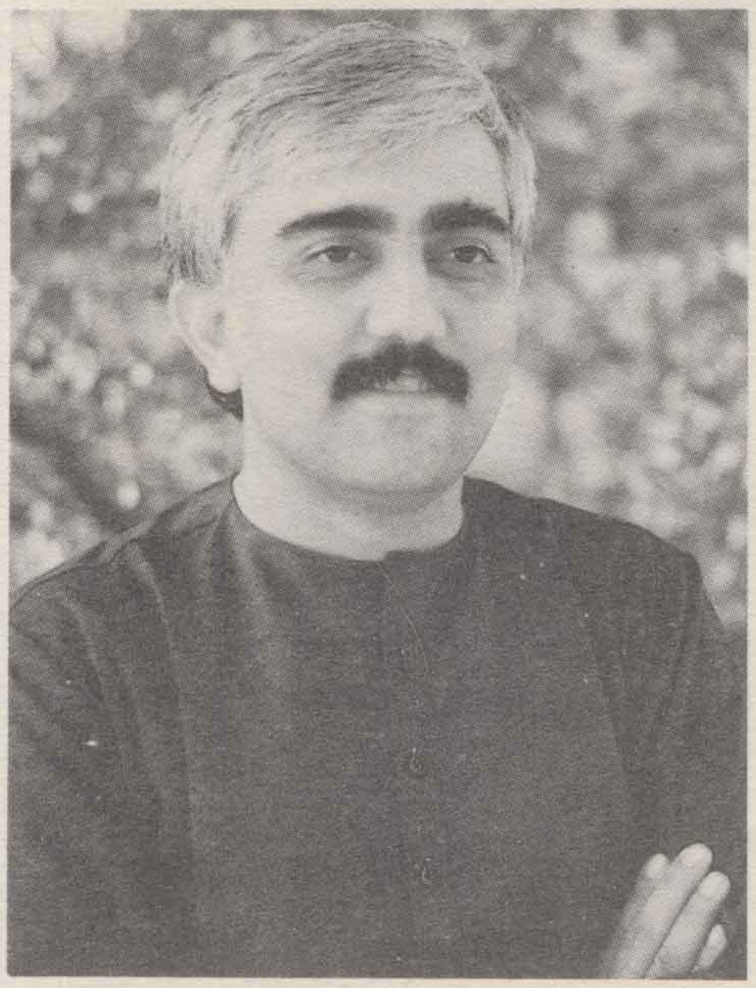

INDRAJIT NARAYAN DEB is the eldest son of Assamese film makers Dwijendra Narayan Deb and Suprabha Devi. He grew up in close association with the Assamese film industry, imbibing the atmosphere of the recording studios and laboratories. After completing his studies in Shillong, he produced and directed his first documentary film, PURBA SMRITI, based on a historical subject. At the same time, he worked as Chief Assistant Director for a film being produced and directed by his parents. Later he produced and directed six more documentaries and short films.

RAMESH ASHER graduated in economics before taking the diploma course in the Film and Television Institute of India. Subsequently, he worked with the Indian Space Research Organization on its Satellite Instructional Television Experiment project. For the last ten years he has been scripting, directing, editing and producing documentaries on a variety of subjects. His only foray into the area of feature films was as editor and co-producer for Ketan Mehta's BHAVNI BHAVAI.

सर्वोत्तम कार्टून चित्र पुरस्कार

माई ट्री

निर्माता **विजय बी. चन्द्रा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **बी.आर. शेंडगे** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

कार्टूनकार **आर.आर. स्वामी** और **वी.एस. शंकरदास** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कार्टून चित्र का 1989 का पुरस्कार **माई ट्री** को मानव की प्रकृति से दूरी को प्रभावशाली ढंग से चित्रित करने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Animation Film

MY TREE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, Vijay B. Chandra.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Directors, B.R. Shendge and R.R. Swamy.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Animators, R.R. Swamy and V.S. Shankardas.

Citation

The Award for the Best Animation Film of 1989 is given to MY TREE for effectively communicating man's alienation from nature.

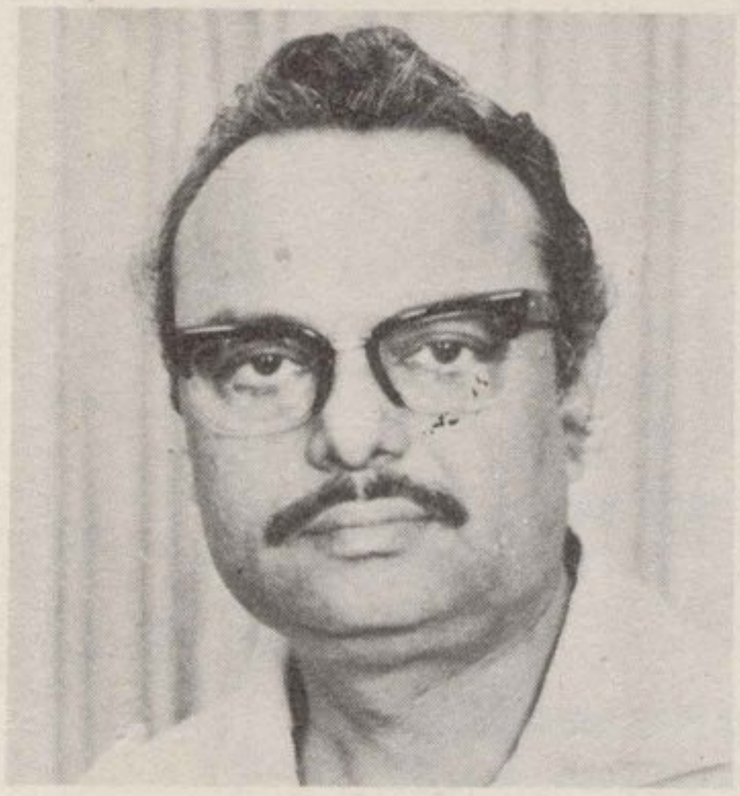

विजय.बी. चन्द्रा को वृत्तचित्र निर्माण के क्षेत्र में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव है। उन्हें जन संचार के लिए फोर्ड फाउंडेशन की फेलोशिप मिली, जिसके अन्तर्गत उन्होंने अनेक देशों में सिनेमा तथा दृश्य-श्रव्य माध्यमों का अध्ययन किया। इस समय वे फिल्म प्रभाग में मुख्य निर्माता हैं। उन्होंने विभिन्न विषयों पर समाचार चित्र, वृत्तचित्र तथा लघु फिल्में तैयार की हैं और कई राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार अर्जित किये हैं।

आर.आर. स्वामी का जन्म 1941 में हुआ। उन्होंने बम्बई के जे.जे. स्कूल आफ आर्ट्स में व्यवहारिक कलाओं का अध्ययन किया। पिछले 22 वर्षों से वे फिल्म प्रभाग और दूदर्शन के लिए कार्टून और ग्राफिक्स बनाने का काम कर रहे हैं।

बी.आर. शेंडगे ने ड्रॉइंग और पेंटिंग में डिप्लोमा प्राप्त किया है। वे 1961 से फिल्म प्रभाग की कार्टून फिल्म इकाई में काम कर रहे हैं और कई प्रकार की लघु कार्टून फिल्मों के निर्माण एवंम् निर्देशन के साथ-साथ उनके पटकथा लेखक और कार्टूनकार भी रहे हैं। उन्हें कई फिल्मों के लिए राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्टरीय पुरस्कार मिले हैं जिनमें से कुछ फिल्में हैं -**अम्बरेला, सिन्थेसिस, लॉ आफ नेचर, प्रैशस नेचर** और **वर्ली पेंटिंग्स**।

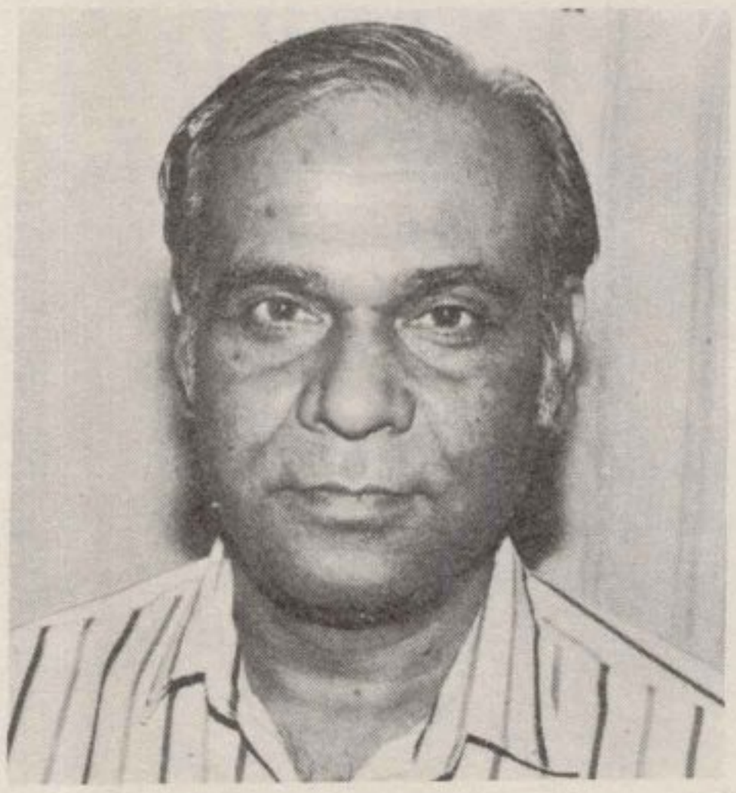

V.B. CHANDRA received a Ford Foundation fellowship in Mass Communication and studied cinema and other audio-visual media in various countries. Today, with more than thirty years' experience in documentary film making, he is the Chief Producer in the Films Division. His films, ranging from News Magazines to documentaries and shorts on a variety of subjects, have won many national and international awards.

R.R. SWAMY was born in 1941. He studied applied arts in the J.J. School of Art in Bombay. For the last twenty-two years he has been working with animation and graphics for the Films Division and Doordarshan.

B.R. SHENDGE is a diploma holder in drawing and painting. He joined the Cartoon Film Unit of Films Division in 1961 and has scripted, animated, directed and produced various types of short animated films. He has won national and international awards for many of his films, including UMBRELLA, SYNTHESIS, LAW OF NATURE, PRECIOUS NATURE and WARLI PAINTINGS.

निर्णायक मण्डल विशेष पुरस्कार

कलामण्डलम् कृष्णनकुट्टी पोडुवल

निर्देशक **के.आर. मोहनन्** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

निर्णायक मण्डल का 1989 का विशेष पुरस्कार **के.आर. मोहनन्** को उनकी फ़िल्म **कलामण्डलम् कृष्णन्कुट्टी पोडुवल** को कथकली नृत्य में ढोल वादक और नर्तक के बीच गहरे सम्बन्ध को प्रस्तुत करने में सिनेमा माध्यम का अति कुशलता के साथ उपयोग करने के लिए दिया गया है।

Special Jury Award

KALAMANDALAM KRISHNANKUTTY PODUVAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, K.R. Mohanan.

Citation

The Special Jury Award of 1989 is given to K.R. Mohanan for his film KALAMANDALAM KRISHNANKUTTY PODUVAL for excellence in the use of cinema in projecting the intricate relationship between the drummer and the dancer in Kathakali.

के.आर. मोहनन् ने भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान से फिल्म निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने केरल सरकार के विभिन्न विभागों के लिए 20 से अधिक वृत्त चित्रों का निर्देशन किया है और 2 फीचर फिल्में **अश्वथामा** और **पुरुषार्थम्** बनाई हैं। उन्हें उनके वृत्तचित्र **दी रेसिंग स्नेक्स** के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। इस समय वे केरल राज्य फिल्म विकास निगम लि॰ में कार्यरत हैं।

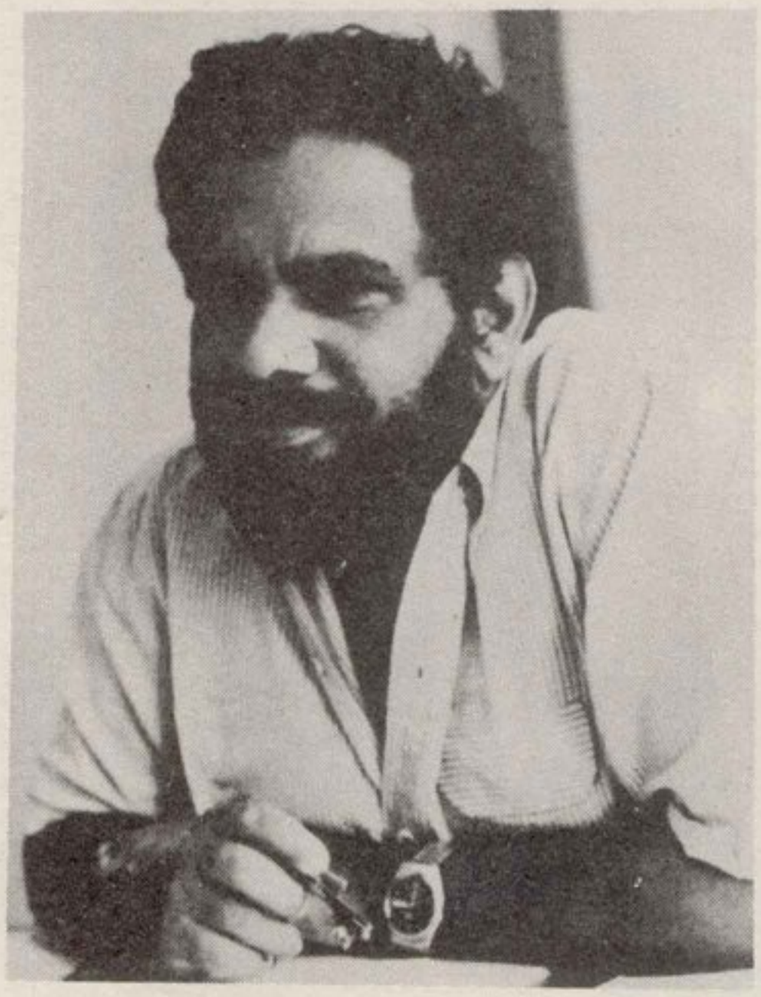

K.R. MOHANAN received his diploma in film direction from the Film and Television Institute of India. He has scripted and directed over twenty documentaries for various departments of the Kerala State Government and has made two feature films, ASWATHAMA and PURUSHARTHAM. He won a National Award for his documentary film, THE RACING SNAKES, and is, at present, with the Kerala State Film Development Corporation.

सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म पुरस्कार (70 मिनट की अवधि तक की फ़िल्में)

बेहुला

निर्माता **राजा मित्रा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **राजा मित्रा** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म का 1989 का पुरस्कार **बेहुला** को रोचक शैली में कथा प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

Award for the Best Short Fiction Film (films not exceeding 70 minutes duration)

BEHULA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, Raja Mitra & Associates.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Raja Mitra.

Citation

The Award for the Best Short Fiction Film of 1989 is given to BEHULA for a story well told.

राजा मित्रा को 1988 में निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार उनकी फिल्म **एकटी जीबन** के लिए प्रदान किया गया है। उनके वृत्तचित्र **स्क्रॉल पेंटर्स आफ बीरभूमि** को पिछले वर्ष सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया। उन्होंने फिल्म प्रभाग, पश्चिम बंगाल सरकार तथा निजी क्षेत्र के कुछ संगठनों के लिए कई वृत्तचित्रों का निर्देशन किया है। उनकी लघु फीचर फिल्म **बेहुला** का इस वर्ष बम्बई में अन्तर्राष्ट्रीय लघु फिल्म समारोह के सूचना वर्ग में प्रदर्शन किया गया। इस समय वे राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा बनाई जा रही फिल्म **ताम्रपत्र** का निर्देशन कर रहे हैं।

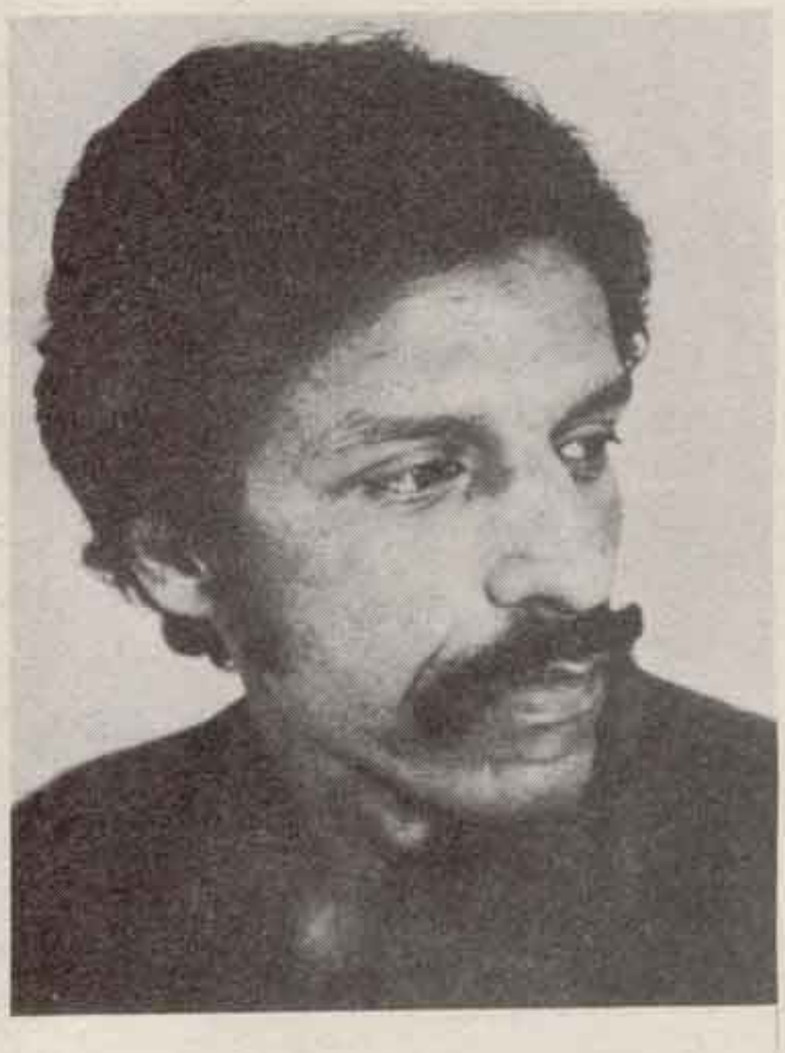

RAJA MITRA won the National Award for the Best First Feature Film of a Director in 1988 for his EKTI JIBAN. His documentary SCROLL PAINTERS OF BIRBHUM won the National Award for the Best Film in Art and Culture of 1988. He has directed several documentaries for Films Division, Government of West Bengal and some private sector organizations. His short feature BEHULA was shown in the Information Section of the International Short Film Festival in Bombay this year. At present he is working on TAMRAPATRA, a feature film co-produced by the National Film Development Corporation and the Government of West Bengal.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

बौय ऑर गर्ल-हाऊ?

निर्माता **बी.आर. शेंडगे** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **आर.आर. स्वामी** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

समाज कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म का 1989 का पुरस्कार **बौय आर गर्ल-हाऊ ?** को एक महत्वपूर्ण संदेश का प्रभावपूर्ण ढंग से चित्रण करने के लिए प्रदान किया गया है।

Award for the Best Film on Family Welfare

BOY OR GIRL—HOW?

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, B.R. Shendge.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, R.R. Swamy.

Citation

The Award for the Best Film on Family Welfare is given to BOY OR GIRL—HOW? for effectively communicating an important message.

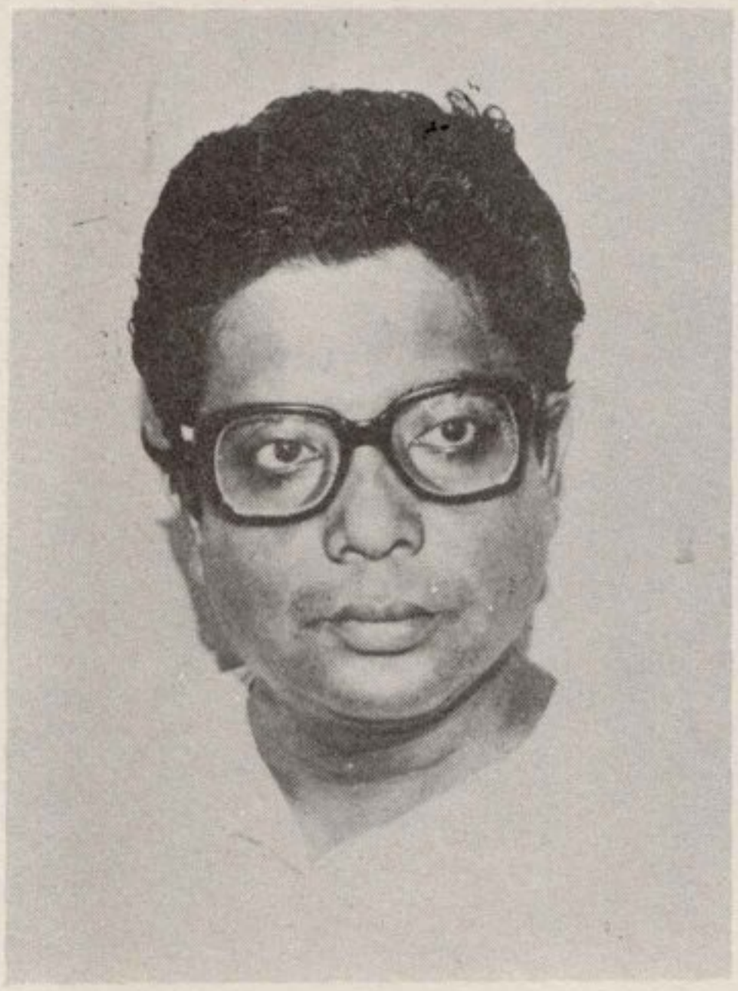

आर.आर. स्वामी का जन्म 1941 में हुआ। उन्होंने बम्बई के जे.जे. स्कूल आफ आर्ट्स में व्यवहारिक कलाओं का अध्ययन किया। पिछले 22 वर्षों से वे फिल्म प्रभाग और दूदर्शन के लिए कार्टून और ग्राफिक्स बनाने का काम कर रहे हैं।

बी.आर. शेंडगे ने ड्रॉइंग और पेंटिंग में डिप्लोमा प्राप्त किया है। वे 1961 से फिल्म प्रभाग की कार्टून फिल्म इकाई में काम कर रहे हैं और कई प्रकार की लघु कार्टून फिल्मों के निर्माण एवंम् निर्देशन के साथ-साथ उनके पटकथा लेखक और कार्टूनकार भी रहे हैं। उन्हें कई फिल्मों के लिए राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं जिनमें से कुछ फिल्में हैं - **अम्बरेला, सिन्थेसिस, लॉ आफ नेचर, प्रशेस नेचर** और **वर्ली पेंटिंग्स।**

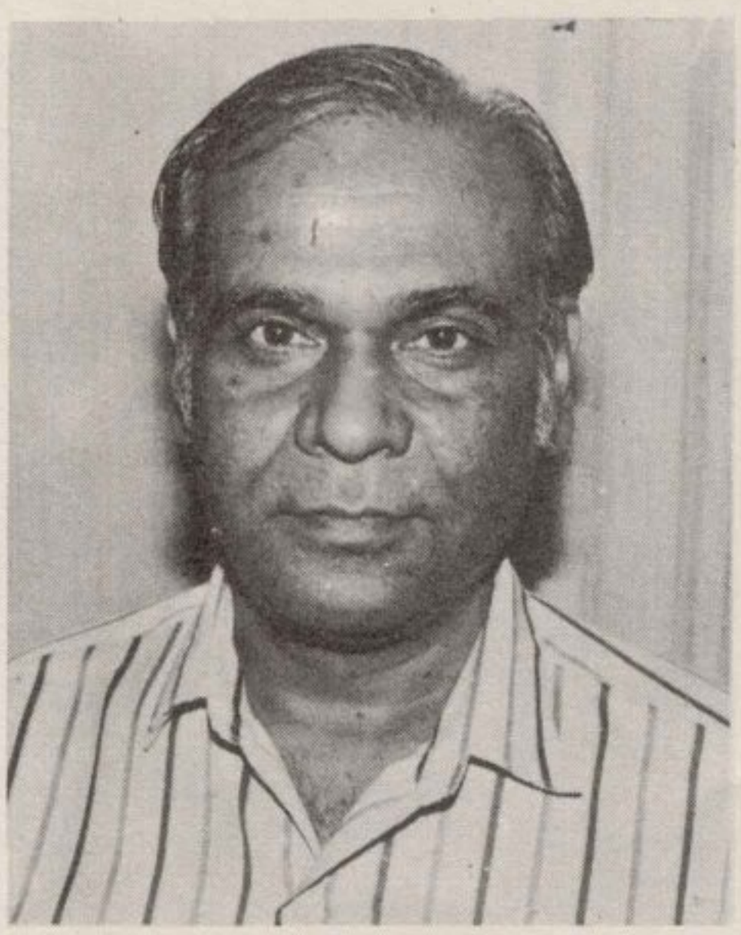

R.R. SWAMY was born in 1941. He studied applied arts in the J.J. School of Art in Bombay. For the last twenty-two years he has been working with animation and graphics for the Films Division and Doordarshan.

B.R. SHENDGE is a diploma holder in drawing and painting. He joined the Cartoon Film Unit of Films Division in 1961 and has scripted, animated, directed and produced various types of short animated films. He has won national and international awards for many of his films, including UMBRELLA, SYNTHESIS, LAW OF NATURE, PRECIOUS NATURE and WARLI PAINTINGS.

पुरस्कार जो नहीं दिए गए

(1) निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम ग़ैर कथाचित्र
(2) सर्वोत्तम खोजी/साहसिक (खेल सहित) फिल्म पुरस्कार
(3) सर्वोत्तम खोजी फिल्म

AWARDS NOT GIVEN

1. Best First Non-Feature Film of a Director.
2. Best Exploration/Adventure Film (to include Sports).
3. Best Investigative Film.

सिनेमा लेखन पुरस्कार

Awards for Writing on Cinema

सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक पुरस्कार

शतरंज के खिलाड़ी (हिन्दी)

सिनेमा: कनक्कुम कवितायुम् (मलयालम)

लेखक **प्रो. सुरेन्द्र नाथ तिवारी (शतरंज के खिलाड़ी)** और **श्रीकुमारन थम्पी (सिनेमा: कनक्कुम कवितायुम्)** को स्वर्ण कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रकाशक: **मध्य प्रदेश फिल्म विकास निगम लि. (शतरंज के खिलाड़ी)** और **साहित्य प्रवर्तक को-ओपरेटिव सोसाईटी लि. (सिनेमा: कनक्कुम कवितायुम)** को स्वर्ण कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक का 1989 का पुरस्कार **प्रो. सुरेन्द्र नाथ तिवारी** को उनकी पुस्तक **शतरंज के खिलाड़ी** के लिए दिया गया है जिसमें उन्होंने साहित्यिक कृति और उसके फ़िल्म रूपान्तरण के बीच दोनों कला शैलियों की मुख्य विशेषताओं की उपेक्षा किये बिना सम्बन्धों का सफलता पूर्वक विश्लेषण किया है।

सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक का 1989 का पुरस्कार **श्रीकुमारन थम्पी** को भी प्रदान किया गया है, जिन्होंने अपनी पुस्तक **सिनेमा : कनक्कुम कवितायुम्** में फ़िल्म कला के विकास का काव्यात्मक विवेचन किया है।

Award for the Best Book on Cinema 1989

SHATRANJ KE KHILADI (Hindi)

CINEMA: KANAKKUM KAVITHAYUM (Malayalam)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the authors, Surendranath Tiwari (for SHATRANJ KE KHILADI) and Sreekumaran Thampi (for CINEMA: KANAKKUM KAVITHAYUM).

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the publishers Madhya Pradesh Film Development Corporation (for SHATRANJ KE KHILADI) and Sahithya Pravarthaka Co-op. Society Ltd. (for CINEMA: KANAKKUM KAVITHAYUM).

Citation

The Award for the Best Book on Cinema for the year 1989 is given to Surendranath Tiwari for his book SHATRANJ KE KHILADI for painstakingly analysing and delineating the interrelationship between a literary masterpiece and its film version, created by a master of the cinema, without overlooking the salient characteristics of each art form.

The Award for the Best Book on Cinema for the year 1989 is also given to Sreekumaran Thampi for his book CINEMA: KANAKKUM KAVITHAYUM for portraying the development of the medium poetically by blending its ethos and technique.

सुरेन्द्र नाथ तिवारी दिल्ली से प्रकाशित एक सामाजिक, आर्थिक और साहित्यक मासिक हिन्दी पत्रिका **'प्रचेता'** के सम्पादक हैं। वे कानपुर से प्रकाशित होने वाली एक और मासिक हिन्दी पत्रिका **उपमा** से भी सम्बद्ध हैं। उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं हैं जिनमें **प्रेमचंद और शरतचन्द्र के उपन्यास: मनुष्य का बिम्ब** भी शामिल है। कई पत्र-पत्रिकाओं में उनके 50 से अधिक लेख प्रकाशित हुए हैं। प्रो. तिवारी ने फिल्मों और नाटकों में अभिनय करने के साथ नाटकों का निर्देशन भी किया है। वे देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में फिल्म समीक्षा पाठ्यक्रमों में राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय की ओर से अध्यापन कार्य करते हैं। वे दिल्ली विश्वविद्यालय में अनेक वर्षों से प्राध्यापक के रूप में काम कर रहे हैं। इन दिनों वे भारतीय नव सिनेमा आंदोलन के बारे में एक पुस्तक लिख रहे हैं।

श्रीकुमारन थम्पी ने 25 वर्ष की आयु में केरल सरकार के सहायक टाऊन प्लैनर के पद को छोड़ कर फिल्म उद्योग में गीतकार, पटकथा लेखक तथा फिल्म निर्माता के रूप में प्रवेश किया। उन्होंने अब तक लगभग 250 गीत लिखे हैं एवं 28 फिल्मों का निर्देशन किया है। वे राष्ट्रीय एवं राज्य पुरस्कार विजेता हैं तथा कन्नड़ एवं मलयालम में 20 फिल्मों का निर्माण किया है। श्रीकुमारन थम्पी मलयालम फिल्म निर्माता संघ के संस्थापक सदस्य तथा मलयालम चलचित्र परिषद् के भूतपूर्व उपाध्यक्ष हैं। **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि॰** की दो समितियों के सदस्य भी हैं। श्रीकुमारन थम्पी की कविता, लघु कहानी तथा उपन्यास संग्रहों का मलयालम भाषा में 20 पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है।

SURENDRANATH TIWARI is the editor of "Pracheta", a socio-economic and literary monthly magazine in Hindi from Delhi, He is also associated with "Upama", a monthly magazine in Hindi, brought out from Kanpur. Among his publications are the book "Premchand aur Saratchandra ke Upanyas: Manushya ka Bimb" and more than fifty articles and papers in different periodicals and journals. Tiwari has also acted in character roles on the screen and on the stage and has directed plays in Hindi. He has been a visiting faculty member of the National Film Archive of India in film appreciation courses conducted in different universities in the country. A senior lecturer for many years in the University of Delhi, he is, at present, involved in writing a book on the New Indian Cinema Movement.

SREEKUMARAN THAMPI resigned from his job as Assistant Town Planner under the Government of Kerala to enter the film world as a lyricist, screenplay writer and film maker at the age of 25. He has composed about 250 lyrics and directed 28 films. He has won National and State Awards and produced 20 films in Malayalam and one in Kannada. Founder Secretary of the Malayalam Film Producers Association, former Vice President of the Malayalam Chalachithra Parishad and a member of two committees of the National Film Development Corporation, Thampi has published about 20 books in Malayalam, including collections of poems, short stories and novels.

सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक पुरस्कार

के.एन.टी. शास्त्री

फ़िल्म समीक्षक **के.एन.टी. शास्त्री** को रजत कमल और 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक का 1989 का पुरस्कार **के.एन.टी. शास्त्री** को सिनेमा की समकालीन परिस्थितियों को चित्रित करने के लिए बीते युग के सौन्दर्य का अद्‌भुत ढंग से सहारा लेने की क्षमता का परिचय देने के लिए दिया गया है। निर्णायक मण्डल ने उनकी इस बात के लिए भी सराहना की है कि उन्होंने फिल्मों के विविध विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है।

Award for the Best Film Critic of 1989

K.N.T. SASTRY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000 to the Film Critic, K.N.T. Sastry.

Citation

The Award for the Best Film Critic of 1989 is given to K.N.T. SASTRY for combining the rare ability to comprehend the quintessential beauty of the bygone era and for reflecting the contemporary trends in cinema. The Jury also appreciates the wide range of topics covered by him.

के.एन.टी. शास्त्री एक सुप्रसिद्ध पत्रकार हैं और वे राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय से कई वर्षों से सम्बद्ध हैं। राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय की ओर से उन्होंने एल.वी. प्रसाद, बी. नागी रेड्डी तथा पी. भानुमति पर सूचना मूलक पुस्तकें भी तैयार की हैं। ब्रिटिश पुस्तकालय, लन्दन ने इन्हें भारतीय सिनेमा पर प्रकाशित विश्व कोश के लिए तेलुगु सिनेमा संकलन का कार्य सौंपा है। के.एन.टी. शास्त्री पुरस्कार विजेता फिल्म **दासी** में शोधकर्ता के रूप में एवं ग़ैर-कथाचित्र **मा उरू** में पटकथा सहायक के रूप में सम्बद्ध रहे हैं। आदिवारम् आन्ध्र ज्योति में **चलन चित्रम्** के नाम से इनके लेख बहुत लोकप्रिय हैं। इन्होंने तेलुगु सिनेमा पर निबन्ध संग्रह का सम्पादन भी किया है। के.एन.टी. शास्त्री आजकल डैक्कन क्रोनीकल में सहायक सम्पादक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

K.N.T. SASTRY, a seasoned journalist, has been associated with the National Film Archive of India (NFAI) for many years. He has prepared for them a number of monographs including those on L.V. Prasad, Nagi Reddy, Chakrapani and P. Bhanumathi. The NFAI and the British Library, London, have recently entrusted him with the compilation of the section on Telugu cinema for their encyclopaedia on Indian cinema to be brought out by the British Library. K.N.T. Sastry was associated with the award-winning film, DAASI, as a researcher and assisted with the script of MAA OORU, a documentary which also won a National Award. His feature "Chalana Chitram" in Adivaram Andhra Jyothi was immensely popular. He has also edited a collection of essays on Telugu cinema. At present, he is an Assistant Editor in the Deccan Chronicle.

कथासार : कथाचित्र
Synopses : Feature Films

अन्ध दिगंत

उड़िया/रंगीन/96 मिनट

निर्माण: वोक्स विजुअल्स प्राइवेट लिमिटेड **निर्देशन:** मनमोहन महापात्र **पटकथा:** प्रकाश पात्र, मनमोहन पात्र **मुख्य अभिनेता:** अरुण नन्दा **मुख्य अभिनेत्री:** जया स्वामी **सह अभिनेता:** शरत पुजारी **सह-अभिनेत्री:** मणि माला देवी **बाल कलाकार:** अमीया **छायांकन:** दिलीप राय **ध्वनि आलेखन:** एन.बेरिक, सी प्रसाद, एम. नाथन **सम्पादन:** रवि पटनायक **कला निर्देशन:** बन्छा निधि पटनायक, भागवत नायक **संगीत निर्देशन:** अजय घोष

शंकर गांव के जमींदार नारायण चौधरी के धान के खेतों में मजदूरी करके अपना गुजारा करता है। अचानक उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाती है और वह नई पत्नी राधा को ले आता है। राधा का पिछला जीवन अच्छा नहीं रहा और उसकी पहले की शादी से रत्न नाम का एक बच्चा है। शंकर और राधा को सभी लोग तंग करते हैं। गांव वाले राधा के वहां रहने पर एतराज करते हैं क्योंकि इससे गांव की बदनामी होगी। जमींदार और उसका मैनेजर राधा को फुसलाना चाहते हैं। राधा अपने पति के साथ वैवाहिक जीवन बिताना चाहती है और जमींदार को पास नहीं फटकने देती। इससे नारायण चौधरी बौखला उठता है। गरीबी और अपमान से तंग आकर वे दोनों कहीं बेहतर रोजगार की तलाश में गांव छोड़ देते हैं। उन्हें आशा है कि वे अपना भविष्य पहले से अच्छा बना सकेंगे।

ANDHA DIGANTA

Oriya/colour/96 minutes

Producer: Vox Visuals Pvt. Ltd. **Director:** Manmohan Mahapatra. **Screenplay Writers:** Prakash Patra, Manmohan Mahapatra. **Leading Actor:** Arun Nanda. **Leading Actress:** Jaya Swami. **Supporting Actor:** Sarat Pujari. **Supporting Actress:** Manimala Devi. **Child Artiste:** Amiya. **Cinematographer:** Dilip Roy. **Audiographers:** N. Barik, C. Prasad, M. Nathan. **Editor:** Rabi Patnaik. **Art Directors:** Banchhanidhi Patnaik, Bhagabata Nayak. **Music Director:** Ajay Ghose.

Shankar makes a living toiling in the paddy fields of the zamindar Narayan Chowdhury. When his wife dies suddenly, he goes away to the town, only to come back with a new wife Radha. Radha, as everyone soon knows in the village, is a woman with a dubious past and a child, Ratan, by an earlier marriage. Shankar and Radha find themselves under pressure from all sides. The villagers resent Radha's presence and worry that she will give them a bad name. The zamindar and his manager lust after her. Radha, determined to lead a normal existence with her husband, refuses all advances and only manages to anger Narayan Chowdhury. Poverty and harassment lead the couple to finally leave the village in search of better employment. But they leave with the hope of making a future for themselves against all odds.

छन्दनीड़

बंगला/रंगीन/97 मिनट

निर्माण: अभिषेक प्रोडक्शन्स **निर्देशन/पटकथा/संगीत निर्देशन:** उत्पलेंदु चक्रवर्ती **मुख्य अभिनेत्री:** अंजना बनर्जी **सह-अभिनेता:** सत्य बनर्जी **सह-अभिनेत्री:** माधवी चक्रवर्ती **छायांकन:** गिरीश पढियार **ध्वनि आलेखन:** दुर्गादास मित्रा **सम्पादन:** बुलू घोष **कला निर्देशन:** प्रसाद मित्रा **गीत:** शतरूपा सान्याल **पार्श्व गायक:** अजय चक्रवर्ती, बालमुरली कृष्ण **पार्श्व गायिका:** शतरूपा सान्याल

सीमा एक समृद्ध और सांस्कृतिक परिवार की लड़की है और भरत नाट्यम् नृत्य करती है। वह अपने पिता की इच्छा का विरोध करते हुए मध्यंवर्गीय परिवार के एक नेत्रहीन शास्त्रीय गायक से विवाह कर लेती है। उसका पति अयन अपनी आर्थिक असुरक्षा के दबाव में अपनी कला से समझौता करके एक लोकप्रिय फिल्म का संगीत देता है। फिल्म के निर्माता उसे धोखा देते हैं और वह लोकप्रिय संगीत में अपने पाँव जमाने में असफल रहता है। अयन को लगता है कि वह अपनी पत्नी से भी काफी दूर हो गया है। सीमा बहुत दुखी है लेकिन वह हिम्मत नहीं छोड़ती और शास्त्रीय नृत्य की साधना करती हुई बहुत प्रसिद्ध हो जाती है। किन्तु अयन से अलग होने के मानसिक तनाव के कारण एक बार नृत्य के दौरान उसके पांव में मोच आ जाती है। अयन उसके पास आकर क्षमा मांगता है। वे दोनों समुद्र के किनारे जाते हैं, जहाँ सीमा को महसूस होता है कि उसके मन की पीड़ा के साथ-साथ पांव का दर्द भी ठीक हो गया और वह रेत पर झूमते हुए नाचने लगती है।

CHHANDANEER

Bengali/colour/97 minutes

Producer: Abhishek Productions. **Director/Screenplay Writer/Music Director:** Utpalendu Chakraborty. **Leading Actress:** Anjana Banerjee. **Supporting Actor:** Satya Banerjee. **Supporting Actress:** Madhabi Chakraborty. **Cinematographer:** Girish Padhiar. **Audiographer:** Durgadas Mitra. **Editor:** Bulu Ghosh. **Art Director:** Prasad Mitra. **Lyricist:** Satarupa Sanyal. **Male Playback Singers:** Balamurali Krishna, Ajoy Chakraborty. **Female Playback Singer:** Satarupa Sanyal.

Seema, a dedicated Bharatnatyam dancer, is the daughter of a rich and cultured family, who marries a blind classical singer from a middle-class home against the wishes of her autocratic father. The love nest they build is threatened by her husband Ayan's sense of financial insecurity, which leads him to compromise his art by providing the musical score for a popular film. Duped by the producers and unable to find a footing in the world of popular music, Ayan finds that he has completely alienated his wife as well. Seema, heartbroken but determined, follows her own vocation and rises to great heights with her dance. But the emotional stress of her separation from Ayan leads her to sprain her ankle during a performance. Ayan comes to beg her forgiveness. At the seaside together, Seema realizes that her foot has healed along with her heart and she dances in ecstasy on the sands.

डैडी

हिन्दी/रंगीन/130 मिनट

निर्माण : दूरदर्शन **निर्देशन :** महेश भट्ट **पटकथा/गीत :** सूरज सनीम **मुख्य अभिनेता :** अनुपम खेर **मुख्य अभिनेत्री :** पूजा भट्ट **सह-अभिनेता :** मनोहर सिंह **सह-अभिनेत्री :** सोनी राजदान **बाल कलाकार :** साक्षी भट्ट, शाहीन भट्ट **छायांकन :** अशोक बहल **कला निर्देशन :** मधुकर एस. शिन्दे **वेशभूषा :** यशोधरा राय **संगीत निर्देशन :** राजेश रोशन **पार्श्व गायक :** तलत अजीज

पूजा एक युवा माडल है। उसे एक अनजान आदमी बार-बार फोन करके उससे प्यार जताता है। पूजा का दादा एक प्रभावशाली व्यक्ति है और वह पता लगा कर पूजा को बताता है कि फोन करने वाले आदमी को पुलिस ने पकड़ लिया है। जब वह अजनबी व्यक्ति उसके जीवन में फिर आता है तो उसे पता चलता है वह कोई और नहीं उसका पिता है। पूजा अपनी स्वर्गीय मां की पुरानी डायरी में पढ़ती है कि उसका पिता अनुपम प्रसिद्ध गायक था और पूजा की मां से मिलने से पहले ही वैवाहिक जीवन नष्ट हो गया था। अनुपम की पत्नी ने उसे तलाक देने से इंकार कर दिया था लेकिन तब तक पूजा का जन्म होने वाला था।

जब पूजा अपने पिता को घर लाती है तो उसे पता चलता है कि उसे शराब की लत पड़ चुकी है। उसे यह भी पता चलता है कि उसने उसकी मां की हत्या की थी। अनुपम बताता है कि सोनी झगड़ा करने के बाद एक दुर्घटना में मारी गई थी। इसी अपराध बोध के कारण अनुपम ने अपने को तबाह कर दिया। अब पूजा उसे फिर से सामान्य बनाना चाहती है और दुनिया की नजरों में अपने डैडी को फिर से इज्जत दिलाना चाहती है।

DADDY

Hindi/colour/130 minutes

Producer: Doordarshan. **Director:** Mahesh Bhatt. **Screenplay Writer/ Lyricist:** Suraj Sanim. **Leading Actor:** Anupam Kher. **Leading Actress:** Pooja Bhatt. **Supporting Actor:** Manohar Singh. **Supporting Actress:** Soni Razdan. **Child Artistes:** Sakshi Bhatt, Shaheen Bhatt. **Cinematographer:** Ashok Behl. **Audiographer:** Uday Inamati. **Editor:** Dimpy Behl. **Art Director:** Madhukar S. Shinde. **Costume Designer:** Yashodhara Roy. **Music Director:** Rajesh Roshan. **Male Playback Singer:** Talat Aziz.

Pooja, a young model, is scared by anonymous calls made by a man who claims to love her. Her grandfather, an influential person, traces one of the calls and tells Pooja that the man has been handed over to the police. When the stranger appears in her life again, she is reluctantly informed that he is her father. In her dead mother's old diary, Pooja reads that her father, Anupam, was a well-known singer, whose marriage was already ruined when he met Soni, Pooja's mother. Anupam's wife refused to divorce him, but Pooja was already on the way and they set up home together against the wishes of Pooja's grandparents. When Pooja brings her father home, she discovers that he is an alcoholic. She is also told that he killed her mother. Anupam reveals that Soni died in an accident, after quarrelling with him. Anupam, left with his guilt, ruined himself. Now, Pooja insists on bringing him back to normalcy and redeeming him in the eyes of the world.

गणशत्रु

बंगला/रंगीन/100 मिनट

निर्माण : राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि॰ **निर्देशन/पटकथा/संगीत निर्देशन :** सत्यजीत राय **मुख्य अभिनेता :** सौमित्र चटर्जी **मुख्य अभिनेत्री :** रूमा गुहाठाकुर्ता **सह-अभिनेता :** धृतिमान चटर्जी **सह-अभिनेत्री :** ममता शंकर **छायांकन :** बरुण राहा **ध्वनि आलेखन :** सुजीत सरकार **सम्पादन :** दुलाल दत्ता **कला निर्देशन :** अशोक बोस **वेशभूषा :** बबलू दास, रतन लाल

पश्चिम बंगाल में एक छोटा-सा शहर है चंडीपुर। यहाँ पर हाल में एक मन्दिर बना है, जिससे शहर की आमदनी बढ़ गई है। मन्दिर को विशेष रूप से पवित्र माना जाता है और बड़ी संख्या में लोग यहाँ आकर इसका पवित्र जल पीते हैं और सुन्दर वातावरण का आनन्द लेते हैं। स्थानीय अस्पताल के एक वरिष्ठ डाक्टर को पता चलता है कि मन्दिर के पवित्र पानी के कारण उस इलाके में कई रोग पैदा हो रहे हैं। वह मन्दिर को बन्द कराने और पानी को साफ करने का अभियान चलाता है जिसमें अखबारों के लोग पहले तो मदद करने को तैयार हो जाते हैं लेकिन जब उन्हें पता चलता है कि डाक्टर का भाई जो कि नगर परिषद् का अध्यक्ष है, मन्दिर को बन्द करने का विरोध करेगा तो वे पीछे हट जाते हैं। निहित स्वार्थों वाले लोग कई तरह के उल्टे-सीधे काम करके डाक्टर को अलग-थलग कर देते हैं और उसे लोगों का शत्रु घोषित करते हैं। डाक्टर निराश हो जाता है किन्तु जब उसे लगता है कि शहर के शिक्षित युवक उसका साथ देने को तैयार हैं तो वह संघर्ष करने को तैयार हो जाता है।

GANASHATRU

Bengali/colour/100 minutes

Producer: National Film Development Corporation. **Director/Screenplay Writer/Music Director:** Satyajit Ray. **Leading Actor:** Soumitra Chatterjee. **Leading Actress:** Ruma Guhathakurta. **Supporting Actor:** Dhritiman Chaterji. **Supporting Actress:** Mamata Shankar. **Cinematographer:** Barun Raha. **Audiographer:** Sujit Sarkar. **Editor:** Dulal Dutta. **Art Director:** Ashoke Bose. **Costume Designers:** Bablu Das, Ratanlal.

Chandipur, a small town in West Bengal, is dependent on the recently erected temple for its growing revenue. The temple attracts a stream of visitors who come to drink its holy water and enjoy the healthy climate of the town. The elderly doctor in the local hospital discovers that the holy water of the temple is actually responsible for a sudden eruption of water-borne diseases in the area. At first the self-professed liberals of the press are willing to join his campaign to close down the temple and decontaminate the water. But once they realize that the doctor's brother, the influential chairman of the municipal council, will fight the closure of the temple, they swiftly change sides. By a series of manipulative acts, the vested interests manage to isolate the doctor and condemn him as an enemy of the people. Disgusted, the rationalist doctor is ready to fight his battle alone, when he finds that the educated youth of the town are rallying behind him.

गीतांजलि

तेलुगु/रंगीन/130 मिनट

निर्माण: भाग्यलक्ष्मी एन्टरप्राइसिस **निर्देशन-पटकथा:** मणि रत्नम् **मुख्य अभिनेता:** नागार्जुन **मुख्य अभिनेत्री:** गिरिजा **सह-अभिनेता:** विजय कुमार **सह-अभिनेत्री:** सुमित्रा **बाल कलाकार:** नीना राजन **छायांकन:** पी.सी. श्रीराम **ध्वनि आलेखन:** एन. पान्डूरंगन **सम्पादन:** लेनिन **कला निर्देशन:** थोट्टा थरानी **वेशभूषा:** राजू **संगीत निर्देशन:** इलया राजा **गीत:** वेतुरी **पार्श्व गायक:** एस.पी. बालसुब्रमण्यम **पार्श्व गायिका:** चित्रा

प्रकाश एक मेधावी छात्र है और उसने अभी-अभी विश्वविद्यालय की शिक्षा पूरी की है। अचानक उसे पता चलता है कि उसे ल्यूकेमिया रोग है और वह केवल कुछ दिन का ही मेहमान है। वह मरने के लिए पहाड़ों पर जाता है। ऊटी में उसकी मुलाकात एक तेज़-तर्रार लड़की गीतांजलि से होती है जिसे उसके साथ छेड़छाड़ करने में बड़ा मज़ा आता है। एक रात उसके व्यवहार से दुखी होकर वह पहाड़ पर उसे अकेली छोड़ कर लौट जाता है। तभी उसे मालूम होता है कि गीतांजलि को दिल की बीमारी है और उसे इसका पूरा पता है। उसके हंसी-मज़ाक के व्यवहार पर वह चकित होता है और उसके साहस से प्रभावित होकर उसे मित्र बना लेता है। जब गीतांजलि को पता चलता है कि प्रकाश भी स्वस्थ दिखाई देने के बावजूद मौत की घड़ियां गिन रहा है तो वह उसे चले जाने को कहती है किन्तु उससे अलग होने पर उसे दुख होता है और वह बीमार पड़ जाती है। गीतांजलि के घर के लोग प्रकाश को उससे मिलने से मना करते हैं क्योंकि इससे उसके दिल को चोट लग सकती है। बाद में वे दोनों भविष्य की परवाह न करते हुए एक-दूसरे के निकट आ जाते हैं।

GEETHANJALI

Telugu/colour/130 minutes

Producer: Bhagyalakshmi Enterprises. **Director/Screenplay Writer:** Mani Rathnam. **Leading Actor:** Nagarjuna. **Leading Actress:** Girija. **Supporting Actor:** Vijaykumar. **Supporting Actress:** Sumitra. **Child Artiste:** Baby Neena Rajan. **Cinematographer:** P.C. Sriram. **Audiographer:** N. Pandurangan. **Editor:** Lenin. **Art Director:** Thotta Tharani. **Costume Designer:** Raju. **Music Director:** Ilayaraja. **Lyricist:** Veturi. **Male Playback Singer:** S.P. Balasubramanium. **Female Playback Singer:** Chitra.

Prakash, a brilliant student just out of the university, suddenly discovers that he has leukaemia and that his days are numbered. He goes to the hills to die and, at Ooty, comes across a lovely, boisterous girl, Geethanjali, who takes great pleasure in teasing him. Annoyed, he leaves her on the cold hillside one night. Later, feeling sorry, he goes back to fetch her and learns that she suffers from a congenital heart disease and is aware of it. Surprised by her enormous good spirits, Prakash befriends her and comes to love her for her courage. When Geethanjali learns that Prakash, an apparent symbol of health, is also waiting for death, she asks him to go away. The separation tells upon her and she falls ill. Prakash is discouraged by the family from meeting her for fear of upsetting her. Yet, when she opens her eyes at the hospital, she asks for Prakash. The two young people come together again, defying a future that does not exist.

जम्बू सवारी

कन्नड़/रंगीन/132 मिनट

निर्माण/निर्देशन: के.एस.एल. स्वामे (ललिता रवि) **पटकथा/कला निर्देशन:** सुरेश बी. **मुख्य अभिनेता:** जयन्त **मुख्य अभिनेत्री:** कला **सह-अभिनेता:** बी.ए.एस. प्रसन्ना **मुख्य अभिनेत्री:** भार्गवी नारायण **बाल कलाकार:** बीनू **छायांकन:** आर. मन्जुनाथ **ध्वनि आलेखन:** के.एस. कृष्णमूर्ति **सम्पादन:** सुरेश अर्स **वेशभूषा:** अखिला तंदोर **संगीत निर्देशन:** विजय भास्कर **गीत:** वेंकटेशमूर्ति, एस.एस. कुलकर्णी, डोडा रंगेगौडा, रूद्रमूर्ति शास्त्री **पार्श्व गायक:** रवि **पार्श्व गायिका:** छाया, कुसुम, मंजुला, मंजुला गुरू.

12 वर्षीय बालक सांबा एक छोटे से गांव में अपने दादा के साथ रहता है। वे बहुत गरीब हैं। एक बार वह कुछ पैसे बचा कर लाटरी का टिकट खरीदता है और उसे लाटरी में प्यारा सा हाथी का सफेद बच्चा मिलता है। लेकिन उसके दादा हाथी का खर्चा उठाने की हिम्मत नहीं रखते। इसके बावजूद सांबा और उसके दोस्त हाथी को छोड़ने को तैयार नहीं हैं और वे हाथी के साथ खेलते कूदते मजे से समय बिताते हैं। गांव के बड़े-बूढ़े हाथी की गतिविधियों से परेशान हैं और वे उसे गांव से निकालने की योजना बनाते हैं। गांव का मुखिया इसके लिये वन अधिकारी की मदद मांगता है। स्कूल की अध्यापिका, जिसे बच्चों से सहानुभूति है, उन्हें यह समझाने की कोशिश करती है कि हाथी के बच्चे को जंगल में भेजना अच्छी बात है क्योंकि वह वहाँ पर ज़यादा खुश रहेगा। लेकिन बच्चे इसके लिए तैयार नहीं होते।

JAMBOO SAVAARI

Kannada/colour/132 minutes

Producer/Director: K.S.L. Swame (Lalitha Ravee). **Screenplay Writer/Art Director:** Suresha B. **Leading Actor:** Master Jayanth. **Leading Actress:** Kala. **Supporting Actor:** B.A.S. Prasanna. **Supporting Actress:** Bhargavi Narayan. **Child Artiste:** Master Binoo. **Cinematographer:** R. Manjunath. **Audiographer:** K.S. Krishnamurthy. **Editor:** Suresh Urs. **Costume Designer:** Akhila Tandor. **Music Director:** Vijayabhaskar. **Lyricists:** Venkatesha Murthy, S.S. Kulkarni, Dodda Range Gowda, Rudra Murthy Sastry. **Male Playback Singer:** Ravee. **Female Playback Singers:** Chhaya, Kusuma, Manjula, Manjula Guru.

Twelve-year-old Samba lives in poverty with his grandparents in a small village. A lottery ticket bought with his lunch money wins for Samba a lovely white baby elephant, something that his grandfather cannot afford to keep. But Samba and his young friends of the village refuse to give him up and share many moments of joy and adventure with him. The elders of the village, not amused by the elephant's activities, plan to send it away from the village and the headman seeks the help of the forest offical. The school teacher who sympathizes with the children, tries to convince them that, after all, the elephant will be happiest in the forest. But the children are not convinced.

काल अभिरती

बंगला/रंगीन/120 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा : अमिताभ चक्रवर्ती **मुख्य अभिनेता :** सौम्य देव बसु **मुख्य अभिनेत्री :** रंजावती सरकार **सह-अभिनेता :** बादल सरकार **सह-अभिनेत्री :** ऋता चक्रवर्ती **छायांकन :** शशिकान्त अनन्तचारी **ध्वनि आलेखन :** चिन्मय नाथ, जयदीप घोष **सम्पादन :** महादेव शी **कला निर्देशन :** रूप चन्द कुन्डू **संगीत निर्देशन :** प्रसून मित्रा **पार्श्व गायक :** अचिन्त्य चौधरी

यह फिल्म एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो अपनी मौत से चिंतित है। वह अपने पुराने बहुत बड़े मकान में एकमात्र सुरक्षित कोने में रहता है। उसे दिन भर अपनी मौत की परछाई दिखाई देती रहती है। वह सामान्य जीवन की अलग-अलग संभावनाओं के बारे में चिन्तन करता रहता है और इन सभी संभावनाओं का अन्त अचानक मौत में होता है। उसके सामने उसकी दयालु भोली-भाली और चुपचाप रहने वाली विधवा मां का चित्र भी उभरता है। यह व्यक्ति अपने भावों को चित्रों या कथनों के रूप में व्यक्त करने की कोशिश करता है किन्तु अन्त में वह अपनी भ्रान्त कल्पनाओं में खो जाता है जब वह अपने चित्रों को जलाने का प्रयास करता है। उसकी कल्पना के पात्र तब तक उस आग के चारों ओर नृत्य करते रहते हैं जब तक उसकी मां का चित्र उन चित्रों को जादुई ढंग से परे नहीं कर देता। वे सभी चित्र मंत्रमुग्ध भाव से उसकी मां का अनुसरण करते हुए प्रस्थान करते हैं।

KAAL ABHIRATI

Bengali/colour/120 minutes

Producer/Director/Screenplay Writer: Amitabh Chakraborty. **Leading Actor:** Soumya Deb Basu. **Leading Actress:** Ranjabati Sirkar. **Supporting Actor:** Badal Sircar. **Supporting Actress:** Rwita Chakraborty. **Cinematographer:** Shashikanta Anantachari. **Audiographers:** Chinmoy Nath, Joydeep Gosh. **Editor:** Mahadeb Shi. **Art Director:** Roopchand Kundu. **Music Director:** Presun Mitra. **Male Playback Singer:** Achintya Chowdhury.

The film is about a man who is obsessed with his own death. He lives in the only intact corner of a large old house fallen into decay. He spends his days haunted by images of his death. His mind plays with different possibilities of normal existence, all of which end in his sudden, violent death. Across these images flits the image of his widowed mother, silent, gentle, compassionate. The man tries to express his obsessions in the form of sketches or bits of narrative. Finally, he is himself absorbed into his hallucinations, when he attempts to burn the sketches. The characters of his imagination dance around the fire till they are magically drawn away by the image of the widow. They all go, as in a trance, following her into eternity.

कलत नाकलत

मराठी/रंगीन/155 मिनट

निर्माण : स्मिता तलवालकर **निर्देशन :** कंचन नायक **पटकथा :** एस.एन. नावरे **मुख्य अभिनेता :** सविता प्रभुने **सह-अभिनेता :** अशोक सराफ **सह-अभिनेत्री :** अश्विनी भावे **बाल कलाकार :** मृण्मयी चंदोरकर, ओमेया आम्ब्रे **छायांकन :** राजन् किनागी **ध्वनि आलेखन :** मनोहर आम्बेरकर **सम्पादन :** विश्वास-अनिल **कला निर्देशन : मेघा पनशिकर, विवेक देशपांडे वेशभूषा :** स्मिता तलवालकर, नीता नरदेकर **संगीत निर्देशन :** आनन्द मोडक **गीत :** सुधीर मोघे **पार्श्व गायक :** रवीन्द्र साठे **पार्श्व गायिका :** अनुराधा पौडवाल, आशा भोंसले

मनोहर एक प्राइवेट कम्पनी में अधिकारी है और अपनी पत्नी उमा तथा दो बच्चों के साथ सुखी जीवन बिता रहा है। उसकी मुलाकात अपने दफ़्तर के एक भूतपूर्व कर्मचारी की विधवा मनीषा से होती है जो वहाँ नौकरी पाने के लिए आती है। मनीषा को दफ़्तर में काम करते हुए काफी परेशानी होती है क्योंकि उस कम्पनी में पहले कभी भी कोई महिला कर्मचारी नहीं रही। मनोहर और उसकी पत्नी दोनों को मनीषा के प्रति सहानुभूति है और मनोहर उसकी मदद करने की कोशिश करता है। ईर्ष्या के कारण एक कर्मचारी उन दोनों के बारे में गलत अफवाहें फैला देता है और उसकी पत्नी उमा भी मनोहर पर शक करने लगती है। तभी मनोहर और मनीषा किसी कमजोर क्षण में एक दूसरे के प्रति आकर्षित हो जाते हैं, लेकिन बाद में उन्हें अपराध बोध होता है। उमा अपने बच्चों को लेकर अकेली रहने लगती है। अकेले रहते हुए एक और पुरुष के प्रति आकर्षक भाव उसके मन मे पैदा होता है लेकिन वह अपने पर काबू पा लेती है। वह अदालत में अपने पति से तलाक लेती है। लेकिन जब मनोहर वहाँ से अकेले चलने लगता है तो उमा को महसूस होता है कि वह उसके बिना नहीं रह पाएगी।

KALAT NAKALAT

Marathi/colour/155 minutes

Producer: Smita Talwalkar. **Director:** Kanchan Nayak. **Screenplay Writer:** S.N Navare. **Leading Actor:** Vikram Gokhale. **Leading Actress:** Savitha Prabhune. **Supporting Actor:** Ashok Saraf. **Supporting Actress:** Ashwini Bhave. **Child Artistes:** Mrinmayee Chandorkar, Omeya Ambre. **Cinematographer:** Rajan Kinagi. **Audiographer:** Manohar Amberkar. **Editors:** Vishwas-Anil. **Art Directors:** Medha Panshikar, Vivek Deshpande. **Costume Designers:** Smita Talwalkar, Neeta Nardekar. **Music Director:** Anand Modak. **Lyricist:** Sudhir Moghe. **Male Playback Singer:** Ravindra Sathe. **Female Playback Singers:** Asha Bhonsle Anuradha Paudwal.

Manohar, an officer in a private firm, is happy with his wife Uma and two children. He meets Manisha, the widow of an ex-employee, when she comes to ask him for a job. As a single woman, Manisha faces many problems in the company, which has never had a woman employee before. Manohar and his wife both feel for her and Manohar tries to help Manisha sort out her problems. A jealous colleague spreads ugly rumours about them and finally even Uma starts suspecting her husband. Around the same time, Manohar and Manisha, in a moment of sudden weakness, give in to their attraction for each other, but feel extremely guilty afterwards. Uma leaves home with the children. Living alone, Uma feels attracted to another man, but controls herself. She goes to court and gets her divorce, but, as the saddened Manohar starts walking away alone, she finds she cannot bear to let him go.

किरीडम

मलयालम/रंगीन/135 मिनट

निर्माण : एन. कृष्णकुमार **निर्देशन :** सिबी मलाइल **पटकथा :** ए.के. लोहितादास **मुख्य अभिनेता :** मोहनलाल **मुख्य अभिनेत्री :** पार्वती **सह-अभिनेता :** तिलकन **सह-अभिनेत्री :** कवियूर पोन्नाम्मा **छायांकन :** एस. कुमार **ध्वनि आलेखन :** राजन **सम्पादन :** एल. भूमिनाथन **कला निर्देशन :** सी.के. सुरेश **वेशभूषा :** नागराजन **संगीत निर्देशन :** जॉनसन **गीत :** कैथप्पूरम दामोदरन नम्बूदरी **पार्श्व गायक :** एम.जी. श्रीकुमार

हैड कांस्टेबल अच्यूतन नायर एक ईमानदार पुलिस कर्मचारी है जो अपने बेटे सेतु को किसी दिन सब-इन्सपेक्टर बनाना चाहता है। सेतु भारतीय पुलिस सेवा के लिए चुने जाने के इंतजार में है। एक बार ड्यूटी के दौरान एक विधायक के लड़के से कहा-सुनी हो जाने पर उसे रामापुरम में तबादला करके भेज दिया जाता है जहाँ पर गुंडों और बदमाशों का बहुत जोर है। गली में एक झगड़ा शान्त कराते हुए नायर एक बदमाश की पिटाई कर देता है और जिस पर गिरोह के मुखिया, जोस, नायर को पीट देता है। सेतु बीच में पड़कर जोस पर काबू पा लेता है जिससे गिरोह के लोग उसके पीछे पड़ जाते हैं। कई बार उसे मार पिटाई करनी पड़ती है और उसे लाकअप में भी रखा जाता है। अस्पताल से छुट्टी होने के बाद जोस, नायर के परिवार पर हमला करता है। सेतु गुस्से में आकर उसके पीछे दौड़ता है और उसे मार डालता है। नायर भारतीय पुलिस सेवा के लिए अपने बेटे के पुलिस जांच प्रमाणपत्र में यह दर्ज करता है कि सेतु नौकरी के लिए अयोग्य है क्योंकि वह अपराधी है।

KIREEDOM

Malayalam/colour/135 minutes

Producer: N. Krishna Kumar. **Director:** Siby Malayil. **Screenplay Writer:** A.K. Lohithadas. **Leading Actor:** Mohanlal. **Leading Actress:** Parvathi. **Supporting Actor:** Thilkan. **Supporting Actress:** Kaviyoor Ponnamma. **Cinematographer:** S. Kumar. **Audiographer:** Rajan. **Editor:** L. Bhoominathan. **Art Director:** C.K. Suresh. **Costume Designer:** Nagarajan. **Music Director:** Johnson. **Lyricist:** Kaithappuram Damodaran Namboodri. **Male Playback Singer:** M.G. Sreekumar.

Head Constable Achutan Nair, an honest, upright policeman, dreams of making his son, Sethu, a Sub-Inspector some day. Sethu is waiting to be selected for the IPS. While on duty, an altercation with an MLA's son gets Nair a "punishment transfer" to Rampuram, an area ruled by hooligans on whom the police have no control. Trying to stop a street fight, Nair beats up a local ruffian and is himself beaten up by the gangleader, Jose. Sethu intervenes, subdues Jose and becomes a target for the gang. He finds himself drawn into violent confrontations and even ends up in the lock-up. Jose gets discharged from the hospital and assaults the family. In desperation, Sethu goes after him and kills him. In his son's police verification certificate for the IPS, Nair reports that Sethu is unfit for the Service as he is a wanted criminal.

माने

कन्नड़/रंगीन/135 मिनट

निर्माण : अपूर्व चित्र **निर्देशन/पटकथा :** गिरीश कासरवल्ली **मुख्य अभिनेता :** नसीरुद्दीन शाह **मुख्य अभिनेत्री :** दीप्ति नवल **सह-अभिनेता :** मिको चन्द्र **संगीत निर्देशक :** एल. वैद्यनाथन्

राजन्ना और गीता शहर की भीड़ भरी गली में अपना नया मकान बनाते हैं किन्तु तभी उनके सुखी जीवन में खलबली मच जाती है। उनके पड़ौस के मकान में दिन में कोई नहीं रहता लेकिन रात को कुछ लोग आ कर वहाँ काम करते हैं जिसके शोर के कारण पड़ोसियों का सोना मुश्किल हो जाता है। जब इस मकान को खाली कराने के सभी प्रयास असफल हो जाते हैं तो लोग गीता की एक रिश्तेदार की मदद मांगते हैं जो एक बड़े पुलिस अफसर को जानती है। अन्त में शोर समाप्त हो जाता है और परेशान करने वाले परिवार चले जाते हैं किन्तु राजन्ना को पता चलता है कि उसकी पत्नी ने यह कठिन काम पुलिस अफसर की इच्छा पूरी करके करवाया है। राजन्ना और गीता में टकराव पैदा हो जाता है और उन्हें लगता है कि उनके लिए एक मात्र रास्ता यही बचा है कि वे कोई नया घर तलाश करें और फिर से अपनी जिंदगी शुरू करें।

MANE

Kannada/colour/135 minutes

Producer: Apoorva Chitra. **Director/Screenplay Writer:** Girish Kasaravalli. **Leading Actor:** Naseeruddin Shah. **Leading Actress:** Deepti Naval. **Supporting Actor:** Mico Chandru. **Supporting Actress:** Rohini Hattangadi. **Cinematographer:** A. Ramachandra. **Audiographer:** S.P. Ramanathan. **Editor:** M.N. Swamy. **Art Director:** John Devraj. **Costume Designer:** Vaishali Kasaravalli. **Music Director:** L. Vaidyanathan.

Rajanna and Geetha set up their new home in a crowded lane of the city. Soon, however, something disturbs the smooth flow of their lives. Though the shed next door lies vacant during the day, at night a group of people come and work there, keeping the neighbourhood awake with the noise. When all efforts to get the shed vacated fails, the couple seek the help of Geetha's aunt, who knows a senior police officer. When the noises finally cease and the band of ragged families is evicted, Rajanna discovers that his wife had achieved the impossible only by succumbing to the demands of the police officer. A confrontation between Rajanna and Geetha makes them realize that the only choice left to them is to search for a new home and start their lives all over again.

मढ़ी दा दीवा

पंजाबी/रंगीन/115 मिनट

निर्माण : राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि०, दूरदर्शन **निर्देशन/पटकथा :** सुरिन्दर सिंह **मुख्य अभिनेता :** राज बब्बर **मुख्य अभिनेत्री :** दीप्ति नवल **सह-अभिनेता :** पंकज कपूर, कंवलजीत सिंह परीक्षित साहनी **सह-अभिनेत्री :** आशा शर्मा **छायांकन :** अनिल सहगल **ध्वनि आलेखन :** जी.एस. भाटिया **सम्पादन :** सुभाष सहगल **कला निर्देशन :** दर्शन मेहराक **वेशभूषा :** सरदार बसरा **संगीत निर्देशन :** महिन्दरजीत सिंह **गीतकार :** नक्श लायलपुरी, **पार्श्व गायक :** जसपाल सिंह

तोला एक काश्तकार है, जिसे ज़मींदार अपना भाई मानता है और उसका बेटा धर्म सिंह उसे चाचा कहकर पुकारता है। तोला ने एक बंजारा लड़की से शादी की थी, जिससे उसके मां बाप ने अपना नाता तोड़ लिया था। उनके इस अपराध के कारण तोला के बेटे जगसीर की शादी पर पाबंदी लगा दी गई। जगसीर का नाई की जवान बीबी भानी से प्रेम हो जाता है। इस पर भानी को उसके घर वाले बाहर भेज देते हैं। जब तोला की मृत्यु होती है तो जगसीर उस खेत में अपने पिता की स्मृति में एक चबूतरा यानी मढ़ी बनवाता है, जहाँ तोला खेती बाड़ी किया करता था। धर्म सिंह का बेटा भांटा, जो अब ज़मीन की देखभाल कर रहा है, खेतों में मशीनों का इस्तेमाल करना चाहता है और वह जगसीर के गैर कानूनी कब्ज़े का विरोध करता है। भानी के जाने के बाद जगसीर अफीम का आदी हो चुका है। वह भांटा से लड़ाई करने में असमर्थ है और ज़मीन में बुआई करना बंद कर देता है। भांटा तोला की मढ़ी को गिरा देता है और उसके दादा ने जो ज़मीन तोला को दी थी उसे वापस ले लेता है। इस सदमे से जगसीर की मां मर जाती है और जगसीर भी भूख के कारण मर जाता है। उसका दोस्त रोणकी उसकी याद में मढ़ी बनाता है और भानी उस पर मिट्टी का दिया जलाती है।

MARHI DA DEEVA

Punjabi/colour/115 minutes

Producer: National Film Development Corporation and Doordarshan. **Director/Screenplay Writer:** Surinder Singh. **Leading Actor:** Raj Babbar. **Leading Actress:** Deepti Naval. **Supporting Actors:** Pankaj Kapur, Kawaljeet Singh, Parikshat Sahni. **Supporting Actress:** Asha Sharma. **Cinematographer:** Anil Sehgal. **Audiographer:** G.S. Bhatia. **Editor:** Subhash Sehgal. **Art Director:** Darsan Mehrak. **Costume Designer:** Sardar Basra. **Music Director:** Mohinderjeet Singh. **Lyricist:** Naqsh Lyalpuri. **Male Playback Singer:** Jaspal Singh.

Thola, a sharecropper, was treated as a brother by the landlord, and his son Dharam Singh calls him uncle. Thola had married a nomad girl who was consequently forsaken by her parents. As a penance, Thola's son Jagsir is condemned to remain unmarried. Jagsir falls in love with Bhani, the young bride of the local barber. Bhani too reciprocates the feeling and is punished by being sent away. When Thola dies, Jagsir builds a brick memorial, a marhi, on the land he used to till. Dharam Singh's son Bhanta, who now looks after his family land and is mechanizing his farm, resents the unofficial tenancy rights of Jagsir. Missing Bhani, Jagsir becomes addicted to opium. Unable to battle with Bhanta, he does not till the land. Bhanta breaks Thola's marhi, and takes over the land given to Thola by his grandfather. Jagsir's mother dies of shock and Jagsir starves himself to death. His friend the water-carrier Ronki builds his marhi in his memory, and Bhani lights the earthen lamp on it.

मथिलुकल

मलयालम/रंगीन/120 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा : अडूर गोपालकृष्णन् **मुख्य अभिनेता :** मम्मूटी **सह-अभिनेता :** श्रीनाथ **छायांकन :** रवि वर्मा **ध्वनि आलेखन :** हरिकुमार **सम्पादन :** एम. मणि **कला निर्देशन/वेषभूषा :** सिवन **संगीत निर्देशन :** विजय भास्कर

यह फिल्म वैक्कम मुहम्मद बशीर द्वारा लिखित इसी नाम के आत्मकथात्मक उपन्यास पर आधारित है। 1940 के दशक में बशीर त्रिवेन्द्रम केन्द्रीय जेल में राजनीतिक कैदी के रूप में बन्द रहे। बशीर ने अपने जीवन में कई प्रकार के साहसिक काम किये थे लेकिन उन्हें जेल में आम कैदियों के साथ रखा जाता है। उसके विनोदी स्वभाव, मधुर आचरण और सादगी के कारण कई वार्डर और कैदी उसके मित्र बन जाते हैं। जब देश को आजादी मिलने वाली होती है तो बशीर को छोड़कर सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा कर दिया जाता है। जेल के खाली रास्तों और बाग में अकेले घूमते हुए उसे ऊँची दीवार के उस पार से जहाँ से महिला जेल प्रारम्भ होता है, एक औरत की आवाज सुनाई देती है। वे दोनों एक दूसरे से बातचीत करते हैं और उनमें आवाज के जरिये ही एक रिश्ता कायम हो जाता है। एक दिन वे अस्पताल में एक दूसरे से मिलने की योजना बनाते हैं। अचानक बशीर को उसी दिन जेल से रिहा कर दिया जाता है। बशीर के लिए आज़ादी का मतलब अब वह नहीं रहा, जो पहले कभी था।

MATHILUKAL

Malalyalam/colour/120minutes

Producer/Director/Screenplay Writer: Adoor Gopalakrishnan. **Leading Actor:** Mammootty. **Supporting Actor:** Sreenath. **Cinematographer:** Ravi Varma. **Audiographer:** Harikumar. **Editor:** M. Mani. **Art Director/Costume Designer:** Sivan. **Music Director:** Vijayabhaskar.

A free adaptation of the autobiographical novelette of the same name by Vaikkom Mohammed Basheer, who was a political prisoner in the Trivandrum Central Jail in the 40s. Basheer is a man with a highly adventurous past and he languishes among the common criminals in the prison. However, his simplicity, humour and humanism win him friends, both among the warders and the prisoners. With the country's freedom only a step away, the political prisoners are set free, that is, all except Basheer. Wandering disconsolate in the vacant corridors and the garden, he hears the voice of a woman from across the high wall where the women's jail begins. He develops a poignant relationship with the voice and they plot to meet in the hospital one day. That day, suddenly, Basheer is released. For Basheer, the meaning of freedom is not the same as before.

ओरू वडक्कन वीरगाथा

मलयालम/रंगीन/170 मिनट

निर्माण: गृहलक्ष्मी प्रोडक्शन्स **निर्देशन:** हरिहरण **पटकथा:** एम.टी. वासुदेवन नायर **मुख्य अभिनेता:** मम्मूटी **मुख्य अभिनेत्री:** माधवी **सह-अभिनेता:** कैप्टन राजू **सह-अभिनेत्री:** गीता **बाल कलाकार:** विनीत जोमोल **छायांकन:** रामचन्द्र बाबू **ध्वनि आलेखन:** अरुण कुमार बोस **सम्पादन:** एम.एस. मणि **कला निर्देशन/वेशभूषा:** पी. कृष्णमूर्ति **संगीत निर्देशन:** रवि शर्मा

इस फिल्म में सोलहवीं शताब्दी के समय की कहानी चित्रित की गई है। चन्दू अनाथ है जिसका लालन-पालन उसके मामा महान योद्धा कनप्पन ने किया है। चन्दू का विवाह कनप्पन की बेटी उन्नीयारचा से हो रहा था किन्तु लड़की का घमंडी और दुष्ट भाई अरोमल उसमें रुकावट डाल देता है। चन्दू अपने मामा का घर छोड़कर अरिंगोदर की सेना में भरती हो जाता है। चन्दू तब तक खुद एक महान योद्धा बन चुका होता है। किन्तु कनप्पन उसे वापस बुला लेता है और अरोमल को उसकी पहली लड़ाई में मदद देने को कहता है। लड़ाई के दौरान अरोमल की तलवार टूट जाती है और वह इसके लिए चन्दू को दोषी ठहराता है यद्यपि दुश्मन को धोखे से मार कर वह लड़ाई जीत लेता है। चन्दू पर आक्रमण करते हुए अरोमल अपनी ही तलवार पर गिर कर मर जाता है। किन्तु कनप्पन के परिवार के लोग चन्दू को हत्यारा मानते हैं। वर्षों बाद जब वह एकान्त जीवन बिता रहा होता है तो अरोमल और उन्नीयारचा के बेटे उससे अरोमल की मौत का बदला लेने आते हैं। चन्दू उन लड़कों से कहीं अधिक शक्तिशाली योद्धा है किन्तु वह उन युवकों पर वार करने की वजह अपनी ही जान ले लेता है।

ORU VADAKKAN VEERAGADHA

Malayalam/colour/170 minutes

Producer: Grihalakshmi Productions. **Director:** Hariharan. **Screenplay Writer:** M.T. Vasudevan Nair. **Leading Actor:** Mammootty. **Leading Actress:** Madhavi. **Supporting Actor:** Capt. Raju. **Supporting Actress:** Geeta. **Child Artistes:** Vineeth, Jomol. **Cinematographer:** Ramachandra Babu. **Audiographer:** Arun Kumar Bose. **Editor:** M.S. Mani. **Art Director/ Costume Designer:** P. Krishnamoorthy. **Music Director:** Ravi Sarma.

Chandu, an orphan, grew up under the protection of his uncle, Kannappan, a great warrior of sixteenth century Kerala. He would have married Kannappan's daughter, Unniyarcha, but was thwarted by her arrogant and vicious brother, Aromal. Leaving his uncle's home, Chandu, now a great warrior himself, joins forces with Aringodar, but is called upon by Kannappan to escort Aromal in his first professional fight. Aromal's sword breaks during the fight and, although he wins the bout by killing his opponent in violation of the rules, he accuses Chandu of tampering with the sword. While attacking Chandu, Aromal falls on his own sword and dies, but in Kannappan's household, Chandu is considered a murderer. Years later, when he is a recluse, Aromal's and Unniyarcha's sons come to avenge the death of Aromal. Chandu, a far superior warrior, refuses to hurt the young men and takes his own life instead.

परशुरामेर कुठार

बंगला/रंगीन/75 मिनट

निर्माण: घूरजटि प्रसाद मुखर्जी **निर्देशन/पटकथा:** नब्येन्दु चट्टोपाध्याय **मुख्य अभिनेता:** रणजीत चक्रवर्ती **मुख्य अभिनेत्री:** श्रीलेखा मुखर्जी **सह-अभिनेता:** अरुण मुखोपाध्याय **छायांकन:** शक्ति बनर्द्योपाध्याय **ध्वनि आलेखन:** गोपाल घोष, अजय अधिकारी **सम्पादन:** निमाई राय **कला निर्देशन:** राधा रमण तपादार **संगीत निर्देशन:** निखिल चट्टोपाध्याय

पश्चिम बंगाल के एक छोटे कस्बे में स्वतंत्रता की 40वीं वर्षगांठ मनाने की तैयारी चल रही है। सफाई अभियान के अन्तर्गत कस्बे के लोग लक्ष्मी को शहर छोड़ने को कहते हैं। लक्ष्मी का पति विकलांग है। वह बच्चों को अपना दूध पिला कर गुज़ारा करती है। वह गर्भवती रहती है। लोग उसे वेश्या मानते हैं और जिन परिवारों की उसने सेवा की थी, वे उसे शहर से निकालने पर तुले हैं। इससे लक्ष्मी को गहरा दुख और आश्चर्य होता है। कुछ समय के लिये तो वह विद्रोह भी करती है और गुस्से में आकर ऐसे एक व्यक्ति को खुल कर अपमानित करती है जिसके यहां वह पहले नौकरी करती थी। लेकिन उसके पति की मृत्यु हो जाती है और वह हिम्मत हार कर एक स्थानीय वेश्या के साथ रहने लगती है। उसके वेश्या-जीवन में जो पहला ग्राहक आता है वह नगर-पालिका के अध्यक्ष का बेटा है, जिसे वह कभी अपना दूध पिलाया करती थी।

PARASHURAMER KUTHAR

Bengali/colour/75 minutes

Producer: Dhurjati Prasad Mukherji. **Director/Screenplay Writer:** Nabyendu Chattopadhyay. **Leading Actor:** Ranjit Chakraborty. **Leading Actress:** Sreelekha Mukherji. **Supporting Actor:** Arun Mukhopadhyay.**Cinematographer:** Sakti Banerji. **Audiographers:** Gopal Ghosh, Ajoy Adhikari. **Editor:** Nemai Roy. **Art Director:** Radharaman Tapadar. **Music Director:** Nikhil Chattopadhyay.

In a suburban town in West Bengal, preparing for the 40th anniversary of Independence, a wet-nurse Lakshmi is asked to leave town as part of a general clean-up. With a crippled husband, Lakshmi has survived by keeping herself pregnant by the respectable middle-class householders who happened to employ her to suckle their children. Ironically, all her own children were stillborn. Treated as a prostitute by the police and the families where she had given so much in return for so little, she is hurt and bewildered. For a brief while she even rebels and openly embarrasses one of her ex-employers for refusing to help her to remain in the town. But her husband dies and she gives in to an offer made by a local prostitute. Decked in faded finery she awaits her first client; only, the young boy she spies approaching her is the son of the chairman of the municipality, whom she had once suckled at her breast.

परिंदा

हिन्दी/रंगीन/157 मिनट

निर्माण/निर्देशन: विनोद चोपड़ा **पटकथा:** विनोद चोपड़ा, शिव कुमार सुब्रह्मण्यम् **मुख्य अभिनेता:** जैकी श्राफ, अनिल कपूर, **मुख्य अभिनेत्री:** माधुरी दीक्षित **सह-अभिनेता:** नाना पाटेकर **छायांकन:** विनोद प्रधान **ध्वनि आलेखन:** सुभाष अग्रवाल, इन्द्रजीत नियोगी **सम्पादन:** रेणु सलूजा **कला निर्देशन:** नितीश राय, नितिन देसाई **वेशभूषा:** सोनाली सेठ **संगीत निर्देशन:** आर.डी. बर्मन **गीत:** खुर्शीद **पार्श्व गायक:** सुरेश वाडेकर, शैलेन्द्र सिंह **पार्श्व गायिका:** आशा भोंसले

यह दो भाइयों की कहानी है। बड़ा भाई किशन अपने आदर्शवादी और भोले भाले भाई करण की देखभाल करता है। गरीबी से तंग आकर किशन अपने छोटे भाई के पालन पोषण के लिए अपराध करने लगता है। करण जब अपनी शिक्षा पूरी करके घर लौटता है तो उसे पता चलता है कि जिस बड़े भाई की उसने पूजा की है वह उसी गिरोह का सदस्य है जिसने उसके प्यारे मित्र पुलिस अफसर प्रकाश की हत्या की है। गिरोह का मुखिया अन्ना किशन को अपने छोटे भाई को मार डालने का आदेश देता है क्योंकि उसे डर है कि अपने दोस्त के प्रति गहरे लगाव के कारण, करण उनके गिरोह का सर्वनाश कर सकता है। आतंक के इस जाल में फंस कर किशन अपने भाई को बचाने की कोशिश करता है, लेकिन उसे सफलता नहीं मिलती और करण की हत्या कर दी जाती है। तब किशन अपने मुखिया अन्ना से बदला लेता है।

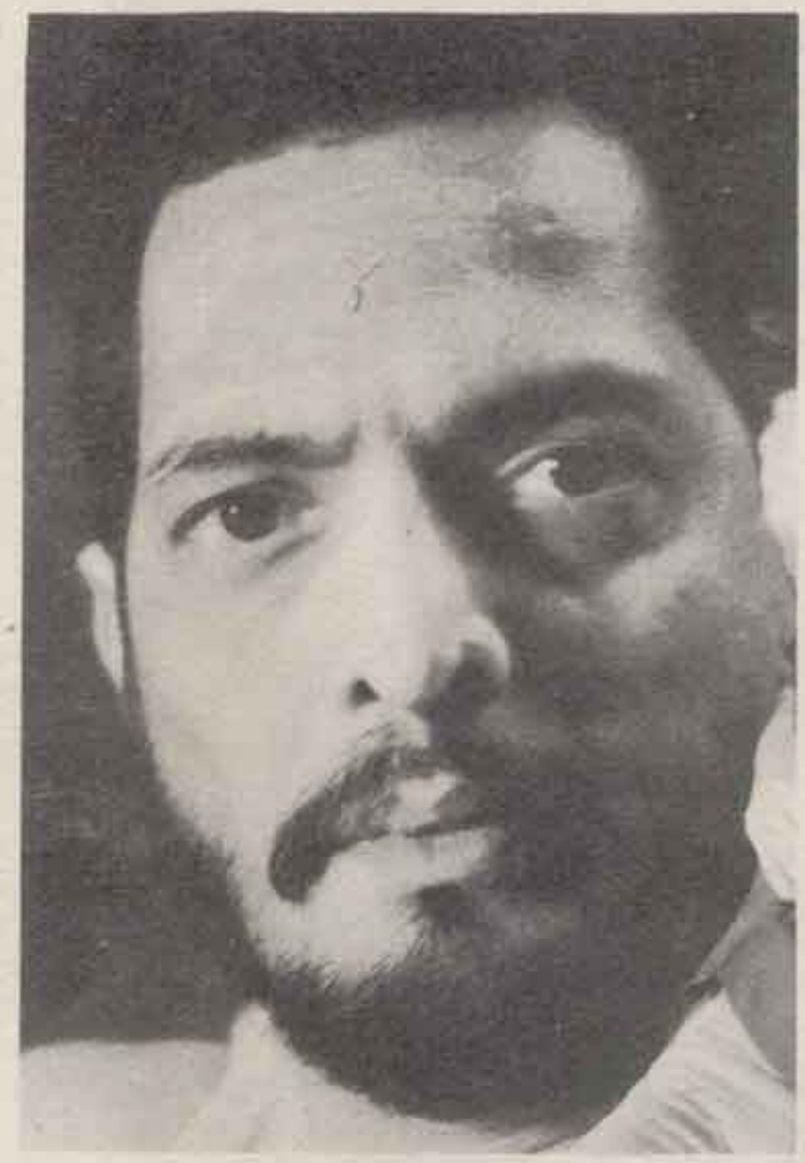

PARINDA

Hindi/colour/157 minutes

Producer/Director: Vinod Chopra. **Screenplay Writers:** Vinod Chopra, Shivkumar Subrahmanyam. **Leading Actors:** Jackie Shroff, Anil Kapoor. **Leading Actress:** Madhuri Dixit. **Supporting Actor:** Nana Patekar. **Cinematographer:** Binod Pradhan. **Audiographers:** Subhash Agarwal, Indrajit Neogi. **Editor:** Renu Saluja. **Art Directors:** Nitish Roy, Nitin Desai. **Costume Designer:** Sonali Sheth. **Music Director:** R.D. Burman. **Lyricist:** Khursheed. **Male Playback Singers:** Suresh Wadekar, Shailendra Singh. **Female Playback Singer:** Asha Bhonsle.

This is the story of two brothers, the idealistic and innocent Karan and Kishen, the elder brother who has always protected him, but at what cost. Faced with starvation and poverty, Kishen takes to crime to bring up his younger brother. After his studies are over, when Karan comes home, he soon realizes that his adored elder brother belongs to the same underworld gang which has killed his dearest friend, the police officer Prakash. Threatened with exposure through Karan's loyalty to his dead friend, Anna, the half-crazed gang leader, orders Kishen to kill his brother. Caught in this web of terror, Kishen attempts to protect his brother and fails. Karan is killed brutally, and Kishen takes his revenge on his erstwhile benefactor Anna.

परसी

गुजराती/रंगीन/128 मिनट

निर्माण : राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि॰ **निर्देशन :** परवेज मेरवानजी **पटकथा :** साईरस मिस्त्री, जिल मिसकिट्टा **मुख्य अभिनेता :** कुरुष देबू **मुख्य अभिनेत्री :** रूबि पटेल **सह-अभिनेता :** होसी वासुनिया, शरद स्मार्ट, राजन बाने **सह-अभिनेत्री :** जेनोबिया शराफ **छायांकन :** नवरोज कंट्रक्टर **ध्वनि आलेखन :** दीलिप सुब्रह्मण्यम, ए.एम. पदमानाभन **सम्पादन :** प्रिया कृष्णमूर्ति **कला निर्देशन/वेशभूषा :** रोशन कलापेसी **संगीत निर्देशन :** वनराज भाटिया **गीत :** दादी प्रेम

परसी 28 साल का एक डरपोक युवक है जो बम्बई की पारसी कालोनी में अपनी मां के साथ रहता है। वह एक छोटे से दफ़र में काम करता है जबकि उसकी मां पारसी पकवान बनाकर कुछ रुपये कमाती है। एक दिन परसी को दफ्तर में एक धोखाधड़ी का पता चलता है, जिससे एक कर्मचारी को नौकरी से निकाल दिया जाता है। तभी परसी को बम्बई संगीत सोसाईटी के माध्यम से संगीत के प्रभाव का पता चलता है किन्तु उसकी शान्ति उस समय भंग हो जाती है जब नौकरी से निकाला गया कर्मचारी दफ्तर में आग लगा देता है और परसी की पिटाई करता है। परसी की नौकरी चली जाती है और वह बहुत दुखी है। तभी स्कूल के दिनों के उसके एक मृतक दोस्त का भूत प्रकट होकर उसे हिम्मत से काम ना लेने के लिए डांटता फटकारता है। अचानक परसी की मां की मृत्यु हो जाती है। उसकी मां ने उसे कभी आत्म निर्भर नहीं बनने दिया किन्तु अब परसी को उम्मीद है कि वह जीवन की कठिनाईयों को झेल लेगा।

PERCY

Gujarati/colour/128 minutes

Producer: National Film Development Corporation. **Director:** Pervez Merwanji. **Screenplay Writers:** Cyrus Mistry, Jill Misquitta. **Leading Actor:** Kurush Deboo. **Leading Actress:** Ruby Patel. **Supporting Actors:** Hosi Vasunia, Sharad Smart, Rajan Bane. **Supporting Actress:** Zenobia Shroff. **Cinematographer:** Navroze Contracter. **Audiographers:** Dileep Subramaniam, A.M. Padmanabhan. **Editor:** Priya Krishnaswamy. **Art Director/ Costume Designer:** Roshan Kalapesi. **Music Director:** Vanraj Bhatia. **Lyricist:** Dady Prem.

Percy, an awkward young man of 28, lives with his domineering mother in a Parsi colony in Bombay. He works in a small office, while his mother supplements their income by preparing and selling Parsi delicacies. One day, Percy discovers a fraud in the office and an employee is sacked. Around the same time, the lonely young man discovers the conviviality of music through the Bombay Music Society. But his peace is soon shatttered, when the sacked employee sets fire to the office and beats up Percy. Jobless and completely at sea, Percy is visited by the ghost of his dead school-friend, who admonishes him for his lack of spirit. Percy's mother dies suddenly, leaving behind a son whom she has consistently denied self-sufficiency. But there is hope that Percy will cope with life after all.

पुदिया पादई

तमिल/रंगीन/135 मिनट

निर्माण: ए. सुन्दरम **निर्देशन/पटकथा/मुख्य अभिनेता:** पार्थिबन **मुख्य अभिनेत्री:** सीता **सह-अभिनेता:** एम. नास्सर **सह-अभिनेत्री:** मनोरमा **छायांकन:** राज पारीत **सम्पादन:** एम. राजा **कला निर्देशन:** मोहनन् **वेषभूषा:** कासी **संगीत निर्देशन:** चन्द्रबोस **गीत:** वैरामुतु **पार्श्व गायक:** एस.पी. बालसुब्रह्मण्यम् **पार्श्व गायिका:** वाणी जयराम

एक लड़की सीता का शादी के दिन बलात्कार किया जाता है। उसका दूल्हा उसे अपनाने को तैयार है किन्तु वह उसी बस्ती में जाकर रहने लगती है जहाँ वह व्यक्ति वहाँ के लोगों पर जुल्म करता हुआ रह रहा है, जिसने उसके साथ बलात्कार किया। सीता चाहती है कि जिस आदमी ने उसकी जिन्दगी तबाह की है, वही उसकी ज़िम्मेदारी भी उठाये। वह उस आदमी का दिल जीतने में सफल हो जाती है और उसकी पत्नी बन जाती है। लेकिन तभी उस आदमी के कुछ पुराने दुश्मन गलती से उस आदमी के बजाय सीता की हत्या कर देते हैं। वह आदमी फिर से पहले की तरह क्रूरता पर उतरने को है कि तभी उसका मातृविहीन बच्चा रोने लगता है जिससे उसे अपना अनाथ बचपन याद आता है। तब वह महसूस करता कि हिंसा का रास्ता छोड़ना ही बेहतर है।

PUHDEA PADHAI

Tamil/colour/135 minutes

Producer: A. Sundaram. **Director/Screenplay Writer/Leading Actor:** Parthiban. **Leading Actress:** Seetha. **Supporting Actor:** M. Naasar. **Supporting Actress:** Manorama. **Cinematographer:** Raj Pareeth. **Editor:** M. Raja. **Art Director:** Mohanam. **Designer:** Kasi. **Music Director:** Chandrabose. **Lyricist:** Vairamuthu. **Male Playback Singer:** S.P. Balasubramanium. **Female Playback Singer:** Vani Jayaram.

Sita, a young girl, raped on the day of her marriage, refuses her understanding bridegroom and comes to live in the slum where the man who raped her bullies the little community to submission. Her aim is to make the man take responsibility for her, having despoiled her. In the process she wins his rough heart and becomes his wife. The process of normalization is interrupted when old foes taking revenge on the man kill Sita by mistake. The man is about to revert in anger to his former brutal self, when the cry of his motherless child reminds him of his own bitter, orphaned childhood. He realizes that he must give his son a better life, and to do that, must refrain from the path of violence.

सलीम लंगड़े पे मत रो

हिन्दी/रंगीन/120 मिनट

निर्माण: राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि॰ **निर्देशन/पटकथा:** सईद अख़तर मिर्ज़ा **मुख्य अभिनेता:** पवन मल्होत्रा **मुख्य अभिनेत्री:** नीलिमा अज़ीम **सह-अभिनेता:** आशुतोष गोवरीकर **सह-अभिनेत्री:** सुरेखा सीकरी, निशिगंधा वाड **छायांकन:** वीरेन्द्र सैनी **ध्वनि आलेखन:** अरुण चक्रवर्ती **सम्पादन:** जावेद सय्यद **कला निर्देशन:** गौतम सेन **वेशभूषा:** हरीश चन्द्र ओझा **संगीत निर्देशन:** शारंग देव **गीत:** कैफ़ी आज़मी **पार्श्व गायिका:** कविता कृष्णमूर्ति

सलीम एक मामूली चोर है। उसका पिता एक कपड़ा मिल में काम करता था लेकिन हड़ताल के दौरान उसकी छटनी कर दी गई। उसकी माँ पड़ोसियों के कपड़े बनाकर थोड़े से पैसे कमाती है। बड़े भाई पर ही सारे घर की आशायें थीं लेकिन एक दुर्घटना में उसकी मौत हो जाती है। सलीम असलम से मिलता है जो शिक्षित और भला नौजवान है और उसकी बहन अनीस से बाद में उसकी शादी तय होती है। सलीम को धीरे-धीरे पता चलता है कि उसका तथा उसके आस-पास रहने वाले गरीबों का जीवन कितना बेमानी है। वह सामाजिक और आर्थिक शोषण करने वाली ताकतों को पहचानने लगता है और जिन्दगी को बेहतर बनाने का प्रयास करता है। किन्तु अनीस की शादी पर एक दूसरा चोर, सलीम की हत्या कर देता है।

SALIM LANGDE PE MAT RO

Hindi/colour/120 minutes

Producer: National Film Development Corporation. **Director/Screenplay Writer:** Saeed Akhtar Mirza. **Leading Actor:** Pavan Malhotra. **Leading Actress:** Neelima Azim. **Supporting Actor:** Ashutosh Gowarikar. **Supporting Actresses:** Surekha Sikri, Nishigandha Wad. **Cinematographer:** Virendra Saini. **Audiographer:** Arun Chakravorty. **Editor:** Javed Sayyad. **Art Director:** Gautam Sen. **Costume Designer:** Harishchandra Ojha. **Music Director:** Sharang Dev. **Lyricist:** Kaifi Azmi. **Female Playback Singer:** Kavitha Krishnamurthy.

Salim lives the life of a petty thief in a world where conventional moral values have been turned on their head. His father is a textile worker, retrenched during a major strike in Bombay. His mother earns a pittance by taking in sewing from the neighbourhood poor. The elder brother, the hope of the family, died in an accident. Salim meets Aslam, an educated and compassionate young man and a prospective suitor for Anees, his younger sister, and slowly becomes aware of the meaningless brutality that rules his life and the lives of the poor around him. He starts recognizing the forces of social and economic exploitation and attempts to move towards a more worthwhile existence. But at Anees's wedding, his death at the hands of a fellow thief finally establishes the brotherhood of the damned.

संध्या रागम्

तमिल/रंगीन/84 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा/छायांकन/सम्पादन : बालू महेन्द्र **मुख्य अभिनेता :** चोक्कालिंग भागवत **सह अभिनेता :** सन्तानम **मुख्य अभिनेत्री :** अर्चना **बाल कलाकार :** राजलक्ष्मी **ध्वनि आलेखन :** मूर्ति, लक्ष्मीनारायणन् **कला निर्देशन :** के. रामास्वामी **वेशभूषा :** रवि **संगीत निर्देशन :** एल. वेद्यनाथन

चोक्कलिंगम 84 वर्ष के हैं और वे तमिलनाडु में अपने गांव में अपनी पत्नी के साथ रहते हैं। पत्नी की मृत्यु के बाद उन्हें मद्रास में अपने भतीजे वासु के साथ रहना पड़ता है जिससे उनकी पुरानी दिनचर्या बदल जाती है। वासु एक प्रैस में काम करता है। उसकी एक लड़की है और पत्नी गर्भवती है। उसकी आय अपने परिवार के लिए काफी नहीं है और इस बूढ़े आदमी के आ जाने से उस पर और बोझ हो गया है। इस फिल्म में अपनी जड़ों से कटे वृद्ध व्यक्ति की भावात्मक समस्याओं और शहरी मध्य वर्गीय वातावरण में ऐसे व्यक्ति के कारण पैदा हुए तनावों का चित्रण किया गया है जिसकी अब कोई उपयोगिता नहीं रही।

SANDHIYA RAAGAM

Tamil/colour/84 minutes

Producer/Director/Screenplay Writer/Cinematographer/Editor: Balu Mahendra. **Leading Actor:** Chokkalinga Bhagawath. **Supporting Actor:** Santhanam. **Supporting Actress:** Archana. **Child Artiste:** Rajalakshmi. **Audiographers:** Murthy, Lakshmi Narayanan. **Art Director:** A. Ramasamy. **Costume Designer:** Ravi. **Music Director:** L. Vaidianathan.

Chokkalingam is eighty-four years old and lives with his wife in his village in Tamil Nadu. With the death of his wife, the familiar routine of life is suddenly changed when the old man has to go an live with his nephew, Vasu, in Madras. Vasu, his only relative, is a lower middle-class press worker with a pregnant wife and a small daughter. His income is not enough for his own family and the additional responsibility of the old man becomes a great burden for him. The emotional problems of the uprooted old man in an urban lower middle-class milieu and the stresses upon one who has lived beyond his utility, are the subjects of the film.

संत शिशुनाला शरीफ

कन्नड़/रंगीन/140 मिनट

निर्माण: यजमान एन्टरप्राइसिस **निर्देशन/पटकथा:** टी.एस. नागभरण **मुख्य अभिनेता:** श्रीधर **मुख्य अभिनेत्री:** सुमन रंगनाथ **सह-अभिनेता:** गिरीश कर्नाड **बाल कलाकार:** जयन्त **छायांकन:** एस. रामचन्द्र **सम्पादन:** सुरेश अर्स **कला निर्देशन:** शशिधर अदापा **वेशभूषा:** मंजुनाथ **संगीत निर्देशन/पार्श्व गायक** सी. अश्वत्थ **पार्श्वगायिका:** बी.आर. छाया

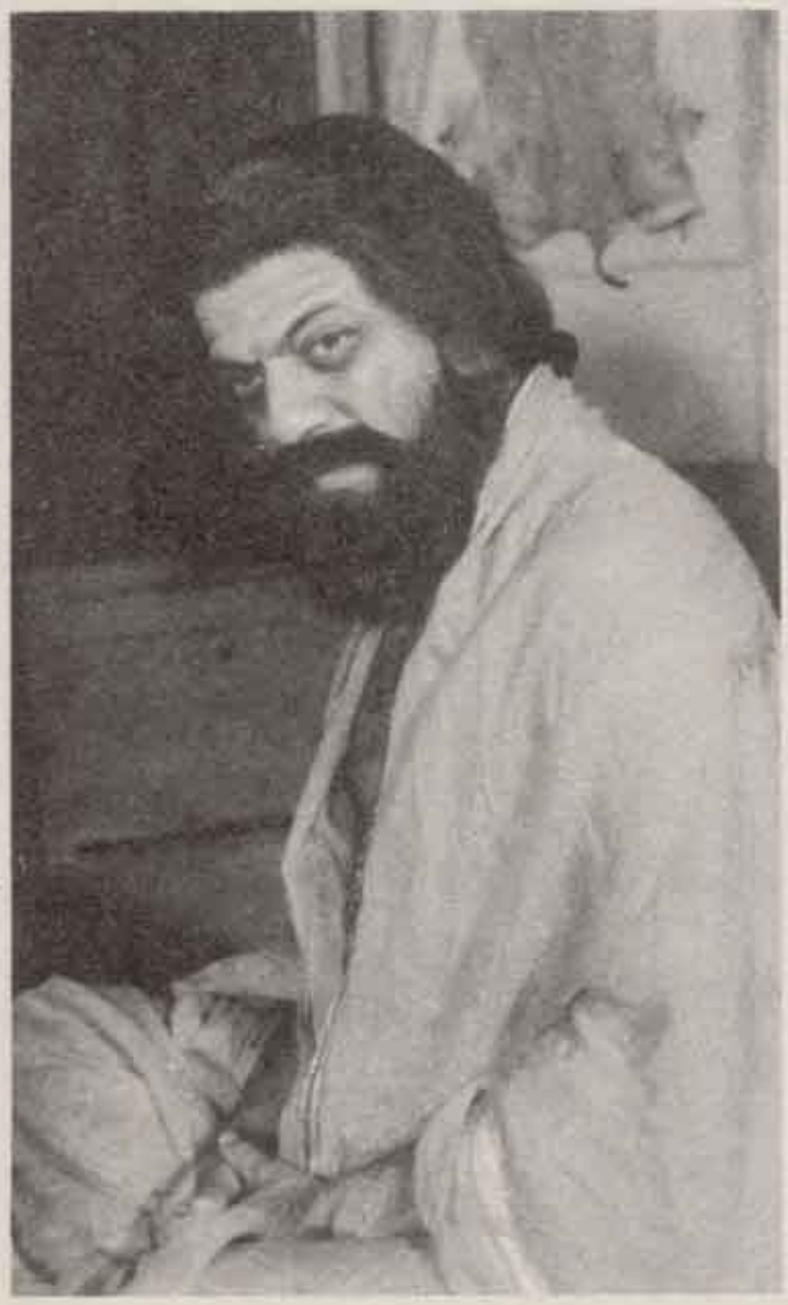

शरीफ का जन्म धारवाड़ के एक गांव शीशुनाला में 1829 में एक मुस्लिम परिवार में हुआ था। हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को आश्चर्य में डालते हुए उन्होंने हिन्दू गुरु, गोविन्द भट्ट से शिक्षा प्राप्त की और साथ ही वचन तथा शरण साहित्य और सूफी सन्त अल्लामा की शिक्षाओं का अध्ययन किया। इन सब से प्रभावित होकर उन्होंने भक्ति गीतों की रचना की जो आज भी गाये जाते हैं। उनका अपना दर्शन हिन्दू मुस्लिम एकता पर आधारित था जिसमें जाति, धर्म और नस्ल के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता। अपनी निर्धनता और पत्नी की मृत्यु के कारण वे फकीर बन गये और उन्होंने अपने भजन गाते हुए पूरे देश का भ्रमण किया। 1889 में उनका देहांत हुआ। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही इस सन्त की दरगाह पर उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं क्योंकि वे दोनों धर्मों के सन्त थे।

SANTHA SHISHUNALA SHARIF

Kannada/colour/140 minutes

Producer: Yajaman Enterprises. **Director/Screenplay Writer:** T.S. Nagabharana. **Leading Actor:** Sridhar. **Leading Actress:** Suman Ranganath. **Supporting Actor:** Girish Karnad. **Child Artiste:** Master Jayanth. **Cinematographer:** S. Ramachandra. **Editor:** Suresh Urs. **Art Director:** Shashidhar Adapa. **Costume Designer:** Manjunath. **Music Director/Male Playback Singer:** C. Aswath. **Female Playback Singer:** B.R. Chhaya.

Sharif was born of Muslim parents in Shishunala, a village in Dharwar, in 1829. Shocking both the Hindus and the Muslims, he studied under the Hindu guru Govinda Bhatta and at the same time discovered the Vachan and Sharana literature and the teachings of the mystic saint Allama. Under these influences, he composed devotional lyrics which are still sung today. His own philosophy was based on Hindu-Muslim unity, discarding the inequalities of caste, creed and religion. Poverty and the death of his wife made him a wanderer and he toured the country singing his songs. He died in 1889. Today Hindus and Muslims throng to the grave of this saint who belonged to both religions equally.

सूत्र धारूलू

तेलुगू/रंगीन/160 मिनट

निर्माण: ए. सुधाकर रेड्डी, सी. करुणाकर राव **निर्देशन/पटकथा** के. विश्वनाथ **मुख्य अभिनेता:** ए. नागेश्वर राव **मुख्य अभिनेत्री:** रम्या कृष्णा **सह-अभिनेता:** भानुचन्दर **सह-अभिनेत्री:** सुजाता **बाल कलाकार:** सत्यकृष्ण **छायांकन:** मधु अम्बाट **ध्वनि आलेखन:** स्वामीनाथन **सम्पादन:** जी.जी. कृष्णराव **कला निर्देशन:** अरुण गोंडगवंकर **वेशभूषा:** के. सूर्यराव **संगीत निर्देशन:** के.वी. महादेवन **गीत:** सी. नारायणन रेड्डी, एम.एन. शर्मा, एस. शास्त्री **पार्श्व गायक:** एस.पी. बालासुब्रह्मण्यम **पार्श्व गायिका:** एस.पी. शैलजा, पी. सुशिला

नीलकंठम, शिवपुरम गांव का जमींदार है। उसकी पत्नी गायत्री देवी अपाहिज है और पुराणों की कथायें सुनकर अपने दिन बिता रही है। वह हनुमद्दास से अनुरोध करती है कि वे उसे हरि कथा सुनाने के लिए यशोदा देवी और उसके पति रामानन्द को उसके घर पर ले आयें। नीलकंठम, रामानन्द को किसी बहाने बाहर भेज देता है और यशोदा देवी के साथ बलात्कार करता है। गांव वालों को बहुत गुस्सा आता है लेकिन वे फिलहाल कुछ न करके अपने आप को तैयार करने का फैसला करते हैं। यशोदा देवी की मदद से हनुमद्दास का बेटा तिरुमलदास उच्च शिक्षा प्राप्त करता है और बाद में कलैक्टर बन कर गांव लौटता है। गांव में जमीन को लेकर कई झगड़े चल रहे थे। नया कलैक्टर शुरू में भ्रष्ट जमींदार का साथ देने का दिखावा करता है लेकिन बाद में वह गांव वालों के प्रति अपनी निष्ठा को उजागर करता है। अन्त में गांव के लोग नीलकंठम को बेअसर कर देते हैं।

SUTHRA DHAARULU

Telugu/colour/160 minutes

Producers: C. Karunakar Rao, A. Sudhakar Reddy. **Director/Screenplay Writer:** K. Vishwanath. **Leading Actor:** A. Nageswara Rao. **Leading Actress:** Ramya Krishna. **Supporting Actor:** Bhanuchander. **Supporting Actress:** Sujatha. **Child Artiste:** Master Sathyakrishna. **Cinematographer:** Madhu Ambat. **Audiographer:** Swaminathan. **Editor:** G.G. Krishna Rao. **Art Director:** Arun Godgavankar. **Costume Designer:** K. Surya Rao. **Music Director:** K.V. Mahadevan. **Lyricists:** C. Narayana Reddy, M.N. Sharma, S. Sastry. **Male Playback Singer:** S.P. Balasubramaniam. **Female Playback Singers:** S.P. Sailaja, P. Susheela.

Neelakantam, the landlord of Sivapuram, has a paralytic wife, Gayatridevi, who spends her day listening to the Puranas. She requests Hanumaddas from the village to bring to her home Yasodadevi and her husband, Ramananda, to present Harikatha, a form of devotional performance. Neelakantam sends Ramananda away on a flimsy pretext and rapes Yasodadevi. The villagers are outraged, but decide to bide their time and prepare themselves. With Yasodadevi's help, Hanumaddas's son Thirumaladas, receives higher education and, years later, comes back to the village as a Collector. Disputes over land have been brewing in the village. The new Collector pretends to align himself with the corrupt landlord, but reveals his loyalties to his people at the last minute, much to the horror of Neelakantam, who is finally subdued by the villagers.

उन्नीकुट्टनु जोली किट्टी?

मलयालम/रंगीन/135 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा/कला निर्देशन/वेशभूषा : वी.आर. गोपीनाथ **मुख्य अभिनेता :** जोस थामस **मुख्य अभिनेत्री :** लीला नम्बूदरीपादु **सह-अभिनेता :** कृष्णनकुट्टी नायर **सह-अभिनेत्री :** तारा **बाल कलाकार :** दृश्य जी. नाथ **छायांकन :** सन्नी जोसेफ **ध्वनि आलेखन :** टी. कृष्णनुउन्नी **सम्पादन :** पी. रामन नायर **संगीत निर्देशन :** मोहन सितारा

उन्नीकुट्टन ने दर्शन शास्त्र में एम.ए. किया है और वह पांच वर्ष से बेरोज़गार है। उसका पिता जो पहले गांधीवादी था अपने बेटे की बढ़ती हुई कुंठा को बेबसी से देखता रहता है। उन्नीकुट्टन का बड़ा भाई रेघु लघु फिल्में बनाता है और झूठ का सहारा लेकर तैयार की गई फिल्मों के जरिये अपने बाल बच्चों का भरण-पोषण कर पाता है। बड़ी बहन और उसका पति दूसरे लोगों का बोझ ढोने के इच्छुक नहीं हैं। अकेलेपन और असुरक्षा का शिकार होकर उन्नी नजदीक के कस्बे में नोकरी करना चाहता है, परन्तु नोकरी की तलाश में उसकी यह यात्रा असफल रहती है और उन्नी प्रमाण पत्र जला देता है। अपने भाई की मौत के बाद, रेघु उन्नी पर फिल्म बनाने का निर्णय करता है।

UNNIKKUTTANU JOLI KITTY?

Malayalam/colour/135 minutes

Producer/Director/Screenplay Writer/Art Director/Costume Designer: V.R. Gopinath. **Leading Actor:** Jos Thomas. **Leading Actress:** Leela Namboodirippadu. **Supporting Actor:** Krishnan Kutty Nair. **Supporting Actress:** Thara. **Child Artiste:** Drisya G. Nath. **Cinematographer:** Sunny Joseph. **Audiographer:** T. Krishnan Unni. **Editor:** P. Raman Nair. **Music Director:** Mohan Sitara.

Unnikkuttan, with an M.A. in philosophy, has been unemployed for five years. His father, an ex-Gandhian, helplessly watches the growing frustration in his son. The elder brother Reghu, a trained short film maker, has his own family to support and does so, often at the cost of the truth in his films. The elder sister and her husband are unwilling to bear other people's burdens. Lonely and insecure, Unni is attracted to the ideology of the extremists and jeopardizes whatever job prospects he may have had in his hometown. His journey to the city for a job is met with equal lack of success. Disillusioned, he returns home to find increasing unemployment. Admitting defeat, he burns his certificates. After the death of his brother, Reghu, discarding all compromise, makes this film on Unni.

वोसोबिपो

करबी/रंगीन/156 मिनट

निर्माण : करबी आंगलोंग जिला परिषद् **निर्देशन/पटकथा :** गौतम् बोरा **मुख्य अभिनेता :** रामन् रोंगपी **मुख्य अभिनेत्री :** रत्ना रोंगचेहोनपी **सह-अभिनेता:** ऐलिसा हंसे, **सह-अभिनेत्री :** जूली तेरांगपी **बाल कलाकार :** बुबूल तेरांग **छायांकन :** विवेक बनर्जी **ध्वनि आलेखन :** अनूप मुखर्जी **सम्पादन :** श्रीकर प्रसाद **कला निर्देशन :** उत्पल बरुआ **वेशभूषा/संगीत निर्देशन :** शेर चौधरी **पार्श्व गायक:** चन्द्रकान्त तेरांग **पार्श्व गायिका:** पाखिला लेकथेपी

वोसोबिपो करबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है कोयल की पुकार। यह आवाज़ फसल की बुआई के समय का संकेत करती है। करबी पहाड़ी लोग हैं जो जगह बदल-बदल कर खेती करते हैं। सार्थे रोंगहेग एक शिक्षित करबी युवक है जो अपने गांव में अध्यापक के रूप में काम करता है। वह महसूस करता है कि उसके समुदाय के लोग लगातार गरीब होते जा रहे हैं। उसके मन में दुविधा होती है कि वह गांव को छोड़कर अपना भविष्य बेहतर बनाने के लिए कहीं बाहर चला जाय या अपने लोगों के बीच रह कर उनकी भलाई सोचे? उसे अपने बचपन की बातें याद आती हैं और वह अपने समाज की सेवा करने का संकल्प लेता है। तब उसे उन लोगों के अपने प्राकृतिक वातावरण के साथ गहरे लगाव का एहसास होता है। अपने समुदाय के लोगों को समझते हुए सार्थे अपनी अन्तरात्मा की यात्रा भी प्रारम्भ करता है।

WOSOBIPO

Karbi/colour/156 minutes

Producer: Karbi Anglong District Council. **Director/Screenplay Writer:** Gautam Bora. **Leading Actor:** Raman Rongpi. **Leading Actress:** Ratna Rongchehonpi. **Supporting Actor:** Elisa Hanse. **Supporting Actress:** Juli Terangpi. **Child Artiste:** Bubul Terang. **Cinematographer:** Vivek Banerjee. **Audiographer:** Anup Mukherjee. **Editor:** Sreekar Prasad. **Art Director:** Utpal Barua. **Costume Designer/Music Director:** Sher Choudhury. **Male Playback Singer:** Chandra Kanta Terang. **Female Playback Singer:** Pakhila Lekthepi.

Wosobipo is the Karbi word for the cuckoo's call which ushers in the time for sowing the crop. The Karbis are hill people who practise shifting cultivation. Sarthe Ronghang, an educated Karbi youth who has returned to his village as a school teacher, finds that his community is getting increasingly impoverished. Torn between a desire to escape to the world outside where better prospects await him and his innate loyalty to his people, Sarthe rediscovers his past through his memories of his childhood with his grandfather. He finds a new meaning in his community's apparently dumb struggle for survival and comes to understand their strong bonds with their natural surroundings. In the process of delving into the collective unconscious of his people, Sarthe begins his journey to his inner self.

कथासार : ग़ैर-कथाचित्र

Synopses: Non-feature Films

आर कोतो दिन

अंग्रेजी/रंगीन/38 मिनट

निर्माण : सूचना और सांस्कृतिक विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार **निर्देशन :** शशि आनन्द, **छायांकन :** शशि आनन्द **सम्पादन :** रोबिन सेनगुप्ता, अनूप मुखर्जी **संगीत निर्देशन :** शशि आनन्द **ध्वनि आलेखन :** रथिन बोस, आई.पी. कपूर

हमारे देश के लाखों शोषित बच्चे अपने बचपन के अधिकार से वंचित हैं। इस फिल्म में इन निराश और दीन-हीन बच्चों के जीवन का चित्रण करते हुए लोगों में उनकी ज़िन्दगी में खुशियाँ लाने में मदद करने और चेतना जगाने का प्रयास किया गया है।

बैगा

रंगीन/हिन्दी/30 मिनट

निर्माता : मध्य प्रदेश माध्यम, **निर्देशक :** राजेन्द्र जांगले, **पटकथा :** अनन्त बलानी, **छायांकन :** राजेन्द्र जांगले, **ध्वनि आलेखन :** दिलीप सुब्रामण्यम, **सम्पादन :** दीपक सहगल, सुनील चौरसिया

इस फिल्म में बैगा नाम की जनजाति के लोगों का चित्रण किया गया है, जिन्होंने मध्य प्रदेश में सतपुरा और मैकल पहाड़ियों के बीच साल वनों में अपने घर बना लिये हैं। प्रकृति के निकट और शहरी संस्कृति से दूर रहते हुए इस समुदाय ने अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत को बनाये रखा है, किन्तु शिक्षा के प्रसार और आर्थिक विकास की सरकारी योजनाओं के कारण परिवर्तन की हवा को रोकना कठिन होता जा रहा है।

AAR KOTO DIN (Tomorrow is Too Late)

English/colour/38 minutes

Producer: Department of Information and Cultural Affairs, Government of West Bengal. **Director/Screenplay Writer/Cinematographer/Music Director:** Shashi Anand. **Audiographers:** Rathin Bose, I.P. Kapur. **Editors:** Robin Sengupta, Anup Mukherjee.

Oppressed, wronged and deceived, millions of children in our country are being consistently denied the right to their childhood. The film captures these young faces of despair and attempts to arouse a constructive response to their plight in the consciousness of the viewer.

BAIGA

Hindi/colour/30 minutes

Producer: Madhya Pradesh Madhyam. **Director/Cinematographer:** Rajendra Janglay. **Screenplay Writer:** Anant Balani. **Audiographer:** Dileep Subramanium. **Editors:** Deepak Seal, Suneel Chaurasia.

This is the story of the tribal community called the Baiga who have built their dwellings among the green Saal forests between the Satpura and the Maikal ranges in the state of Madhya Pradesh. Living so close to nature and in a relative state of isolation, the community have retained the wealth of their ancient cultural heritage. However, with growing education and government sponsored projects for economic development, it is becoming difficult to hold back the forces of change.

सी.वी. रमण: द साइंटिस्ट एण्ड हिज़ लैगसी

अंग्रेजी/रंगीन/45 मिनट

निर्माण: एन.के. सहगल **निर्देशक:** नन्दन कुढयाढि **पटकथा:** आशा वाधवानी **मुख्य अभिनेता:** राका किट्टू, जगदीश राजा **छायांकन:** जी.एस. भास्कर, मुरली **ध्वनि आलेखन:** ए.जे. बारोट **सम्पादन:** परेश कामदार

नोबल पुरस्कार विजेता चन्द्रशेखर वेंकट रामन भारत के महान आधुनिक वैज्ञानिकों में से एक थे। विज्ञान के प्रति उनकी गहरी निष्ठा थी और वे अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक वैज्ञानिक अनुसंधान में लगे रहे। इस फिल्म में उस महान वैज्ञानिक के जीवन का चित्रण किया गया है जो अपने जीवन काल में हुए विज्ञान के क्रान्तिकारी विकास के साक्षी रहे।

C.V. RAMAN: THE SCIENTIST AND HIS LEGACY

English/colour/45 minutes

Producer: N.K. Sehgal. **Director:** Nandan Kudhyadi. **Screenplay Writer:** Asha Wadhwani. **Leading Actors:** Raka Kittu, Jagdish Raja. **Cinematographers:** G.S. Bhaskar, Murli. **Audiographer:** A.J. Barot. **Editor:** Paresh Kamdar.

Nobel Prize winner Chandrasekhar Venkat Raman was one of the outstanding personalities of modern Indian science. He had a passionate commitment to science as well as a deep personal involvement in scientific research till the very end of his days. One hundred years after his birth, the film traverses his life, which witnessed the transition of science from classical physics to the era of quantum mechanics.

बेहुला

निर्माण/निर्देशन/पटकथा/कला निर्देशन/वेशभूषा/संगीत निर्देशन: राजा मित्रा **मुख्य अभिनेता:** प्रदीप मुखर्जी **सह-अभिनेता** सुनील मुखर्जी, **सह-अभिनेत्री:** बकुल मिश्रा, **छायांकन:** ध्रुवज्योती बासु, **ध्वनि आलेखन:** अनूप मुखर्जी, **सम्पादन:** रत्न सरकार

पश्चिम बंगाल के एक गांव में एक वैज्ञानिक साँप के ज़हर के असर के बारे में अध्ययन करता है, जिससे स्थानीय ओझा उसका दुश्मन बन जाता है। लेकिन वैज्ञानिक ओझा को साँप के विष के सम्बन्ध में आधुनिक जानकारी देने की कोशिश करता है। गांव के ज़मींदार और आम लोगों के बीच तनाव पैदा हो जाता है, क्योंकि ज़मींदार की खाली पड़ी जमीन पर बड़ी संख्या में साँप पैदा होने लगे हैं।

बौय और गर्ल—हाऊ?

हिन्दी/रंगीन/2 मिनट

निर्माण: बी.आर. शेंडगे **निर्देशन/पटकथा:** आर.आर. स्वामी **छायांकन:** एम.एस. गंगाधर **ध्वनि आलेखन:** ओ.पी. शर्मा **सम्पादन:** हरीश सुतर **संगीत निर्देशन:** के. नारायणन **कार्टूनकार:** आर.आर. स्वामी, वी.एस. शंकरदास, अरुण बलसराफ

इस फिल्म में कार्टून तकनीक के माध्यम से यह दिखाया गया है कि लड़का या लड़की के पैदा होने में औरत उत्तरदायी नहीं है।

BEHULA

Bengali/colour/67 minutes

Producer/Director/Screenplay Writer/Art Director/Costume Designer/ Music Director: Raja Mitra. **Leading Actor:** Pradip Mukherjee. **Supporting Actor:** Sunil Mukherjee. **Supporting Actress:** Bakul Misra. **Cinematographer:** Dhrubajyoti Basu. **Audiographer:** Anup Mukherjee. **Editor:** Ratan Sircar.

In a West Bengal village, an urban scientist doing a study of the effects of snake venom, befriends the local Ojha—the traditional witch doctor—and teaches him the use of modern antidotes to the poison. In the process he finds himself drawn into the conflict between the common people of the village and the local landlord, whose abandoned brickyard has become a breeding ground for the snakes.

BOY OR GIRL—HOW?

Hindi/colour/2 minutes

Producer: B.R. Shendge. **Director/Screenplay Writer:** R.R. Swamy. **Cinematographer:** M.S. Gangadhar. **Audiographer:** O.P. Sharma. **Editor:** Harish Sutar. **Music Director:** K. Narayanan. **Animators:** R.R. Swamy, V.S. Shankardas, Arun Balsaraf.

The film demonstrates, through animation techniques, how a woman is not responsible for the sex of her child as she does not determine whether she will give birth to a boy or a girl.

छापाखानार बांगला हरफ

बंगला/ब्लैक एंड व्हाईट/23 मिनट

निर्माण: श्रीमती चटर्जी, चन्द्रिका भट्टाचार्जी **निर्देशक:** अभिजीत चट्टोपाध्याय **छायांकन:** सोमेन्दु राय **सम्पादन:** मोनी अधिकारी **संगीत निर्देशन:** दीपक चौधरी

इस फिल्म में उन घटनाओं का चित्रण किया गया है जिनके फलस्वरूप बंगला भाषा का पहला छापाखाना लग सका। इसमें 18वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में बंगला में छपाई के लिए काम आने वाले टाइपों, औजारों और मशीनों की विस्तृत जानकारी दी गई है। इसमें यह भी बताया गया है कि छापाखाना शुरू होने से शिक्षा के प्रसार और सांस्कृतिक जागरण में मदद मिली और अंततः लोगों को देश को स्वतंत्र कराने की प्रेरणा मिली।

इंटीग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेंट इन काटन

अंग्रेजी/रंगीन/28 मिनट

निर्माण: डी. गौतमन **निर्देशन/छायांकन:** के. जगजीवन राम **ध्वनि आलेखन:** बी.पी. गुप्ता **सम्पादन:** डी.एस. त्यागी **संगीत निर्देशन:** रास बिहारी दत्ता

इस फिल्म में यह दिखाया गया है कि किस प्रकार एक किसान कीड़ों की रोकथाम के समन्वित तरीकों को अपना कर कपास की फसल को नुकसान से बचा सकता है। इस विधि से कपास का उत्पादन बढ़ता है और पर्यावरण पर प्रतिकूल असर भी नहीं पड़ता।

CHHAPAKHANAR BANGLA HARAF

Bengali/b&w/23 minutes

Producers: Shreemati Chatterjee, Chandrika Bhattacharjee. **Director:** Abhijit Chattopadhyay. **Cinematographer:** Soumendu Roy. **Editor:** Moni Adhikary. **Music Director:** Deepak Chowdhury.

The film depicts the sequence of events that led to the setting up of the first Bengali printing press. It describes in detail the types, tools and machines of a typical press in the late eighteenth century in Bengal. That first quaint, unsophisticated press led to the spread of education and a cultural renaissance and finally to a resurgence of national awareness that put the people on the path towards independence.

INTEGRATED PEST MANAGEMENT IN COTTON

English/colour/28 minutes

Producer: D. Gautaman. **Director/Cinematographer:** K. Jagajivan Ram. **Audiographer:** B.P. Gupta. **Editor:** B.S. Tyagi. **Music Director:** Rash Behari Dutta.

The film demonstrates how a farmer can protect his crop of cotton from major pests by adopting an integrated method of pest management, which would eventually lead to a bumper crop, without causing great harm to the eco-system.

कलामण्डलम् कृष्णनकुट्टी पोडुवाल

मलयालम/रंगीन/27 मिनट

निर्माण : केरल राज्य फिल्म विकास निगम लि॰ **निर्देशन/पटकथा :** के.आर. मोहनन **छायांकन :** वी.ए. नागर **ध्वनि आलेखन :** टी. कृष्ण उन्नी **सम्पादन :** के.आर. बोस

इस फिल्म में कलामण्डलम् कृष्णनकुट्टी पोडुवाल का एक ढोल वादक के रूप में चित्रण करने के साथ-साथ कथकली नृत्य में ढोल वादक की भूमिका की भी जानकारी दी गई है। कलाकार कुछ अन्य लोगों के साथ स्वयं अपने अनुभव बताता है और केरल के इस प्राचीन शास्त्रीय नृत्य का गहन विवेचन करता है।

KALAMANDALAM KRISHNANKUTTY PODUVAL

Malayalam/colour/27 minutes

Producer: Kerala State Film Development Corporation. **Director/ Screenplay Writer:** K.R. Mohanan. **Cinematographer:** V.A. Nair. **Audiographer:** T. Krishan Unni. **Editor:** K.R. Bose.

The film not only presents Kalamandalam Krishnankutty Poduval as a drummer, but also discusses the role of the drummer within the framework of the Kathakali dance performance. The artiste himself, along with other commentators, recalls his experiences and evaluates them to give an in-depth view of this classical dance form from Kerala.

कथनी करनी एकसी (जमनालाल बजाज)

हिन्दी/रंगीन/79 मिनट

निर्माण: क्लाइम्ब फिल्म्स **निर्देशन/पटकथा:** भीम सैन **मुख्य अभिनेता:** तुषार दलवी **मुख्य अभिनेत्री:** हर्षदा देसाई **बाल कलाकार:** कृति बजाज **छायांकन:** वीरेन्द्र सैनी **सम्पादन:** एस. सुप्रिया **संगीत निर्देशन:** रघुनाथ सेठ **पार्श्व गायक:** रामानुज **पार्श्व गायिका:** रूपाली, सोनाली, अपर्णा मायेकर **कार्टूनकार:** एनीमेशन सर्विसिस

जमनालाल बजाज महात्मा गांधी के सहयोगी थे। उन्होंने अपने व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित मानवीय आदर्शों के अनुसार आचरण किया। वे 1915 में महात्मा गांधी के सम्पर्क में आये और स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय हो गये। इस फिल्म में स्वतंत्रता सेनानी के रूप में जमनालाल बजाज के जीवन का चित्रण किया गया है।

KATHNI KARNI EKSI (JAMANALAL BAJAJ)

Hindi/colour/79 minutes

Producer: Climb Films. **Director/Screenplay Writer:** Bhim Sain. **Leading Actor:** Tushar Dalvi. **Leading Actress:** Harshada Desai. **Child Artiste:** Kruti Bajaj. **Cinematographer:** Virendra Saini. **Editor:** S. Supriya. **Music Director:** Raghunath Seth. **Male Playback Singer:** Ramanuj. **Female Playback Singers:** Rupali, Sonali, Aparna Mayekar. **Animator:** Animation Services.

Jamanalal Bajaj was a contemporary of Mahatma Gandhi's. In his personal and public life, Bajaj practised the humanistic ideals that the Mahatma stood for. He came in contact with Gandhi in 1915 and became closely associated with the freedom struggle. The film concentrates on the life of Bajaj as a freedom fighter.

माई ट्री

रंगीन/7 मिनट

निर्माण : विजय बी. चन्द्रा **निर्देशन :** बी.आर. शेंडगे, आर.आर. स्वामी **पटकथा :** आर.आर. स्वामी **छायांकन :** एम.एस. गंगाधर **ध्वनि आलेखन :** भारत बेर्डे **सम्पादन :** यू.एच. नागवेकर **संगीत निर्देशन :** रघुनाथ सेठ **कार्टूनकार :** आर.आर. स्वामी, वी.एस. शंकरदास

इस फिल्म में बड़ी-बड़ी इमारतें बनने के कारण पेड़ों की कटाई का मार्मिक ढंग से फिल्मांकन किया गया है। एक पेड़ है और एक लड़का है। तभी पेड़ की जगह एक बहुत बड़ी इमारत उभरती है और उस इमारत में उसी पेड़ का एक विशाल चित्र सजावट के तौर पर लगा दिया जाता है। लड़का इस समूचे घटनाक्रम को बेबस होकर देखता रहता है।

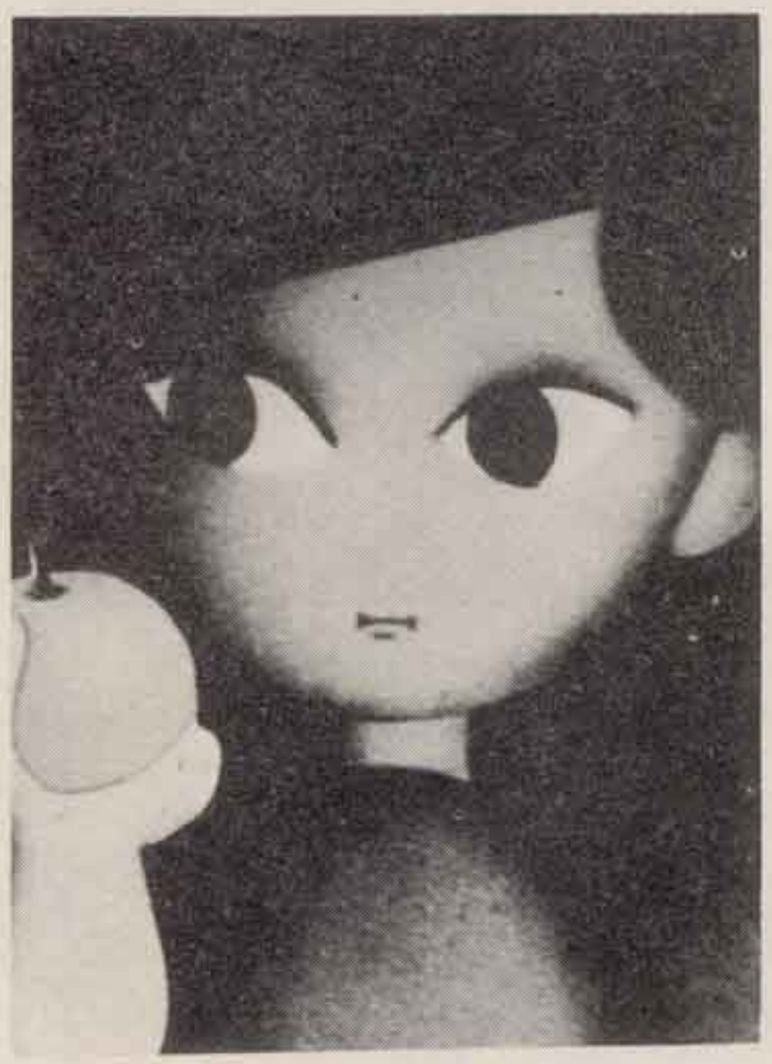

MY TREE

No commentary/colour/7 minutes

Producer: V.B. Chandra. **Directors:** B.R. Shendge, R.R. Swamy. **Screenplay Writer:** R.R. Swamy. **Cinematographer:** M.S. Gangadhar. **Audiographer:** Bharat Berde. **Editor:** U.H. Nagwekar. **Music Director:** Raghunath Seth. **Animators:** R.R. Swamy, V.S. Shankardas.

There is a tree... and a boy who loves it. One day, they come and cut the tree down and build a huge office block in its place. They do not forget the tree and its sacrifice, and make a large painting of the tree to decorate the building. The boy watches helplessly, grieving in silence.

न्यूरोपैथिक फुट इन लैप्रोसी

अंग्रेजी/रंगीन/25 मिनट

निर्माण : डा॰ जाल मेहता **निर्देशन :** विश्राम रेवंकर **तकनीकी एवं वैज्ञानिक निर्देशन :** डा॰ जाल मेहता **पटकथा** डा॰ जाल मेहता **मुख्य अभिनेता :** वी.एन. कुलकर्णी **छायांकन :** विजय देशमुख **सम्पादन :** अर्चना **संगीत निर्देशन :** पी.पी. वैधनाथन **कार्टूनकार :** एस. फनसल्कर

इस फिल्म में कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों के पैरों को होने वाले नुकसान की जानकारी देते हुए यह बताया गया है कि किस प्रकार रोगी स्वयं ही अपनी देखभाल कर सकते हैं। इसमें रोग को ठीक करने के लिए शल्य-चिकित्सा और बाद में इन रोगियों के सामाजिक-आर्थिक पुनर्वास के उपायों को भी दर्शाया गया है। यह फिल्म कुष्ठ रोग के तकनीशियनों के लिए ही नहीं बल्कि डाक्टरों के लिए भी उपयोगी है। फिल्म में विकलांगता की रोकथाम की जानकारी दी गई है, इसलिए इसे सामुदायिक स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रमों के अन्तर्गत भी दिखाया जा सकता है।

NEUROPATHIC FOOT IN LEPROSY

English/colour/25 minutes

Producer: Dr. Jal Mehta. **Director:** Vishram Revankar. **Screenplay Writers:** Dr. Jal Mehta, Dr. Sanjay Sane, V.N. Kulkarni. **Cinematographers:** Vijay Deshmukh. **Editor:** Archana. **Music Director:** P.P. Vaidyanathan. **Animator:** S. Phansalkar.

The film describes in detail the sensory and motor paralysis of the feet of leprosy patients and how the patients themselves should care for them. It also describes corrective surgery and later socio-economic rehabilitation of such patients. The film is useful not only for leprosy technicians but also for doctors in their day-to-day clinical work. As, in any such rehabilitation programme, the stress is on prevention of deformities, the film can be used in community health education programmes as well.

सेर अलंग

करबी/रंगीन/45 मिनट

निर्माण: हार्टिकल्चरिस्ट, करबी आंगलोंग **निर्देशन/पटकथा/सम्पादन:** इन्द्रजीत नारायण देब **मुख्य अभिनेता:** पोनारम टेरोन **मुख्य अभिनेत्री:** अंजली मिलिकपी **सह-अभिनेता:** खोर सिंह लेकथे **सह-अभिनेत्री:** बसापी हनसेपी **छायांकन:** निर्मल डेका **ध्वनि आलेखन:** अबानी तन्ती **संगीत निर्देशन:** अरुण दास

करबी पर्वतीय जनजाति के लोग असम के मध्यवर्ती भाग में करबी आंगलोंग क्षेत्र में रहते हैं। जगह बदल-बदल कर खेती करने की वर्षों से चली आ रही प्रथा के कारण वहाँ भुखमरी तक की नौबत आ गई है। करबी आंगलौंग में कृषि विभाग की बागवानी शाखा की मदद से अब किसानों का भविष्य उज्ज्वल होने लगा है। गांवों के लोग अनानास की दो किस्मों के पेड़ लगाने लगे हैं और महिलायें फलों से कई तरह की चीजें तैयार करने की विधियाँ सीखने लगी हैं।

SER ALANG

Karbi/colour/45 minutes

Producer: Horticulturist, Karbi Anglong. **Director/Screenplay Writer/Editor:** Indrajit Narayan Deb. **Leading Actor:** Ponaram Teron. **Leading Actress:** Anjali Milikpi. **Supporting Actor:** Khor Sing Lekthe. **Supporting Actress:** Basapi Hansepi. **Cinematographer:** Nirmal Deka. **Audiographer:** Abani Tanti. **Music Director:** Arun Das.

The Karbi hill tribes dwell in the Karbi Anglong area, in the centre of Assam. Through the years, the practise of shifting cultivation has brought them close to starvation. Today, with the help of the Horticulture wing of the Department of Agriculture of Karbi Anglong, cultivators are looking towards a more hopeful future. The villagers are growing two varieties of pineapples and the women are learning to process the fruit to make different preserves for a growing market.

सिद्धेश्वरी

हिन्दी/रंगीन/92 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा: मणि कौल **छायांकन:** पियूष शाह **ध्वनि आलेखन:** ललिता कृष्णा **कला निर्देशन:** कमल स्वरूप **वेशभूषा:** अनुराधा चौबल

यह फिल्म सुप्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका सिद्धेश्वरी देवी के बारे में है। फिल्म में इस गायिका की संगीत कला की व्यक्तिवादी और प्रभाववादी अभिव्यक्ति हुई है। इसमें गायिका के अपने ही संगीत से मिलन को व्यक्त करते हुए यह बताया गया है कि संगीत किस प्रकार कलाकार को उसके आसपास की सांसारिक परिस्थितियों से मुक्त कर सकता है।

द डिअर आन द लेक

अंग्रेजी/रंगीन/25 मिनट

निर्माण/निर्देशन: अरिबम श्याम शर्मा

मणिपुर में इम्फाल घाटी के बीचों-बीच लोकतक झील के दक्षिणी हिस्से पर सांगाय हिरण रहते हैं। हिरणों की नस्ल अब समाप्तप्राय है और इनमें से केवल 50 हिरण बचे हुए हैं। 1977 में किबुल लमजाओ नाम के इस द्वीप पर राष्ट्रीय पार्क बनाया गया, जो अब विश्व का एक प्रमुख अभयारण्य माना जाता है।

SIDDHESHWARI

Hindi/colour/92 minutes

Producer: Mani Kaul. **Director/Screenplay Writer:** Mani Kaul. **Cinematographer:** Piyush Shah. **Audiographer:** Rajat Dholakia. **Editor:** Lalitha Krishna. **Art Director:** Kamal Swaroop. **Costume Designer:** Anuradha Chaubal.

A subjective and impressionistic account of the famous classical singer Siddheshwari Devi's musical expression, the film celebrates the singer's union with her own music and the ability of that music to free the artiste from her spatial and temporal confines.

THE DEER ON THE LAKE

English/colour/25 minutes

Producer/Director: Aribam Syam Sharma.

In the southern corner of the Loktak Lake in the heart of the valley of Imphal, on the flat grassland of the extraordinary shifting island of Keibul Lamjao, live the last of the Sangai—the brow-antlered deer of Manipur. Today this elegant deer is poised on the brink of extinction, with only about fifty of them still alive. A national park since 1977, Keibul Lamjao is now identified as one of the Threatened Protected Areas of the World.

द लैम्प इन द नीश

अंग्रेजी/रंगीन/22 मिनट

निर्माण/निर्देशन : गिरीश कर्नाड **पटकथा :** शमा ज़ैदी **छायांकन :** ए.के. बीर **सम्पादन :** जावेद सैयद **संगीत निर्देशन :** भास्कर चन्दावरकर

यह फिल्म इस्लामी रहस्यवाद अर्थात् सूफीवाद के बारे में है। इसमें भारत में सूफीवाद के विकास की जानकारी देते हुए यह दिखाया गया है कि किस तरह सूफी और भक्ति का मेल कश्मीर में लालेश्वरी और शेख नूरुद्दीन ऋषि के काव्य में व्यक्त हुआ और कबीर तथा नानक की रचनाओं में क्रांतिकारी शक्ति के साथ उभरा।

ट्यूना द चिकन आफ द सी

अंग्रेजी/रंगीन/17 मिनट

निर्माण : डी. गौतमन् **निर्देशन/छायांकन :** के. जगजीवन राम **ध्वनि आलेखन :** वी.के. श्याम सुन्दर **सम्पादन :** फूल चन्द **संगीत निर्देशन :** रास बिहारी दत्ता

ट्यूना मछली हमारे यहां समुद्र में पाई जाती है और लक्षद्वीप में आजीविका का एक प्रमुख साधन है। इस फिल्म में ट्यूना मछली को पकड़ने के नये तरीकों और इसकी बिक्री के आधुनिक उपायों के वर्णन करते हुए यह दर्शाया है कि तटवर्ती क्षेत्रों में लोगों के रहन-सहन में निरन्तर सुधार हो रहा है।

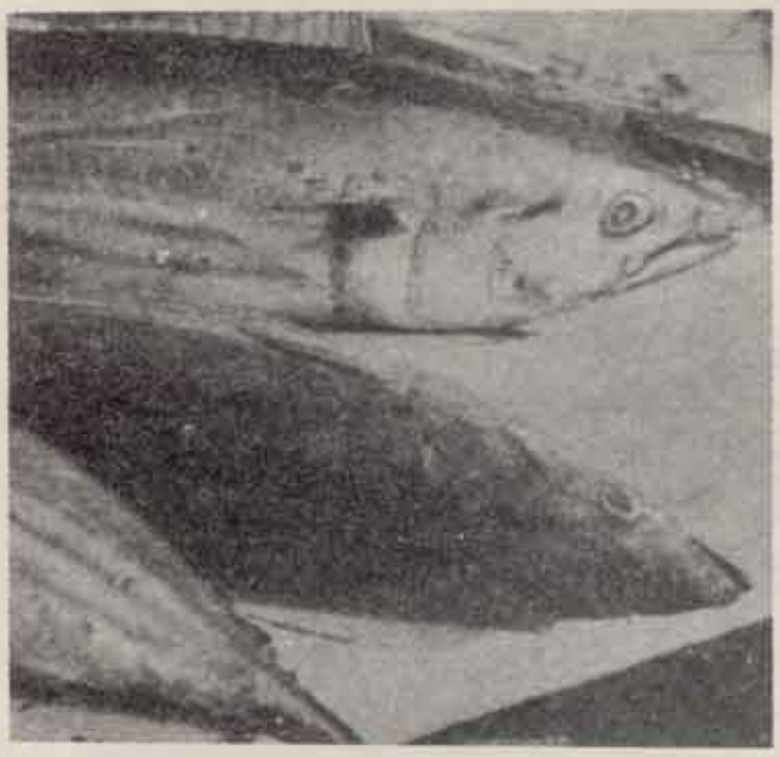

THE LAMP IN THE NICHE

English/colour/22 minutes

Producer/Director: Girish Karnad. **Screenplay Writer:** Shama Zaidi. **Cinematographer:** A.K. Bir. **Editor:** Javed Sayyed. **Music Director:** Bhaskar Chandavarkar.

The film is a study of Sufism or Islamic mysticism in India. It traces the development of Sufism in India and explores how the Sufi-Bhakti confluence blossomed gently in the poetry of Lalleshwari and Shaikh Nuruddin Rishi in Kashmir and exploded with revolutionary energy in the works of Kabir and Nanak.

TUNA THE CHICKEN OF THE SEA

English/colour/17 minutes

Producer: D. Gautaman. **Director/Cinematographer:** K. Jagajivan Ram. **Audiographer:** V.K. Shyam Sundar. **Editor:** Phool Chand. **Music Director:** Rash Behari Dutta.

Tuna is found in our coastal and oceanic fishing zone and is an important source of livelihood for the Lakshadweep islanders. The film shows how, with mechanization of fishing, diversification in processing, and innovative marketing, life in the coastal areas is steadily improving.

यूँ सिखलाएं आखर

हिन्दी/रंगीन/26 मिनट

निर्माण: रमेश अशर फिल्म्स **निर्देशन:** रमेश अशर

इस फिल्म में एक महान व्यक्ति शंकर लालजी पुरोहित की उपलब्धियों का चित्रण किया गया है, जिन्होंने अपना जीवन साक्षरता, खासकर बड़ी उम्र के लोगों को पढ़ाने-लिखाने में लगा दिया है। इसमें यह दर्शाया गया है कि प्रौढ़ शिक्षा, भावी पीढ़ियों की शिक्षा के बारे में एकदम नया दृष्टिकोण विकसित कर सकती है। फिल्म में पढ़ाने-लिखाने के तौर-तरीकों तथा उन वस्तुओं की भी जानकारी दी गई है जो शिक्षा पाने वाले व्यक्ति की रूचि के अनुरूप काम में लाई जा सकती हैं। इस फिल्म में शिक्षित युवकों को देश में साक्षरता के प्रसार में सहायता देने को प्रेरित किया गया है।

YUN SIKHLAYE AKHAR

Hindi/colour/26 minutes

Producer: Ramesh Asher Films. **Director:** Ramesh Asher.

The film tells the story of Shankarlalji Purohit, who dedicated his life to promoting literacy, especially among adult illiterate members of society. It goes on to point out how adult literacy can inspire a whole new attitude towards the education of the future generation. It also describes the teaching kit and methodology by which literacy can be related to the vocation or interest of the person being taught, and strongly urges the educated youth to make use of the teaching kit and help in the spread of literacy in the country.

Compiled by the Directorate of Film Festivals and edited on its behalf by Shampa Banerjee; designed and produced by the Directorate of Advertising and Visual Publicity, Ministry of I&B, Government of India and printed at Nu Tech Photolithographers, New Delhi.